इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
समाज कार्य विद्यापीठ

BSW – 130

मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

शराब व मादक द्रव्य निर्भरता की रोकथाम और उपचार 3

''शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।''

– इन्दिरा गाँधी

''स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण'' की चेयर के अन्तर्गत् विकसित कार्यक्रम

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

- Indira Gandhi

इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
समाज कार्य विद्यापीठ

BSW – 129

मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम

खंड

3

शराब व मादक द्रव्य निर्भरता की रोकथाम और उपचार

इकाई 1
शराब और मादक द्रव्य पर निर्भरता का उपचार

इकाई 2
शिक्षा, परामर्श, मार्गदर्शन सेवाओं और सामुदायिक प्रतिक्रियाओं द्वारा सशक्तिकरण

इकाई 3
मादक द्रव्य दुरूपयोग की रोकथाम और नियंत्रण में गैर–सरकारी संगठनों, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

इकाई 4
मध्यस्थता कार्यनीतियों के लिए व्यवसनकर्ता और सामर्थ्य विकसित करना

विशेषज्ञ समिति (मूल)

प्रो. पी.के. गांधी
जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. डी.के. दास
आर.ए. कॉलेज ऑफ सोशल
वर्क, हैदराबाद

डॉ. पी.डी. मैथ्यू,
भारतीय सामाजिक संस्थान,
नई दिल्ली

डॉ. एलेस वड़वुम्मथला,
सी.बी.सी.आई.सेण्टर, नई
दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. ए.पी.बर्नबास (सेवानिृत्त)
आई.आई.पी.ए.
नई दिल्ली

डॉ. रंजना सहगल,
इंदौर स्कूल ऑफ सोशल
वर्क, इंदौर

डॉ. रमा वी. बारू
जवाहरलाल नेहरू
विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

डॉ. जेरी थॉमस
डॉन बास्को
गुवाहटी

प्रो. सुरेन्द्र सिंह,
कुलपति
महात्मा गांधी काशी
विद्यापीठ वाराणसी

प्रो. ए.बी. बोस (सेवानिवृत्त)
सतत् शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू नई दिल्ली

प्रो. के.के. मुखोपाध्याय
दिल्ली विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. ए.आर.खान
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. आर.पी. सिंह
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. ऋचा चौधरी
डॉ. बी.आर.अम्बेडकर
कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

प्रो. प्रभा चावला,
इग्नू, नई दिल्ली

विशेषज्ञ समिति (संशोधन)

प्रो. सुषमा बत्रा
समाज कार्य विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. आर.आर. पाटिल
समाज कार्य विभाग
जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. बीना एन्थोनी रेजी
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

डॉ. संगीता शर्मा धोर
डॉ. भीम राव अम्बेडकर
कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. रोज़ नेम्बियाकिम
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. सौम्या
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू,
नई दिल्ली

डॉ. जी. महेश
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू
नई दिल्ली

डॉ. सायन्तनी गुइन
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू,
नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल (मूल)

इकाई लेखक

प्रो. जोंस पुथेनवेडू

प्रो. चाको, कर्रिथाइल

प्रो. जे. दिनकर लाल

खंड सम्पादक एवं पाठ्यक्रम संयोजक

प्रोफेसर ग्रेशियस थॉमस
सतत् शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

संशोधन

प्रोफेसर चाको, कार्रिथाइल

पाठ्यक्रम निर्माण दल (संशोधन)

इकाई लेखक

प्रो. जोंस पुथेनवेडू

प्रो. चाको, कर्रिथाइल

प्रो. जे. दिनकर लाल

विषय सम्पादक

डॉ. राम बाबू बोत्चा,
राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा विकास
संस्थान, श्री पेरुम्बुदूर

पाठ्यक्रम एवं खंड संयोजक

डॉ. सायन्तनी गुइन,
इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

अक्टूबर, 2022

© इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, 2022

ISBN -81-

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (मुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से विभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर कम्पोजिंगः

खंड 3 का परिचय

'मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम' पाठ्यक्रम का खंड 3 "शराब व मादक द्रव्य निर्भरता की रोकथाम और उपचार'' से संबंधित है। इस खंड में चार इकाइयाँ हैं जो शराब और मादक द्रव्य व्यसन की रोकथाम एवं उपचार से संबंधित है।

इकाई 1 शराब और मादक द्रव्य पर निर्भरता के उपचार के बारे में है। यह इकाई आपको उपचार, विष रहित करने तथा मूल्यांकन करने की जानकारी प्रदान करने के साथ–साथ उपचार के विभिन्न रूपों और मध्यस्थता तकनीकों के बारे में भी बताती है।

इकाई 2 में शिक्षा, परामर्श, संदर्भ सेवाएँ और सामुदायिक प्रतिक्रियाओं के माध्यम से। शक्तिशाली बनाने पर चर्चा की गई है। यह शक्तिशाली बनाने की प्रक्रिया को पहचानने तथा मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम के लिए सामुदायिक संसाधनों का उपयोग में लाने की विभिन्न संभावनाओं की जानकारी प्रदान करने में सहायता करती है।

इकाई 3 मादक द्रव्य दुरुपयोग रोकने में गैर–सरकारी संगठनों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका का वर्णन करती है। यह इकाई आपको मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम और नियंत्रण में विभिन्न स्तरों पर मध्यस्थता की आवश्यकता तथा विभिन्न संगठनों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका से अवगत कराती है।

इकाई 4 मध्यस्थता नीतियों के लिए कलाएँ और क्षमताएँ विकसित करने की आवश्यकता का वर्णन करती है। यह इकाई आपको मध्यस्थता परामर्श के बारे में अच्छी जानकारी तथा संकटकालीन मध्यस्थता के बारे में सूचना प्रदान करती है।

इस खंड में प्रस्तुत चार इकाइयाँ मादक द्रव्य दुरुपयोग के क्षेत्र में रोकथाम और आवश्यक उपचार के स्वरूपों की व्यापक जानकारी प्रस्तुत करती है। यह व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इकाई 1 शराब और मादक द्रव्य पर निर्भरता का उपचार

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 उपचार की अवस्थाएँ

1.3 उपचार की तैयारियाँ

1.4 उपचार की प्रक्रियाएँ

1.5 शराब (मद्यपान) की आदत और मादक द्रव्य के दुरुपयोग की रोकथाम योजना

1.6 सारांश

1.7 शब्दावली

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको मादक द्रव्य दुरुपयोग के उपचार की प्रक्रिया से अवगत कराना है। किसी अन्य रोग की तरह मादक द्रव्य दुरुपयोग के उपचार का भी एक प्रचलित तरीका है। यह इकाई उपचार प्रक्रिया तथा मादक द्रव्य दुरुपयोग प्रक्रियाओं की एक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करेगी। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- उपचार, परहेज और मूल्यांकन के बारे में समझ सकेंगे;
- शराब और मादक द्रव्य की आदत के उपचार के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कर सकेंगे;
- मध्यस्थता की तकनीकों का वर्णन कर सकेंगे; और
- पुनः आदत पड़ने की रोकथाम का वर्णन कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

मादक द्रव्यों का प्रयोग प्राचीनकाल से मुख्यतः जीवन के तनाव और दबावों से मुक्ति पाने तथा धार्मिक उद्देश्यों के लिए किया जाता रहा है। ऐतिहासिक प्रमाण दर्शाते हैं कि लगभग 8000 वर्षों से लोग गाँजे का प्रयोग करते आ रहे हैं। इसका उपयोग अवसाद से लेकर पाचन रोगों तक में औषधि के रूप में कई आरंभिक सभ्यताओं द्वारा किया जाता था। 6000 वर्ष पूर्व प्राचीन एशियाई सुमेरियाई ग्रंथों ने पोस्त के पौधे को अफीम पैदा करने वाला आनंददायक पौधा माना था। प्राचीन भारतीय चिकित्सा पुस्तकों में पुराने मद्यपान की और यहाँ तक कि गंभीर मद्यपान आदतों के उपचार के लिए भी इसका वर्णन मिलता है। भारत पर हमला करने वाले आर्य सोमरस नामक मद्य का उपयोग करते थे।

आर्य लोग गांजे के पौधे की स्वापक और सुखानुभूति विशेषताओं के बारे में हजारों वर्षों से जानते थे और इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्होंने इन द्रव्यों का उपयोग न किया हो। भारत में बौद्धधर्म ने जनता में संयम की आदतें अपनाने में काफ़ी योगदान किया।

2500 वर्षों से दक्षिण अमेरिका के मूल निवासी आनंद और तनाव मुक्ति के लिए कोक की पत्तियों को चबाते थे। यूनानी नेता को कवि टेनिसन ने अपनी कविता "लोट्स इटर्स" में कहा है कमल के पौधे के कारण युनानी नायक को विद्रोह का सामना करना पड़ा था। कमल का पौधा विषैला होता है जिसमें मतिभ्रम करने वाला विषैला द्रव्य होता है।

मध्यकाल में राजाओं और सामंतो ने शराब को बढ़ावा दिया तथा अपने उदाहरणों से जनता में कुछ हद तक इस आदत का प्रसार किया। अलाउद्दीन ख़िलजी ने इस पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था तथा औरंगजेब ने इस पर सख्ती से नियंत्रण रखा जो उनके समय में अपवाद माना जा सकता है।

यह भी उल्लेख किया जाता है कि ब्रिटिश शासन से पूर्व सामान्यतः संपूर्ण जनता शराब और मादक द्रव्यों के प्रभावों से मुक्त थी। ब्रिटिश प्रशासन ने शराब और मादक द्रव्य की बिक्री से नियमित राजस्व वसूल करने का प्रयास किया। 1790 में सरकार ने कर वसूली के लिए उत्पाद शुल्क कानून बनाए तथा सभी प्रदेशों में उत्पाद शुल्क विभागों की स्थापना की। उनकी नीति कम उपभोग पर अधिकतम राजस्व वसूल करने की थी। अफ़ीम और कैनाबीज के प्रचलित व्यसन के संदर्भ में प्रथम जाँच करीब 100 वर्ष पूर्व की गई थी जब भारत सरकार ने 1893 तथा 1895 में दो जाँच आयोगों की स्थापना की।

1954–55 में एक निषेध जाँच समिति की नियुक्ति की गई तथा समिति ने पूरे देश में विभिन्न चरणों में पूर्ण प्रतिबंध लागू करने की सिफारिश की। इसका कार्यान्वयन दो स्तरों, शिक्षा और रोकथाम तथा कानून एवं प्रशासनिक स्तर पर किया जाना था। 1963 में एक निषेध अध्ययन समिति का गठन किया गया जिसे इस समस्या का अध्ययन कर देश में शराब तथा शराब पीने वालों की स्थिति के बारे में सरकार को रिपोर्ट देनी थी। समिति ने जागरूकता पैदा करने, आधुनिक उपचार कार्यक्रमों, शराब की आदतों पर सार्वजनिक शिक्षा, ग़ैर-सरकारी संस्थाओं को प्रशिक्षण, अनुसंधान और प्रतिबंध की सिफारिशें कीं। भारत को जो कुछ समय पहले तक "गोल्डन ट्राएंगल" तथा "गोल्डन क्रिसेंट" से अवैध मादक द्रव्य के मुख्य प्रेषण देश के रूप में जाना जाता था, अब एक बड़ा खपत वाला देश बन गया। स्वापक नियंत्रण ब्यूरो के आँकड़ों के अनुसार भारत में हेरोइन जब्त करने की वार्षिक मात्रा लगभग 1 टन है।

शराब और मादक द्रव्य की आदत एक गंभीर रोग है जो लाखों भारतीयों के स्वास्थ्य एवं जीवन को प्रभावित करता है। इसके उपचार में अनेक सेवाएँ जैसे पहचान करना, मध्यस्थता, मूल्यांकन, निदान, परामर्श, चिकित्सा सेवाएँ, मनोचिकित्सा सेवाएँ, मनोवैज्ञानिक सेवाएँ, सामाजिक सेवाएँ तथा अनुवर्ती कार्य आदि व्यापक रूप से शामिल हैं। इसके उपचार के संसाधनों में वापसी का प्रबंध करना, शराब और मादक द्रव्य निर्भरता का दीर्घकालीन प्रबंध तथा पुनः आदत को रोकने की रोकथाम आदि शामिल हैं। शराब और मादक द्रव्यों की आदत के लिए अनेक वैकल्पिक उपचार भी उपलब्ध हैं। जिनमें औषधि, परामर्श-सामग्री, इलाज तथा पारिवारिक चिकित्सा शामिल हैं। प्रायः चिकित्सकीय उपचार के लिए दो या अधिक उपचारों को मिला कर एक साथ प्रयोग किया जाता है। इस इकाई में शराब और मादक द्रव्यों की आदत के उपचार के लिए वर्तमान में प्रयुक्त विचारधाराओं की संक्षिप्त समीक्षा की गई है। उपचार की अधिकतर पद्धतियाँ मूलतः पश्चिमी हैं और विशेषतः संयुक्त राज्य अमेरिका से संबंधित हैं।

1.2 उपचार की अवस्थाएँ

व्यसनकर्त्ता के उपचार के लिए अजमाए गए विभिन्न सिद्धान्तों को तीन मुख्य अवस्थाओं – हस्तक्षेप, पुर्नवास तथा देखभाल में विभाजित किया जा सकता है। इन अवस्थाओं में सामान्यतः वे गतिविधियाँ और चरण शामिल हैं जिन्हें विभिन्न अनुसंधानकर्त्ताओं और उपचारकर्ताओं द्वारा संपूर्ण विश्व में अपनाया गया है। उपचार की सभी पद्धतियों के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- समस्या की पहचान करना
- व्यसन की बीमारी को समझना
- अन्य सहायक चीजों को स्वीकार करना
- आरोप लगाने की अपेक्षा ठीक होने का व्यक्तिगत दायित्व
- नए व्यवहारों और मनोवृतियों का प्रदर्शन करना
- जीवन जीने की नई स्वस्थ दिनचर्या बनाना

रहोड़ द्वीप के विश्वविद्यालय से जेम्स प्रोस्कास्का और उसके दल ने लोगों में परिवर्तन की व्याख्या के लिए एक बढ़िया मॉडल प्रस्तुत किया क्योंकि व्यसन उपचार मूलतः परिवर्तन प्रक्रिया ही है। इसका पहला चरण है चिंतन पूर्व स्थिति। यह मना करने की स्थिति है जिसका वर्णन हमने पहले किया है। इसमें व्यसनकर्त्ता महसूस करता है कि कुछ गलत है। यहाँ इस बात पर जोर रहता है कि यद्यपि वह परिवर्तन को स्वीकार तो नहीं करता लेकिन किसी न किसी तरह परिवर्तन मार्ग पर अग्रसर होने लगता है।

दूसरी अवस्था को चिंतन अवस्था कहा जाता है। इसमें व्यसनकर्त्ता अनुभव करता है कि कुछ गलत तो हो रहा है लेकिन वह निश्चित नहीं कर पाता कि इसके बारे में वह क्या कर सकता है!

तीसरी अवस्था तैयार होने की अवस्था है। इसमें शराब पीने वाले परिवर्तन के लिए ठोस कदम उठाता है। चौथी अवस्था को कार्रवाई चरण कहा जाता है। इसमें व्यक्ति परिवर्तन करने का मन बना लेता है और व्यक्तिगत रूप से संकल्प करता है।

पाँचवी अवस्था को देखभाल चरण कहा जाता है। जो बहुत महत्वपूर्ण होता है। व्यसनकर्त्ता के उपचार में परिवर्तन एक बार होने वाली चीज नहीं है कभी-कभी यह निरंतर होता रहता है।

छठी और अंतिम अवस्था समाप्ति चरण है जो चीजों का कम उपयोग करने की अनिवार्यता है।

यह वर्णन इस तथ्य पर जोर देता है कि व्यसन एक ऐसी प्रक्रिया है जो निरंतर जारी रहती है और व्यसनकर्त्ता निरंतर ठीक होता रहता है।

1.2.1 अवस्था 1: हस्तक्षेप

विश्व में सभी रोगी ठीक होना चाहते हैं। व्यसनकर्त्ता भी ठीक तो होना चाहता है लेकिन वह उपचार कराने नहीं जाता क्योंकि वह सोचता है कि अन्य लोगों ने उसे बीमार किया है और उन्हें उपचार की आवश्यकता है। किसी व्यक्ति से मादक द्रव्य छुड़ाने के लिए

उसे उपचार के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। व्यसनकर्त्ता को प्रेरित करने के लिए पहले चरण को हस्तक्षेप कहा जाता है।



हस्तक्षेप में पहला कदम है पहचान करना। यह पहचान शराब या मादक द्रव्य की आदत की वर्तमान समस्या का उपचार कराने वाला स्वयं या अन्य व्यक्ति (पारिवारिक सदस्य, देखभाल करने वाला, कानून लागू करने वाला या चिकित्सक) हो सकता है तथा उपचार के लिए किसी के द्वारा भेजा गया व्यक्ति हो सकता है। रसायनों की आदत वाले व्यक्ति का उपचार करना समाज में फैले रोगों को दूर करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मादक द्रव्य दुरुपयोगकर्ता के नजदीकी समझदार और देखभाल करने वाले व्यक्ति हस्तक्षेप करने वाले के पास पहुँचते हैं जो समूह को प्रेरित करता है और उन्हें समझता है कि मद्यपान से संबंधित संपूर्ण विवरण सद्भावना पूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया जाए। इसे स्थिति का मुकाबला करना भी कहा जाता है। इस प्रक्रिया में रसायनों की आदत के हानिकारक, निरंतर बढ़ते एवं विघटनकारी प्रभावों को दूर करने के लिए दखल दी जाती है तथा रसायन की आदत वाले व्यक्ति की मन स्थिति बदलने वाले मादक द्रव्यों का सेवन करने से रोकने तथा आवश्यकता एवं समस्याओं के साथ अनुकूलन करने में उचित तरीके विकसित करने में उसकी सहायता की जाती है। इसका उद्देश्य व्यक्ति की सहायता करने से पूर्व वह शारीरिक और भावात्मक रूप से बर्बाद होने से बचाना है।

मध्यस्थता का उद्देश्य आवरणों को हटाना है ताकि व्यक्ति सच्चाई को स्वीकार कर सकें। यह अनजान बने व्यक्ति के लिए ग्रहण करने योग्य तरीके से सच्चाई प्रस्तुत करने का एक ढंग है। सच्चाई प्रस्तुत करने से हमारा उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहार तथा उसके कारण हुई घटनाओं से संबंधित विशेष तथ्यों को प्रस्तुत करना है। ग्रहण करने योग्य तरीका यह है कि व्यक्ति उसका प्रतिरोध नहीं कर सकता क्योंकि यह व्यक्तिपरक, स्पष्ट, पूर्वाग्रह मुक्त तथा संभालने वाला होता है। मध्यस्थता को प्रतिरोधी माना जाता है लेकिन यह अनेक महत्वपूर्ण संदर्भों में उस प्रतिरोध से भिन्न है जिससे अधिकांश लोग परिचित हैं तथा जिसका कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं होता।

पहला चरण मध्यस्थता के लिए एक दल को तैयार करता है। मध्यस्थता के लिए मादक द्रव्य के आदी व्यक्ति के संपर्क वाले ऐसे दो या अधिक व्यक्तियों का एक दल बनाया जाता है जिन्होंने नशे की हालत में उसके व्यवहारों को देखा हो और उन्हें ही मध्यस्थता करनी चाहिए। मादक द्रव्य के आदी का आवरण तंत्र इतना अधिक विकसित हो जाता है कि अकेला व्यक्ति उसको नहीं हटा सकता। यदि व्यक्ति विवाहित है तो दल में उसके पति या पत्नी का नाम सबसे ऊपर आना चाहिए। दल में शामिल किए जाने वाले अन्य व्यक्तियों में उसकी देखभाल करने वाले अभिभावक, बच्चे, घनिष्ठ मित्र या पड़ोसी, सहकर्मी, कोई महत्वपूर्ण धार्मिक सदस्य तथा यदि उपलब्ध हो तो नशा उन्मूलन परामर्शक हो सकते हैं।

मध्यस्थता का दूसरा कदम है आँकड़े एकत्रित करना। मध्यस्थता के लिए दो प्रकार के आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं। पीड़ित व्यक्ति के शराब या व्यवहार के तथ्यों के बारे में तथा उपचार के विकल्प की सूचना के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

तीसरा कदम मध्यस्थता का अभ्यास (रिहर्सल) करना है। प्रायः वास्तविक मध्यस्थता से पूर्व एक दो अभ्यास आवश्यक होते हैं। पीड़ित व्यक्ति को छोड़ कर सभी को इन अभ्यासों में शामिल होना चाहिए। मध्यस्थता दल के प्रत्येक सदस्य को पीड़ित व्यक्ति के व्यवहार के बारे में लिखित तथ्यों के साथ तैयार होकर आना चाहिए।

मध्यस्थता का चौथा कदम सहानुभूतिपूर्ण तरीके से व्यसनकर्त्ता के आँकड़े/विवरण प्रस्तुत करना है। उदाहरण के लिए आपने 15 मार्च और पुनः 28 मार्च को फैक्टरी में अपने सहकर्मी के साथ दुर्व्यवहार किया। दोनों ही बार आपकी सांस में शराब की गंध थी। दल के लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि वे व्यसनकर्त्ता के साथ इस विषय पर बहस करने के लिए एकत्रित नहीं हुए हैं अपितु समस्या का मुकाबला करने और उस व्यक्ति को उपचार कराने के लिए मनाने हेतु वहाँ आए हैं।

जब चारों कदम पूरे हो जाएँ तो आप मध्यस्थता के लिए तैयार हैं। मध्यस्थता में पीड़ित व्यक्ति को उपचार केन्द्र या अस्पताल के चयन आदि के विकल्प दिए जाते हैं। प्रायः नशे के आदी लोग किसी भी केन्द्र में जाने से मना करते हैं तथा स्वयं ही नशा छोड़ने की शपथ लेते हैं। तब दल प्रश्न करता है कि यदि तुमने नशा करना नहीं छोड़ा तो क्या होगा? तुमने पुनः शराब पीना आरंभ किया तो क्या होगा? यदि आप और अधिक पीने लगे तो क्या होगा? तब दल नशे के आदी व्यक्ति से एक समझौता करता है कि यदि उसने समझौता तोड़ा तो वह उनकी सहायता अवश्य लेगा। जब नशे का आदी व्यक्ति सहायता लेना स्वीकार कर लेता है तो उसे तुरंत सहायता देनी चाहिए। प्रदान की जाने वाली उपचार सेवा की प्रथम अवस्था को निर्विषाक्तिकरण कहा जाता है।

1.2.2 निर्विषाक्तिकरण (Detoxification)

यह मादक द्रव्य या शराब के तीव्र उन्माद को व्यवस्थित करता है तथा चाहे वह अकेले रहता हो या संरक्षित वातावरण में उसे नशे की आदत से निकालता है। यह प्रभावित व्यक्ति को नशा छोड़ने के बाद रक्त में अल्कोहल का स्तर गिरने के बाद होने वाले लक्षणों की भावी श्रृंखला के माध्यम से सुरक्षापूर्वक निकालने की चिकित्सा प्रक्रिया है।

शराब छोड़ने के बाद के लक्षण हल्के से गहन उदासी तथा जीवन के जोखित तक हो सकते हैं। जैसे कम्पोन्माद या दौरे पड़ना। नशे की आदत से पीड़ित रोगी को नशा बंद करने की दशा में तुरंत विशेष चिकित्सा सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है। इसमें

यदि सामाजिक सहायता उपलब्ध हो तो सामान्य रोगी सहायता या बाह्य रोगी आधारित सहायता पर्याप्त हो सकती है। लेकिन कभी-कभी आदत अधिक होने पर रोगी को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ता है ताकि समुचित ध्यान रखा जाए एवं पर्याप्त देखभाल एवं चिकित्सा सुविधा तुरंत प्रदान की जा सके।

निर्विषाक्तिकरण का कार्य व्यसन के साथ संबद्ध मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और व्यवहार संबंधी समस्याओं का समाधान नहीं करता। इसलिए यह ठीक होने के बाद आवश्यक स्थायी व्यवहार और मनोवृत्ति संबंधी स्थायी परिवर्तन नहीं करता।

नशा छुड़ाने के उपचार में अनेक प्रकार की औषधियों का प्रयोग किया जा सकता है तथा प्रलापी और उत्पाती रोगी के लिए विशेष रूप से कुशल देखभाल की आवश्यकता होती है। देखभाल के आधुनिक तरीके इस चरम सीमा के उपचार में बहुत सफल हैं तथा इसमें जीवन का जोखिम काफी कम हो गया है। नशा नियंत्रण केन्द्रों के पिछले वर्षों में हुए विकास के कारण नशाबंदी के लक्षणों पर नियंत्रण पाने में नशे के आदी लोगों की सुरक्षापूर्वक सहायता की जा सकती है। प्रायः चिकित्सा रहित वातावरण में भी नशाबंदी को प्राप्त किया जा सकता है। बशर्ते आवश्यकतानुसार चिकित्सा एकदम तैयार मिले।

1.2.3 अवस्था 2: पुनर्वास

उपचार की इस अवस्था में तीन चरण हैं: (i) मूल्यांकन और समीक्षा, (ii) आरंभिक देखभाल, तथा (iii) व्यापक देखभाल।

समीक्षा और मूल्यांकन

व्यक्ति विशेष से संबंधित उपचार नीति बनाने का उद्देश्य शराब या मादक द्रव्यों के उपयोग को सीमित या कम करना है। इसके लिए व्यक्ति के शारीरिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक स्तर तथा शराब की आदत को बढ़ावा देने वाले वातावरण में योगदान देने वाले कारकों का मूल्यांकन किया जाता है। समीक्षा और मूल्यांकन जाँच द्वारा किया जाता है जो स्थिति की उपस्थिति/अनुपस्थिति या अवस्था के माप की कठोरता का निर्धारण प्रयास प्रक्रिया का सरल एवं सस्ता उपयोग है। वर्तमान में इसका प्रयोग शारीरिक व मानसिक विकृति के लिए किया जाता है।

निदान प्रकृति और परिस्थिति की अनुरूपता है। इसमें प्रायः मध्यस्थता और उपचार के लिए की गई संस्तुतियाँ शामिल हैं। शराब की विकृतियों का निदान करने के लिए जाँच एक महत्वपूर्ण आरंभिक कदम है। जिन व्यक्तियों में शराब की आदत से समस्याएँ आरंभ हो गई हैं या जिनमें समस्याएँ आरंभ होने का जोखिम है उनकी शीघ्र पहचान सुनिश्चित करना आवश्यक है। जाँच परीक्षण इन व्यक्तियों को अगले मूल्यांकन के लिए दिशा-निर्देश देने का उद्देश्य पूरा करते हैं। इन मूल्यांकनों में चिकित्सा और मानसिक स्थिति का इतिहास एवं जाँच शामिल हो सकती है। मूल्यांकन के आधार पर प्रस्तुत मानदंडों के अनुसार निदान को सही या गलत घोषित किया जाता है। जाँच पद्धतियों में मूल्यांकन के लिए मनो सामाजिक संकेतों के लिए शराब-समस्याओं से संबंधित प्रश्नावली और साक्षात्कार तथा अधिक शराब सेवन के जैविक लक्षणों का पता लगाने के लिए प्रयोगशाला परीक्षण तथा अन्य जैविक मानदंड शामिल हैं। जाँच संबंधी प्रश्न प्रायः व्यक्ति से संबंधित होते हैं। जाँच उपकरण प्रतीक रूप से ऐसी सूचनाएँ प्रदान नहीं करते जो उपचार कार्यक्रमों और विशिष्ट उपचार लक्ष्यों को निर्धारित करने में कोई सहयोग नहीं देते जबकि अधिक जटिल प्रश्न एवं साक्षात्कार अधिक उपयोगी सूचना एकत्र करते हैं जो

रोगी की उपचार संबंधी योजना का अधिक विस्तृत मूल्यांकन करने में उपयोगी हैं। लक्षणों की उपस्थिति और अनुपस्थिति का निर्णय करने के लिए अनेक पारंपरिक जाँच प्रश्न "कमी" के रूप में पूछे जाते हैं। अन्य जाँच साधनों में वर्तमान स्थिति की आदतें, व्यवहार और भावनाओं की जानकारी के लिए विषयों की आवश्यकता होती है। प्रत्येक प्रकार के अपने फायदे तथा सीमाएँ हैं।

केज (CAGE) प्रश्न पूछना सरल पद्धति है तथा ये प्रश्न आसानी से पूछे जा सकते हैं। इन लक्षणों या समस्याओं का पता लगाने के लिए चार प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग किया जाता है:

i) क्या आपने कभी शराब के सेवन को कम करने के विषय में अनुभव किया है?

ii) क्या कभी लोगों ने आपकी शराब सेवन की आलोचना कर आपको क्रोधित किया है?

iii) क्या आपने कभी अपने शराब सेवन से स्वयं को अपराधी या बुरा महसूस किया है?

iv) क्या आपने सुबह सबसे पहले अपनी घबराहट दूर करने या शराब के प्रभाव से छुटकारा पाने (आँखे खोलने) के लिए शराब का सेवन किया है?

इनमें से किसी एक का सकारात्मक उत्तर "हाँ" शराब सेवन की समस्या का संदेह करता है तथा एक से अधिक सकारात्मक उत्तर समस्या होने का पक्का संकेत है। केज पूछने में केवल 30 सेकिंड लगते हैं। नियमित स्वास्थ्य जाँच के रूप में शामिल करने पर शराब की समस्या का पता लग सकता है जो अन्यथा छूट सकती है।

आरंभिक देखभाल

यह स्वास्थ्यकारी गतिविधियों का कार्यान्वयन है जिससे व्यक्ति को शराब या मादक द्रव्यों के प्रयोग को कम करने में तथा स्वतंत्र रूप से या संरक्षित वातावरण में रहते हुए शारीरिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक कार्यों को अच्छी तरह करने में सहायता मिलती है।

विस्तृत देखभाल (स्थिरता)

यह निरंतर उपचार में भाग लेकर तथा स्वतंत्र रूप से या संरक्षित वातावरण में परिवर्ती सहारे के साथ रहते हुए आरंभिक देखभाल के माध्यम से प्राप्त लाभों का संकलन है।

1.2.4 अवस्था 3: देखभाल

इस अवस्था के तीन अवयव हैं: (i) बाद में ध्यान रखना (अनुवर्ती देखभाल), (ii) पुनः आदत पड़ने से बचना, और (iii) निवास स्थान पर देखभाल।

अनुवर्ती देखभाल

यह गहन मध्यस्थता और स्थिरता से प्राप्त लाभों को बनाए हुए स्वास्थ्यकारी स्थिति को बनाए रखने की निरंतर प्रक्रिया है, चाहे व्यक्ति स्वतंत्र रूप से रहता हो या अनुवर्ती या दीर्घकालीन आश्रित और संरक्षित वातावरण में रहता हो।

पुनः लौटने से बचाव

यह स्वास्थ्यकारी गतिविधियों की निरंतर जारी रहने वाली प्रक्रिया है जो शराब पीने की पुनः आदत पड़ने से बचाव का कार्य करती है तथा संक्षिप्त या गहन मध्यस्थता के

माध्यम से प्राप्त लाभों को बनाए रखती है, चाहे व्यक्ति स्वतंत्र रूप से रहता हो या परिवर्ती अथवा दीर्घकालीन आश्रय प्राप्त संरक्षित वातावरण में रहता हो।

पुनः रोकथाम में यह मान्यता है कि शराब और मादक द्रव्य दुरुपयोग की गंभीर आदत वाले रोगियों को किसी सहायक एजेंसी के साथ निरंतर संपर्क में रहना चाहिए। यह संपर्क कम से कम उपचार आरंभ होने के बाद, पहले एक या दो वर्ष तक होना चाहिए। शराब और मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्याएँ चाहे किसी भी स्तर की हो एक दिन में ठीक नहीं होती। समस्या के बारे में रोगी की पूरी जागरूकता धीरे-धीरे विकसित होती है और इसी प्रकार सहायता प्राप्त करने की इच्छा भी। अधिकांश व्यसनकर्त्ताओं में पुनः पतन की संभावना होती है। कुछ प्रकार की सहायता निरंतर सहायक के स्तर पर जारी रहती हैं तथा रोगी को एक आश्वासन कि कोई निरंतर उसका ध्यान रखेगा, प्रायः ऐसा संकेत दिया जाता है। जोखिम के बारे में निरंतर याद दिलाते रहना तथा संकट और निराशा के समय आशान्वित करना प्रभावशाली उपचार के दो अमूल्य घटक हैं।

प्रायः उपचार के बाद कुछ ही महीनों में पुनः पतन हो जाता है। व्यसनकर्त्ता और परिवार वाले इसे तब तक रोक सकते हैं, जब तक वे एजेंसी से निरंतर संपर्क बनाए न रखें तथा उत्साह से उपचार में भाग न लें। फिर उन्हें इस बात को गंभीरता से तथा अपनी समझदारी का विकास करने तथा पुनः पतन के कारणों के विकसित होने की समीक्षा के रूप में लेना चाहिए। अनेक बार पुनः पतन अनुभव की गई भावनाओं और चिंताओं या व्यक्तिगत दबावों या शराब के परिवेश से जुड़े वातावरण का मुकाबला करने के कारण हो जाता है। ऐसे रोगी जिन्हें पहले से बताए गए निर्देशों को सावधानीपूर्वक इन दबावों का सामना करने के लिए बार-बार स्मरण कराया जाए तो उनके पुनः पतन से बचाव के अच्छे अवसर रहते हैं। यह इस प्रकार की सहायता करता है कि पुनः पतन के संभावित परिणाम रोगी के दिमाग से सजीव हों जिससे कि वह पुरानी आदतों में लौट सकने वाले केवल अल्पकालीन माने जाने वाले योग्य लाभों के मोह का प्रतिकार कर सकें।

उदाहरण के लिए शेखर की मान्यता है कि प्रायः वेतन वाले दिन पुनः पतन होता है। उसने इन चिंताजनक घटनाओं से बचने के तरीके तैयार किए हैं। वेतन वाले दिन ऐसे मित्र से मिलने का प्रबंध किया जाए, जो उसकी शराब सेवन की समस्याओं के बारे में जानता है। यदि स्थिति अधिक चिंतनीय हो जाती है तो इसके बारे में चर्चा करने के लिए उसे अपने किसी मित्र या परामर्शक से बात करने के लिए प्रेरित किया जाए। इन सबके साथ उसके दिमाग में ऐसी काल्पनिक छवि होनी चाहिए कि वह सड़क पर पड़ा है तथा उठ नहीं सकता एवं उसके कपड़े उल्टी से गंदे हो गए हैं। ये सब अल्पकालिक मनोवैज्ञानिक उपाय हैं जो उसकी कमी से प्रभावित जीवन-शैली में हुए परिवर्तनों से पहले कुछ महीनों तक संयम रखने में उसकी सहायता करते हैं।

हाल ही के वर्षों में रोकथाम नीतियों का काफी प्रचार किया गया है और चिकित्सकों को प्रशिक्षित किया गया है। किसी उपचार कार्यक्रम में पुनः पतन की रोकथाम प्रक्रियाओं को जोड़ने का उद्देश्य पुनः पतन की संभावना तथा तीव्रता को कम करना है। यह तकनीक आरंभिक पुनर्वास तथा पुनः पतन में भी प्रयोग की जा सकती है। आत्मक्षमता विचारधारा जो एक व्यवहार उपचार नीति है। यह बेंदुरा के आत्मक्षमता सिद्धान्त की सामाजिक शिक्षा से ग्रहण की गई है। व्यवहार की आत्म-नियंत्रण शिक्षा तथा मनोचिकित्सा का वर्णन निम्नलिखित उदाहरणों के रूप में किया जा रहा है।

आत्मक्षमता उपचार कार्यनीति

उस स्थिति का ध्यान से मूल्यांकन करती है जिसके कारण व्यक्ति पिछले वर्ष अत्यधिक शराब या मादक द्रव्य का दुरुपयोग करने लगा। मूल्यांकन यह जानने के लिए किया जाता है कि किन कारणों से वह जोखिम या अत्यधिक दुरुपयोग तक पहुँच गया। इस विचारधारा में व्यक्ति द्वारा मादक द्रव्यों के अत्यधिक दुरुपयोग किए बिना व्यक्ति में समस्या या तनाव की स्थिति को संभालने में आत्म विश्वास या योग्यता का भी मूल्यांकन किया जाता है। इस नीति में मुख्य धारणा यह है कि मादक द्रव्यों का दुरुपयोग एक मात्र कारण नहीं है जो व्यक्तियों को अत्यधिक दुरुपयोग या निर्भरता तक ले जाए। हमें व्यक्ति द्वारा मादक द्रव्यों के दुरुपयोग करने के कारणों पर, व्यक्ति द्वारा अत्यधिक दुरुपयोग या मादक द्रव्य पर निर्भरता की स्थिति का मुकाबला करने के लिए उपलब्ध विकल्पों पर भी विचार करना आवश्यक है। इसके उपचार में कार्यनिष्पादन आधारित ऐसे कार्यों की एक क्रमिक श्रृंखला विकसित करना है जो वह व्यक्ति सफलतापूर्वक कर सकता है इसके द्वारा यह देखा जाता है कि वह कैसे कार्यों में निपुण हो जिन्हें वह मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की स्थिति में समस्या मानता था। उपचारकर्ता प्रत्येक कार्य के पूरा होने पर व्यक्ति की आत्मक्षमता का अध्ययन करता है। इसमें अनेक प्रकार की तकनीकें इस्तेमाल की जा सकती हैं। जैसे उपचार सत्र में अभ्यास गतिविधियाँ तथा किसी जिम्मेदार मित्र या उपचारकर्ता के साथ कार्य का संयुक्त रूप का निष्पादन। उपचार प्रक्रिया के दौरान व्यक्ति अतिरिक्त सुरक्षा के रूप में सुग्राही मादक द्रव्य शराब का सेवन भी कर सकता है।

आत्म नियंत्रण व्यवहार प्रशिक्षण

एक और पुनः पतन रोकथाम नीति है जिसमें स्व-प्रबंधन प्रक्रियाओं की श्रृंखला का प्रयोग किया जाता है। इन्हें व्यक्तियों द्वारा शराब या मादक द्रव्य के प्रयोग को कम करने या रोकने के लिए बनाया गया है। इस प्रकार के उपचार में आत्म-नियंत्रण द्वारा निर्भरता व्यवहार का आत्म-निरीक्षण किया जाता है। इसमें शराब या मादक द्रव्य दुरुपयोग द्वारा किए गए कार्यों के मूल्यांकन के आधार पर (जिन्हें मोटे तौर पर सामना करने या मौज के लिए मादक द्रव्य दुरुपयोग की श्रेणी में रखा जाता है) विशिष्ट व्यवहारात्मक उद्देश्यों के लिए तैयार किया जाता है। शराब सेवन के व्यवहार का आत्म-नियंत्रण का अध्ययन तैयार किए गए रिकार्ड के माध्यम से मादक द्रव्य दुरुपयोग के कारण किए गए कार्य तथा उच्च जोखिम की स्थिति के बारे में सूचनाएँ प्रदान करता है। आत्म-नियंत्रण नीति प्रगति के बारे में भी फीड बैक (पुनः प्रयोग करने वाली सूचनाएँ) प्रदान करता है। स्थिति का सामना करने के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करने वाले व्यक्तियों के उपचार में वैकल्पिक ज्ञानात्मक वे व्यवहारात्मक प्रतिक्रियाएँ शामिल की जाती हैं। मौजमस्ती के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करने वाले व्यक्ति के उपचार में नशे से बचने के लिए तथा वैकल्पिक मनोरंजन निपुणताओं का विकास तथा आत्म-नियंत्रण निपुणताएँ स्थापित करना शामिल है।

मनोभाव उपचार

मनोभाव उपचार में उपचार सत्रों की एक श्रृंखला होती जिसमें व्यक्ति से अत्यधिक शराब का सेवन करने के कारण खतरनाक स्थिति की कल्पना (जैसे जीवन साथी से झगड़ा या किसी पार्टी में शामिल होना) का आभास कराया जाता। इसमें शराब का सेवन बिल्कुल

वर्जित होता है। इसके बाद शराब के कारण उत्पन्न भावनाओं की व्यक्ति एवं उपचारकर्ता द्वारा समीक्षा की जाती है तथा इनके प्रति की गई प्रतिक्रिया से हो सकता है कि शराब सेवन की इच्छा समाप्त हो जाए। मनोभाव उपचार उन्मूलन सिद्धान्त पर आधारित है। मनोभाव बल प्रयोग किए बिना बार-बार प्रयोग के माध्यम से अपना उत्पत्ति प्रभाव खो देते हैं।

निवास पर देखभाल

आश्रित व संरक्षित सतत देखभाल का यह प्रावधान ऐसे व्यक्ति के लिए है जो पूर्व में शराब और मादक द्रव्य की लत के कारण असहाय व असमर्थ है और सामुदायिक जीवन में उन्हें पुनः जाना है। यह स्थिति रोग या अन्य असमर्थता के कारण सामुदायिक जीवन यापन में असमर्थ लोगों के लिए उचित है।

उपचार के उद्देश्य

- दैनिक समस्याएँ सुलझाने के लिए मादक द्रव्य/ड्रग्स पर आश्रितता छोड़ना
- अन्य लोगों के साथ संबंध सुधारना
- समस्याएँ सुलझाने की योग्यता सुधारना
- शारीरिक स्वास्थ्य सुधारना
- रोज़गार के मामलों को दक्षता से संभालना
- कानूनी मामले संभालना
- संपूर्ण जीवन स्तर में सुधार करना।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) शराब और मादक द्रव्य निर्भरता के उपचार में व्यापक सेवाओं का अपने शब्दों में संक्षेप में वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.3 उपचार की तैयारियाँ

शराब (मद्यपान) और मादक द्रव्य निर्भरता समस्याओं के उपचार से संबंधित पठन सामग्री में "उपचार केन्द्र/पर्यावरण" का अनेक प्रकार से प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी इसका प्रयोग उपचार प्रदान करने वाले संगठन की स्थानीय स्थिति के लिए प्रयोग किया जाता है (जैसे स्वास्थ्य देखभाल केन्द्र, मानसिक स्वास्थ्य केन्द्र और निजी उपचार केन्द्र आदि), कई बार इसका प्रयोग आरंभिक उपचार दर्शन का वर्णन करने के लिए किया जाता है (जैसे सामाजिक नशा उन्मूलन स्थापना, चिकित्सीय नशा उन्मूलन स्थापना), कई अन्य स्थानों पर इसका प्रयोग व्यक्ति के उपचार के दौरान उसके आवासीय प्रबंध का वर्णन करने के लिए किया जाता है (जैसे आंतरिक रोगी, बाह्य रोगी, अस्पताल, कारागार, आवासीय सुविधा, सामूहिक गृह, नर्सिंग होम, साप्ताहिक उपचार केन्द्र, मध्यवर्ती गृह)। इसका सामान्यतः सबसे अधिक प्रयोग शराब और मादक द्रव्य दुरुपयोग उपचार के लिए अनुसंधान तथा कार्यक्रम योजनाओं में उस वातावरण का वर्णन करने के लिए किया जाता है जिसमें उपचार किया जाता है।

उपचार को मुख्यतः दो प्रकार की स्थितियों/पर्यावरण में विभाजित किया जा सकता है। आन्तरिक रोगी तथा बाह्य रोगी। हालाँकि कुछ में दोनों स्थितियाँ समान होती हैं। इसमें मुख्य विशेषता यह है कि क्या उपचार आवासीय सुविधा में दिन-रात होता है। आंतरिक उपचार में चिकित्सा, सामाजिक और दूसरी सहायक सेवाएँ शामिल हैं जो ऐसे व्यक्तियों के लिए हैं जिन्हें 24 घंटे देखभाल की आवश्यकता होती है। बाह्य चिकित्सा/ग़ैर-आवासीय मूल्यांकन जिसमें मादक द्रव्य निर्भरता के लिए उपचार नियमित तथा अनियमित दोनों आधारों पर किया जाता है।

इसमें उपचार का चयन अनेक तथ्यों के आधार पर किया जाता है, जैसे पैसा चुकाने का सामर्थ्य, मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की गंभीरता और उपचार समस्याएँ, आंतरिक रोगी परिवेश में उपचार कराने के लिए घरेलू वातावरण छोड़ने की इच्छा तथा रोगी की सहायता प्राप्त करने की इच्छा आदि। इस प्रकार आंतरिक और बाह्य रोगी उपचार पर्यावरण प्रायः भिन्न-भिन्न व्यसनी को सेवाएँ प्रदान करते हैं। भारत में अधिकतर उपचार सुविधाएँ आवासीय हैं।

1.4 उपचार की प्रक्रियाएँ

प्रायः उपचार की विषयवस्तु को तकनीक, पद्धति, प्रक्रिया या विधि के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लक्षणों को समाप्त करने या व्यवहार परिवर्तन को प्रभावित करने वाली विशिष्ट प्रक्रियाओं को अनेक अर्थों में प्रयोग किया जाता है जैसे मादक द्रव्य निर्भरता समस्याएँ, एकल या मिश्रित रूप में, मनोचिकित्सा, आत्म सहायता समूह, प्रतिकूल/विपरीत अनुकूलन, बेचैनीरोधी चिकित्सा, आत्म संयम प्रशिक्षण, तनाव प्रबंधन, मालिश चिकित्सा, शारीरिक व्यायाम, व्यावसायिक परामर्श, वैवाहिक परिवार चिकित्सा, सम्मोहन, शराब के प्रभावों के बारे में शिक्षा, वातावरण प्रबंधन और सामाजिक निपुणता प्रशिक्षण आदि। सामान्यतः छह श्रेणियाँ इस प्रकार हैं– 1) औषधीय, 2) सामाजिक, 3) मनोवैज्ञानिक, 4) व्यवहार संबंधी, 5) मनोपरिवर्तन तथा 6) आध्यात्मिक। इनका विभिन्न उपचार प्रक्रियाओं में वर्णन निम्नलिखित प्रकार से हैं।

1.4.1 औषधीय उपचार प्रक्रियाएँ

मादक द्रव्यों की निर्भरता के उपचार में प्रयुक्त विभिन्न औषधियों को वर्गीकृत करने के अनेक प्रयास किए जा चुके हैं। मुख्य भिन्नता इन अर्थों में हैं: क) शराब और मादक द्रव्य के नशे के गंभीर प्रभावों को समाप्त करने के लिए प्रयोग की जाने वाली औषधियाँ, ख) नशा छोड़ने के लिए प्रयोग की जाने वाली औषधियाँ, ग) दीर्घकालीन उपचार की औषधियाँ (पुनर्वास और पुनः पतन की रोकथाम) चूँकि इस इकाई का उद्देश्य उपचार के बारे में संक्षिप्त और उपयोगी सूचनाएँ प्रदान करना है, इसलिए हम उपचार में औषधीय चिकित्सा पक्ष की चर्चा नहीं कर रहे हैं।

1.4.2 सामाजिक उपचार प्रक्रियाएँ

शराब और मादक द्रव्य निर्भरता एक सामाजिक रोग भी है। इसलिए इसके उपचार में अनेक साधनों का प्रयोग किया जाता है जैसे वैवाहिक एवं परिवार चिकित्सा, महिलाओं के समूह, अल्कोहलिक एनानिमस (alcoholic anonymous) तथा कर्मचारी सहायता कार्यक्रमों आदि का मादक द्रव्यों की निर्भरता के उपचार के लिए प्रयोग किया जाता है।

i) **वैवाहिक एवं परिवार चिकित्सा:** अब अधिकांश उपचारकर्ता इस बात को मानने लगे हैं कि रोगी के स्वास्थ्य लाभ में उसका जीवन साथी और कभी-कभी परिवार के सदस्यों का भाग लेना आवश्यक है। प्रायः व्यसनकर्ता के जीवन साथी की आवश्यकता परिवार द्वारा झेले जा रहे तनाव व व्यसनकर्ता द्वारा प्रयोग की जाने वाली मादक द्रव्य की स्थिति या सूचना के बारे में चर्चा करने के लिए होती है। कुछ उपचारकर्त्ता रोगी की मुख्य समस्या से हटकर शराब की समस्या पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास करते हैं तथा दुरुपयोग को परिवार में किसी विकृति का पक्ष मानते हैं। इसके परिणामस्वरूप वे स्वतः पारिवारिक स्थिति पर ध्यान केन्द्रित कर लेते हैं। चाहे कोई भी दृष्टिकोण अपनाया जाए एक चीज स्पष्ट है कि व्यसनकर्ता द्वारा नई जीवन-शैली अपनाने के कारण परिवार को महत्वपूर्ण समायोजन करने पड़ेंगे। यह एक अच्छा उदाहरण है कि जीवन साथी को सहयोग और सहायक के रूप में व्यवहार करना चाहिए। अपने जीवन साथी से झगड़ना नहीं चाहिए। इससे शराब सेवन की समस्या की गंभीरता को न्यूनतम किया जा सकता है, जिससे उपचार का अच्छा परिणाम आने में योगदान मिलता है।

ii) **महिला समूह:** जैसे-जैसे महिलाओं में शराब से संबंधित समस्याएँ अधिक होती जा रही हैं यह आवश्यक हो गया है कि कार्यक्रमों में उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को भी शामिल किया जाए। प्रायः शराब या मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या होने पर महिलाएँ स्वयं को अधिक अपराधी तथा कलंकित समझती हैं। यदि केवल महिलाओं को उपचार सेवा में शामिल किया जाए तो वे निःसंकोच होकर आसानी से बात करती हैं। इस प्रकार की व्यवस्था में वे अपनी समस्याओं और विशेषतः अपनी सेक्स संबंधी समस्या पर खुलकर चर्चा कर सकती हैं। महिलाओं के लिए उपचार को सुविधाजनक बनाने के लिए अतिरिक्त सेवाएँ जैसे निकटस्थ उपचार केन्द्र और शिशु सदन के प्रावधानों पर विचार करना महत्वपूर्ण है।

iii) **एल्कोहलिक्स एनोनिमस, अल-एनोन और अल-एटीन (Alcoholics Anonymous – Al-Anon and Al-Ateen):** एल्कोहलिक्स एनोनिमस (AA) संगठन ने 1985 में अपनी 50वीं वर्षगांठ मनाई। उसका दावा है कि दुनिया भर में उसने 10 लाख से अधिक लोगों की सहायता की है। गंभीर रूप से व्यसनकर्ता

का एल्कोलिक्स एनोनिमस से संबंध न करना कोई समझदारी नहीं है। प्रायः एल्कोलिक्स एनोनिमस के किसी सदस्य के साथ आरंभिक रूप से व्यक्तिगत परिचय होने पर व्यसनकर्ता समस्या का पता कर बहुत कुछ प्राप्त कर लेता है। किसी एक मुलाकात में ही व्यसनकर्ता से अधिक आशा नहीं रखी जा सकती। किसी के लिए इसके महत्व के बारे में अच्छी राय बनाने हेतु अनेक समूहों के साथ प्रायः 15 से 20 मुलाकात आवश्यक होती हैं। अनेक व्यक्तियों ने अपनी आवश्यकतानुसार एल्कोलिक्स एनोनिमस से सहायता तथा जानकारी प्राप्त की है। दूसरे व्यक्ति नियमित रूप से शामिल न होकर भी एल्कोलिक्स एनोनिमस के दर्शन से काफी कुछ ग्रहण कर सकते हैं। अल एनोन व्यसनकर्ताओं के संबंधियों और मित्रों का एक संगठन है जो एक बहुमूल्य संसाधन की तरह ही मान्यता का हकदार है। व्यसनकर्ता की समस्या में गहराई से सम्मिलित कोई भी व्यक्ति इससे सहायता ले सकता है क्योंकि यह संबंधी या मित्र को व्यसनकर्ता द्वारा समस्या सुलझाने की इच्छा न होते हुए भी सहायता प्राप्त करना सिखलाता है। अल-एटीन विशेष रूप से शराब का सेवन करने वाले किशोरों के लिए स्थापित किया गया है।

एल्कोहलिक्स एनोनिमस एक फेलोशिप प्रदान करता है जो समूह में शराब की समस्या पर खुलकर बात करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसमें ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो पहले ही व्यसनकर्ता के दुखों और संकोचों को पहचानते हैं तथा उसी समय जीवन में नया रास्ता प्राप्त करने में सहारा प्रदान करते हैं एल्कोहलिक्स एनोनिमस का अंत में यही विश्वास है कि जो स्वयं को पक्का व्यसनकर्ता समझते हैं उनके ठीक होने के लिए संयम ही एक मात्र उपाय है। ड्रिंकवाचर एक अन्य स्व-सहायता संगठन है जिसका उद्देश्य खतरनाक स्तर तक शराब सेवन करने वालों को कम क्षति कारक स्तर तक की आदतों में लाने में सहायता प्रदान करना है।

iv) **कर्मचारी सहायता कार्यक्रमः** शराब और मादक द्रव्य की निर्भरता कार्य को गलत ढंग से करने के एक रूप में मानी जाती है। इस तथ्य को कर्मचारी सहायता कार्यक्रम आयोजित कर उपचार में लाभ हेतु प्रयोग किया जा सकता है। जहाँ कोई कंपनी ऐसे कर्मचारियों से निपटने के लिए नीति बनाती है जिनका कार्य शराब दुरुपयोग या अन्य कारणों से सही नहीं है।

नीति के बनाने में प्रबंधक तथा यूनियनों की संयुक्त राय होना आवश्यक है तथा इसे समान रूप से संगठन में लागू किया जाना चाहिए। यदि किसी कर्मचारी का कार्य उसके व्यसन के कारण प्रभावित होता है तो वह किसी सहायता प्रदान करने वाले उचित स्रोत में भेजे जाने को स्वीकार कर सकता है बशर्ते उपचार में सहयोग देने पर उसका कार्य सेवा जारी रहेगी। हो सकता है कि कर्मचारी इस प्रकार की कार्रवाई को नकार सकता है और साधारण अनुशासनात्मक प्रक्रियाओं को स्वीकार करें। लेकिन जिन कंपनियों में ऐसी नीतियाँ हैं और उचित रूप से लागू की जाती है वहाँ रोज़गार जारी रहने के अवसर से अतिरिक्त प्रेरणा मिलती है तथा उपचार का बहुत बढ़िया परिणाम प्राप्त होता है।

v) **स्वापक खेतः** इस पद्धति को पिछली शताब्दी के आरंभ में अमेरिकी सरकार द्वारा अपनाया गया। इसका बुनियादी विचार खेत संरचना में उपचार का चिकित्सकीय स्वरूप प्रदान करना था। सेवाग्राही एक अवधि तक खेतों में श्रमिक के रूप में कार्य करते रहते थे और सामाजिक कार्यकर्ता तथा चिकित्सक उन पर नजर रखते थे।

vi) **उपचारी समुदायः** अमेरिका में दूसरे विश्व युद्ध के बाद चार्ल्स ने इस पद्धति का विकास किया। "आधुनिक उपचार समुदाय रोगियों को 18-24 महीने तक उस व्यापक उपचार में डाल देते हैं जो इस सिद्धान्त पर आधारित है कि व्यसनकर्ता की मूल समस्या उसके द्वारा दुरुपयोग किए जाने वाले मादक द्रव्य नहीं अपितु वह स्वयं है।" इस सिद्धान्त के अनुसार आरंभिक उपचारकर्ता स्वयं समुदाय होता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग गहन वैयक्तिक विकारों का लक्षण है।

1.4.3 मनोवैज्ञानिक उपचार प्रक्रियाएँ

मनौवैज्ञानिक उपचार के व्यवहार संबंधी तथा मनोपरिवर्तन संबंधी अनेक प्रकार हैं जिनका मादक द्रव्य दुरुपयोग के उपचार में प्रयोग किया गया है। कभी-कभी यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि कोई उपचार मुख्यतः व्यवहार संबंधी है या मनोपरिवर्तन संबंधी जैसे समूह उपचार और वैवाहिक तथा परिवार उपचार को वास्तविक रूप से व्यवहार संबंधी या मनोपरिवर्तन संबंधी के रूप में विभाजित नहीं किया जा सकता, क्योंकि उपचारकर्ता उन्हें प्रत्येक रूप में प्रयोग करते हैं। वास्तव में अनेक उपचार प्रक्रियाओं के प्रचलन के कारण वर्तमान में विभिन्न प्रक्रियाओं और स्थितियों का संयुक्त रूप से प्रयोग किया जाता है। फिर भी कुछ विशिश्ट प्रक्रियाएँ हैं जो अपने तर्कसंगत प्रयोग और प्रभाव के कारण किसी एक या अन्य रूप के साथ विशिष्ट उद्देश्य के लिए स्वीकृत हैं।

1.4.4 व्यवहार संबंधी सामाजिक प्रक्रियाएँ

शराब सेवन के तरीके कम करने के लिए शिक्षा सिद्धान्त से उत्पन्न तकनीकों का प्रथम चिकित्सीय प्रयोग 50 से अधिक वर्ष पूर्व सोवियत चिकित्सक कांतारोविच द्वारा किया गया। कांतोरोविच ने विद्युत विमुखता का प्रयोग किया लेकिन असफलता मिली तथा इसकी चिकित्सीय प्रक्रिया बंद हो गई। इस बीच के वर्षों में व्यवहार संबंधी पद्धतियों में जिसका लगातार मुख्य रूप से उपयोग हो रहा था वह थी – "द्रव्य अभिरूचि"। इस तकनीक को शेडल सैनेटोरियम, सीटला एस. ए. ने आरंभ किया गया। व्यवहार संबंधी पद्धतियों का व्यापक उपयोग मनोरोग विकृति में 1960 के दशक के आरंभ में किया गया। ये आरंभिक प्रयास शराब सेवन की समस्या के निदान शास्त्र का अपेक्षाकृत सरल विचार प्रस्तुत करते हैं जो परिस्थिति की अवस्था संबंधी चिंताओं को कम करने का प्रयास करते हैं। अत्यधिक शराब सेवन के कारण के बारे में प्रथम एक आयामी ज्ञान सिद्धान्त पशु प्रयोगशाला अध्ययनों और चिकित्सीय अध्ययनों से उत्पन्न हुए। इनके अनुसार शराब की समस्या के लिए उपचार किए जाने वाले व्यक्तियों में शराब चिंता के उच्च स्तर को कुछ कम कर देती है। फिर भी मानव व्यवहार संबंधी अनुसंधान इस विचार को चुनौती देते हैं कि परिस्थिति की अवस्था संबंधी चिंता का एकमात्र कारण अधिक शराब सेवन करना नहीं है। इसका सुझाव है कि अन्य संबंधित कारणों पर भी विचार करना चाहिए।

i) **मादक द्रव्य अरुचि** अभी तक ज्ञात सर्वोत्तम व्यवहार उपचार प्रक्रिया है। इसमें शराब सेवन के व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। वर्तमान प्रचलन के अनुसार द्रव्य अरुचि व्यक्ति की मनसंपद की शराब के साथ हानिकारक प्रेरणा से जुड़ी हुई है। शराब का रूप, गंध तथा स्वाद के प्रति व्यक्ति की विपरीत प्रतिक्रिया को अनुकूलित करने के लिए उल्टी उत्पन्न होती है। अस्पताल में भर्ती होने पर 10 से 15 में एक-एक दिन छोड़ कर प्रायः 5 बार अरुचि उपचार किया जाता है। कुछ व्यक्तियों में 5 से कम उपचार में पर्याप्त अरुचि पैदा हो जाती है जबकि कुछ में और अधिक उपचार की आवश्यकता होती है। चूँकि अरुचि सभी प्रकार की शराबों पर

एक समान रूप से लागू नहीं होती, इसलिए व्यक्ति उपचार के दौरान अलग-अलग समय में भिन्न प्रकार की शराब प्राप्त करते हैं।

ii) **गुप्त संवेदनशीलता** एक मौखिक अरुचि उपचार है जो प्रायः व्यक्ति की बार-बार काल्पनिक अप्रसन्नता का प्रयोग करता है। यह प्रायः शराब सेवन में शामिल प्रत्याशित कार्यों के साथ सूंघने को प्रेरित करने वाली घटनाओं से संबंधित होती हैं। इसमें व्यक्ति शराब सेवन की क्रियाओं को देखता है, गिलास को होठों से लगाता है तथा सेवन के सामान्य वातावरण के अनुसार सामान्य रूप से सेवन करता है।

जैसे ही व्यक्ति गिलास को होठों से लगाता है उसे निर्देश दिया जाता है कि वह अरुचि की कल्पना करें, प्रायः उल्टी आने की कल्पना। पुनः उसे यह कल्पना करने को कहा जाता है कि शराब छोड़ने के बाद आराम अनुभव करे। उपचार में व्यक्ति के साथ कई सत्र होते हैं जो दिन में दो बार तथा जब भी भी उसे सेवन की आवश्यकता अनुभव हो तो प्रक्रिया को दोहराया जाता है।

iii) **तनाव प्रबंधन प्रशिक्षण** को शराब की समस्या वाले व्यक्तियों में विशेषतः जब निरंतर अत्यधिक चिंता/तनाव रहता हो संयम से रहने में लाभप्रद पाया गया है। बायोफीड बैक एक ऐसी ही तकनीक है। इसमें एक इलेक्ट्रॉनी उपकरण का प्रयोग किया जाता है जो मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करता है तथा श्रव्य या दृश्य फीडबैक के माध्यम से उस व्यक्ति को दिखाया जाता है। व्यक्ति को मनपसंद प्रतिक्रिया के अभ्यास द्वारा फीडबैक उत्पन्न करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है (प्रायः पेशियों को ढीला छोड़ना या ध्यान लगाना) व्यक्ति अपनी अनुभूति से अवस्थाओं को पहचान लेता है। यह पेशियों के अधिकतम तनाव का संकेत होता है जो इलैक्ट्रोमायोग्राफी (ई.सी.जी.) फीडबैक में मापा जाता है या अल्फा बेव्ज के रूप में इलैक्ट्रोमायोग्राफी (ई.सी.जी.) द्वारा मापा जाता है। वांछित प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न करने वाले विषयों का अभ्यास दृश्य या श्रव्य फीडबैक संकेत के रूप में किया जाता है तथा यह वांछित प्रतिक्रियाओं को मज़बूत बनाता है। बायोफीडबैक प्रशिक्षण केवल उच्च चिंता करने वाले व्यक्तियों में शराब सेवन की मात्रा को कम करने में उपयोगी पाया गया है। तनाव प्रबंध प्रशिक्षण के अन्य रूप, जो शराब समस्या में प्रयोग किए जाते हैं, वे हैं – लगातार आराम प्रशिक्षण, ध्यान, सुसंगठित रूप से असंवेदी बनाना तथा व्यायाम करना।

iv) **सामाजिक निपुणता या कौशल प्रशिक्षण का विकास** उन लोगों के द्वारा किया गया है जो यह मानते हैं कि अधिक शराब सेवन का कारण है कि व्यक्ति अंतर्वैयक्तिक स्थिति में अपनी संतुष्टि के अनुरूप कार्य करने में अयोग्य होता है। व्यक्तियों को समूहों या सामाजिक वातावरण में जटिल सामाजिक घटनाओं का मुकाबला करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण में उन विशिष्ट निपुणताओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है जिसमें सकारात्मक तथा नकारात्मक भावनाओं को ग्रहण करना, अभिव्यक्त करना, संपर्क बनाना तथा आलोचनाओं का उत्तर देना सिखाया जाता है। इस प्रकार के व्यवहार संबंधी दृष्टिकोण में निपुणताओं के प्रारूप, भूमिका निभाना और भूमिका निभाने की स्थितियों के दृश्य चित्र दिखाने वाली तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

v) **आपातिक प्रबंधन** एक अन्य व्यवहार संबंधी तकनीक है। इसमें संपर्कों के माध्यम से सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की होने वाली अप्रत्याशित प्राकृतिक

घटनाओं तथा अत्यधिक मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से दृढ़ होने वाले या नुकसान उठाने वाली परिस्थितियों में औपचारिक या सामान्य व्यवहार करने का प्रशिक्षण देने का प्रयास किया जाता है। इस विचारधारा में परिवर्तन किए जाने वाले लक्ष्य व्यवहार को पहचानना तथा विद्यमान बदले जाने वाले व्यवहार को निरंतर करते रहने से उचित पुरस्कार या सजा को जानना और लक्ष्य व्यवहार के पूर्व निर्धारित कार्य में अनिश्चित लाभदायक या हानिकारक कार्य अथवा गतिविधियों को जानना शामिल है। प्रभावशाली आकस्मिक प्रबंध को विकसित करने वाले मुख्य तथ्य हैं: (क) मूल्यांकन और व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण परिणामों के माध्यम से पहचान करना, (ख) आकस्मिकता के बारे में पारस्परिक सहमति विकसित करना और (ग) आकस्मिकता को सावधानी तथा सुसंगत रूप से सहमति के सभी पक्षों के पास उनकी निर्धारित भूमिका के लिए ले जाना।

vi) **सामुदायिक प्रणालीकरण परामर्श** भी एक आकस्मिक या आपातिक प्रबंध विचारधारा है। यह पुराने शराब और मादक द्रव्य की निर्भरता के शिकार व्यक्तियों के व्यवहार संबंधी प्रशिक्षण पर ध्यान केन्द्रित करती है। इस परामर्श का उद्देश्य दीर्घकालीन व्यवसाय, अंतः वैयक्तिक एवं परिवार समस्याओं में सुधार करना है। ऐसे मामलों में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रणालीकरण पारिवारिक, रोज़गार और मित्रों की पहुँच के अंतर्गत होते हैं, जो संयम में अनिश्चित होते हैं। सामुदायिक प्रचलन परामर्श एक व्यापक उपचार नीति है जिसमें डायसलफिरम का प्रयोग मित्रों, परिवार और नियोक्ता से व्यक्ति के शराब सेवन के व्यवहार या अन्य समस्याओं के बारे में फीडबैक सहित परामर्शक को नियमित सूचना देना, किसी महत्वपूर्ण पड़ोसी सलाहकार के माध्यम से निरंतर सामाजिक सहारा प्रदान करना तथा निरंतर समूह परामर्श करना शामिल है।

vii) **हानि कम करना:** यह मध्यस्थता की एक व्यवस्था है जो न केवल मादक द्रव्य निर्भरता को समाप्त करने पर ध्यान केन्द्रित करती है बल्कि समाज में व्यसनकर्ता द्वारा किए गए नुकसान को भी नियंत्रित करती है। यह 1980 के दशक में पहली बार नीदरलैंड में आरंभ हुई। हानि कम करने की नीतियाँ मादक द्रव्य व्यसनकर्ता को बड़े समाज से जोड़ने तथा उपयोग और दुरुपयोग में भेद करने का प्रयास करती है।

हानि कम करने की शुरुआत तब हुई जब यह पता लगा है कि मादक द्रव्य के इंजेक्शनों की एक ही सांझी सुई के प्रयोग से प्रायः एच.आई.वी. फैलता है। सुई विनिमय कार्यक्रम को हेरोइन के व्यसनकर्ता स्वस्थ लोगों को सदूषित सुई देने से रोकने के लिए हानि कम करने के कार्यक्रम के भाग के रूप में चलाया गया था। हानि कम करने में मादक द्रव्य दुरुपयोग के कारण होने वाले अपराधों को कम करना भी शामिल किया गया। एक प्रस्ताव यह भी आया है कि व्यसनकर्ताओं को चिकित्सक की देखरेख में मामूली लागत पर मादक द्रव्य उपलब्ध कराने को वैध बनाया जाए। यह प्रणाली 1970 और 1980 के दशकों में इंगलैंड में अजमाई गई। इस विचारधारा के विरोधी कहते हैं कि इससे व्यसन में वृद्धि होती है और ब्रिटेन में 1980 के दशक में वास्तव में व्यसनकर्ताओं की संख्या में हुई वृद्धि ने इस तर्क का समर्थन किया। इसी वृद्धि के कारण यह व्यवस्था समाप्त हो गई। फिर भी कानून के रक्षक दावा करते हैं कि इससे व्यसनकर्ताओं को स्वयं की क्षति की तुलना में समाज की अधिक क्षति करने से रोका जा सकेगा।

viii) **शराब का नियंत्रित सेवनः** अब तक शराब के दुरुपयोग के उपचार का व्यावहारिक लक्ष्य जीवन पर शराब से बचते रहने का था अर्थात् संपूर्ण परहेज। कुछ आधुनिक व्यवहार उपचार अनुसंधानों ने संकेत दिया है कि विशष रूप से सीमित मात्रा में शराब सेवन के कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक आयोजित किया जा सकता है।

इस प्रकार के उपचार में लक्ष्य बड़ी सावधानी से बनाना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति में शारीरिक गड़बड़ जैसे अमाश या लीवर ठीक से कार्य नहीं करता तो वह कभी भी नियंत्रित सेवन का लक्ष्य नहीं बनाएगा। एक अन्य महत्वपूर्ण बात है रोगी द्वारा शराब सेवन के नियंत्रण के बारे में अपनी क्षमता की आशा करना। यदि कोई रोगी यह पक्का विश्वास करता है कि वह किसी भी हालत में शराब को नहीं छोड़ पाएगा तो ऐसे लक्ष्य बनाना समझदारी नहीं होगी।

1994 में ऑर्डी किसलाइन ने एक पुस्तक *"मोडरेट ड्रिंकिंग"* लिखी। मार्च 2000 में वह वांशिगटन राज्य मार्ग पर गलत कार चला रही थी। उसने एक कार को टक्कर मारी तथा एक व्यक्ति और उसकी 12 वर्षीय बेटी को मार दिया। पुलिस को उसकी कार से आधी बोतल बोइका शराब मिली तथा उसके रक्त में अल्कोहल का स्तर .26 था जो कानूनी रूप से अनुमत मात्रा से तीन गुणा अधिक था।

यू सी एल ए एस अल्कोहल रिसर्च सेंटर के निदेशक अर्नेस्ट नोबल कहते हैं कि "आसपास ऐसा कोई शराबी नहीं है जो शराब सीमित मात्रा में पीना न चाहता हो" इसकी पुष्टि के कोई दस्तावेज नहीं है जिसमें सीमा कार्य करती है। एडिले स्मिथर्स फोकेनी कहता है, "ठींक होने की प्रक्रिया में शराबियों ने सीमित मात्रा रखने का प्रयास किया है। किशलाइन की दुर्घटना दर्शाती है कि ऐसे प्रयास सार्थक नहीं होते।

(*द टाइम्स*, अक्टूबर, 2000)

उसी समय हमें इस बात का भी अनुमान लगाना होगा कि रोगी के सामाजिक और व्यावसायिक जीवन पर संपूर्ण परहेज तथा नियंत्रित सेवन का क्या महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। उदाहरण के लिए यदि रोगी स्वयं को नियंत्रित शराब का सेवन करने वाला घोषित या स्वीकार कर अपना रोज़गार नहीं बचा सकता है तो संपूर्ण परहेज से भिन्न उपचार का लक्ष्य स्पष्टतः अनुचित होगा। उसी संकेत के अनुसार अनेक बार असफलताओं के बाद संपूर्ण परहेज के उपचार पर दृढ़ रहना ताकि संपूर्ण परहेज को प्राप्त किया जा सके, अनुचित होगा।

1.4.5 मनोपरिवर्तन

अभी तक मनोचिकित्सा की सरल लेकिन उपयोगी परिभाषा यह है कि, "यह किसी योग्य चिकित्सक की सहायता प्राप्त करने आए रोगी को परेशान करने वाली भावनाओं, धारणाओं और व्यवहारों में परिवर्तन करने के लिए बनाई गई आंतरिक वैयक्तिक प्रक्रिया है। "समकालीन मनोपचार में अनेक सैद्धांतिक विचारधाराओं को शामिल किया जाता है। प्रायः शराब या मादक द्रव्य के दुरुपयोगकर्ता को दिए गए मनोचिकित्सा के विचार और प्रशिक्षण ऐसे लोगों को प्रदान किए गए जिन्हें विभिन्न सैद्धांतिक उपचारों के प्रभाव की वास्तविक तुलना नहीं की जाती। फिर भी पीड़ित लोगों के लिए अनेक सामाजिकों और तकनीकों के सेट की सिफारिश की जाती है। अन्य वर्णित पद्धतियों की तरह वर्तमान परंपरा मनोपचार को अनेक उपचार विचारधारा में एक घटक के रूप में शामिल करने की है। मनोपचार सामाजिकों को प्रायः समग्र रूप से तैयार विभिन्न आयामों वाले कार्यक्रमों में शामिल किया जाता है।

मनोपचार इसके किए जाने वाले स्वरूप में भी भिन्न-भिन्न होता है। यह व्यक्तियों को अलग-अलग सत्रों में, संबंधियों रहित समूहों में तथा परिवार के सदस्यों के साथ समूहों में भी दिया जा सकता है। मनोपचार अपने स्वरूप में भिन्नताओं के साथ-साथ अवधि के संदर्भ में, सत्रों के संदर्भ में तथा सत्रों के मध्य अंतरालों के संदर्भ में भी भिन्न-भिन्न होता है। अवधियाँ अल्पकाल से दीर्घकाल तक हो सकती हैं। अवधियों में भिन्नताओं के लिए किए गए अध्ययनों से इस बात के पर्याप्त प्रमाण नहीं मिल हैं कि दीर्घकालीन अवधियाँ अधिक प्रभावशाली होती हैं। इसके विभिन्न स्वरूपों का विवरण आने वाले अनुच्छेदों में किया जा रहा है।

i) एक व्यक्ति का मनोपचार

हाल के वर्षों में शराब और मादक द्रव्यों के व्यसनकर्ताओं के लिए अकेले व्यक्ति के उपचार का कोई महत्वपूर्ण योगदान देखने में नहीं आया। इस विचारधारा को मनोविश्लेषकवादी पद्धतियों के उपयोग में मिली असफलता के कारण समर्थन प्राप्त नहीं हुआ। यह पद्धति इस व्यसन को रोग के आंतरिक लक्षणों तथा इस आंतरिक संघर्ष की व्याख्या तथा सूक्ष्म नज़र के विकास के माध्यम से दूर करने के लिए विचार करती है। कुछ लोगों का विचार है कि अकेले व्यक्ति का मनोपचार या परामर्श उसके व्यसन उपचार में महत्वपूर्ण योगदान करता है। अधिकांश मनोचिकित्सा परामर्शक अतीत के मुद्दों और उनके विकसित होने के कारणों पर विचार करने की अपेक्षा समकालीन जीवन की समस्याओं तथा व्यसन के दुरुपयोग तथा व्यवहारों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। यह सिद्धान्त अलग करने की अपेक्षा सहारा प्रदान करने वाले उपचार का आरंभिक रूप है।

चिकित्सीय अनुभव के आधार पर विचारधाराओं में कुछ परिवर्तन भी हुए, जिनमें उपचारकर्ता को सहारा प्रदान करने तथा मुकाबला करने वाली दोनो भूमिकाओं को सक्रिय रूप से निभाने की सलाह दी जाती है। साथ ही उसे शराब और मादक द्रव्य के व्यसनकर्ता की सुरक्षा व्यवस्था एवं आत्मसम्मान को चोट लगने के बारे में भी सावधान रहना चाहिए। अकेले व्यक्ति की मनोचिकित्सा को प्रायः व्यापक पुनर्वास प्रयासों के एक हिस्से के रूप में लेना चाहिए जिसमें व्यसन शिक्षा, एल्कोलिक्स एनोनिमस (एए) के बारे में बनाना, ए.एल-1-अनोन और एल एटीन के संदर्भों सहित परिवार मध्यस्थता, डायसतफराम खाने और व्यसन को बढ़ावा देने वाली जीवन की समस्याओं के लिए विशेष प्रयास करने का प्रशिक्षण शामिल किया जा सकता है।

ii) सामूहिक मनोपचार

अकेले व्यक्ति के मनोपचार से भिन्न सामूहिक मनोपचार इस व्यसन के लिए किया जाना वाला सबसे अधिक प्रचलित मनोपचार है। यह पुनर्वास के आरंभिक एवं विस्तृत कार्यक्रमों में प्रयोग किया जाता है। सामूहिक उपचार एकमात्र रूप में कभी नहीं किया जाता। अकेले व्यक्ति के मनोपचार की तरह सामूहिक उपचार में भी मादक द्रव्य चिकित्सा एल्कोलिक्स एनोनिमस (एए) और अन्य सहारा प्रदान करने वाली गतिविधियों के साथ किया जाता है। अकेले व्यक्ति के मनोपचार की तरह समूहों में भी उपचारकर्ताओं की स्थिति और प्रशिक्षण का समग्र कार्यक्रम जिसके वे अंग हैं की विचारधाराओं के अनुरूप भिन्नता की प्रवृत्ति होती है। इसलिए शराब समस्या के सामूहिक उपचार में भिन्नताएँ होना मुख्य विशेषता है। इस प्रकार उनमें समूहों के आकार, समूहों की बैठकों की संख्या, सूत्रों की संख्या, उपचारकर्ताओं की संख्या और समूहों में परस्पर संपर्क शैली में कोई एकरूपता नहीं होती।

प्रायः इसके लाभों में वह तकनीक विशेष महत्वपूर्ण है जिसमें शराब की समस्या से पीड़ित व्यसनकर्ता वैसे ही अनुभव वाले लोगों से मिलता है। इस विचारधारा में समूह के सदस्य संयम से रहने पर आने वाली कठिनाइयों के बारे में सहारा तथा ऐसे लोगों के ज्ञात व्यवहारों जैसे इंकार करने, चालाकी और आडम्बरों का मुकाबला करने में सहारा प्रदान करते हैं।

आरंभिक पुनर्वास साधन के रूप में रोगी बाह्य रोगी या अंतरंग रोगी हो सकता है। इसमें प्रायः प्रतिदिन एक से डेढ़ घंटे तक सामूहिक उपचार प्रदान किया जाता है। जब सामूहिक उपचार को अनुवर्ती देखभाल के रूप में व्यापक ध्यान रखने के रूप में प्रयोग किया जाता है तो समूह सप्ताह में 3 बार या फिर महीने में एक बार भी एकत्रित हो सकते हैं। समूहों का आकार प्रायः 8 से 12 सदस्यों तक उपयुक्त माना जाता है लेकिन व्यावहारिक रूप से देखा गया है कि ये 4 से 20 तक की संख्या में होते हैं। मनोचिकित्सा के अन्य समूहों की तरह इसमें भी महिला और पुरुष मनोपचारकर्ताओं की सहभागीदारी उपयुक्त मानी जाती है।

iii) सामूहिक सक्रियता

सामूहिक मनोपचार के साथ-साथ संगठित कार्यक्रम प्रायः समग्र उपचार कार्यक्रम के लिए अन्य साधनों का इस्तेमाल करने के रूप में सामूहिक सक्रियता के सिद्धान्त का भी प्रयोग करते हैं। इन साधनों में शैक्षणिक समूहों को शामिल किया जा सकता है जो शराब के मनोवैज्ञानिक प्रभावों के बारे में वास्तविक सामग्री प्रस्तुत करते हैं। शैक्षणिक समूह आकार और शैली में भिन्न-भिन्न होते हैं। इसका अधिकतम आम रूप है। व्याख्यानों, फिल्मों और दृश्य टेपों के माध्यम से सामग्री का व्यापक सामूहिक प्रस्तुतीकरण। इसके बाद चर्चा का कार्यक्रम रखा जाता है। दोनों का लक्ष्य वास्तविक सामग्री को स्पष्ट करना तथा प्रभावी बनाना एवं गलत धारणाओं और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को सही रूप से समझाना है।

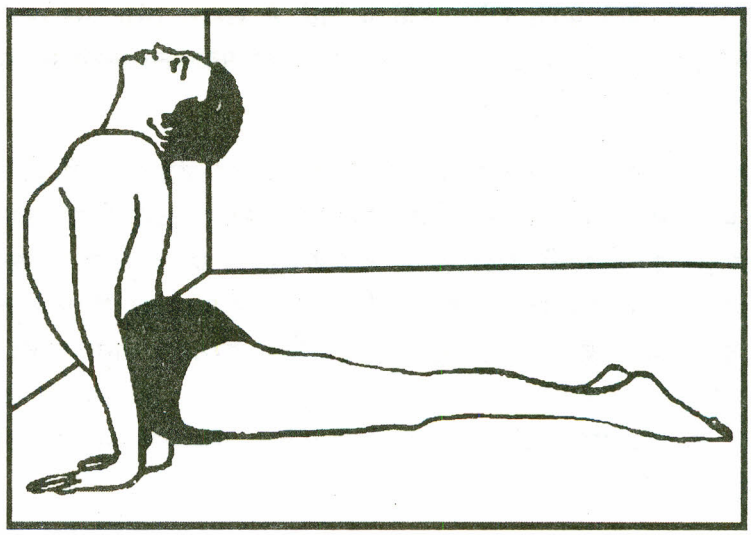
iv) सक्रिय समूह

सामूहिक मनोपचार का एक अन्य रूप है सक्रिय समूह। इसका आयोजन व्यापक रूप से संगठित कार्यक्रमों में विशिष्ट मनोरंजन गतिविधियों के लिए किया जाता है। इसके उद्देश्य हैं: संयम के अर्थ में अन्य लोगों के संपर्क द्वारा सामाजिक निपुणताओं को पुनः सीखने में भागीदार होना, वैकल्पिक मनोरंजन गतिविधियों को सीखना तथा अपनाया जो अंततः मद्य सेवन का स्थान ले तथा सामुदायिक संसाधनों सें परिचित होना। अनेक संगठित कार्यक्रम सामूहिक मनोपचार साधनों के रूप में सामुदायिक संसाधनों से परिचित होना। अनेक संगठित कार्यक्रम सामूहिक मनोपचार साधनों के रूप में सामुदायिक बैठक या वार्ड प्रबंधन बैठकों का आयोजन करते हैं।

1.4.6 आध्यात्मिक उपचार प्रक्रियाएँ

मद्यपान और मादक द्रव्य निर्भरता एक आध्यात्मिक रोग भी है। मादक द्रव्यों के व्यसनकर्ता मद्यपान और मादक द्रव्य सेवन को आरंभ में बहुत महत्व देते हैं। मद्यपान और मादक द्रव्य सेवन की मजबूरी का संघर्ष करने के लिए उच्च आत्मबल होना आवश्यक है। शराब और मादक द्रव्य सेवन को छोड़ने के लिए प्रार्थना और ध्यान को एक पद्धति के रूप में सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया गया है। ध्यान में व्यक्ति किसी विचार, भावना, शब्द वस्तु या किसी मानसिक स्थिति पर ध्यान केन्द्रित करना सीखता है। कुछ

तकनीकें काफी प्रभावशाली हैं जिनमें किसी एक विशिष्ट वस्तु या ध्यान केन्द्रित करने के लिए गहन प्रयास आवश्यक होता है।



उदाहरण के लिए कुछ योग क्रियाओं में अभ्यास करने वालों को विशिष्ट मुद्राओं (आसनों) को बनाए रखना, अपनी श्वास क्रिया के माध्यम से शरीर के अन्य कार्यों पर नियंत्रण रखना आवश्यक होता है। ध्यान योग की अन्य तकनीकें जैसे अनुभवातीत ध्यान निष्क्रिय पद्धतियाँ हैं। अभ्यासकर्ता को एक शांत वातावरण में रहकर आंतरिक शांति प्राप्त करने की एक आरामदायक कोशिश करनी पड़ती है। व्यक्ति अन्य विचारों को मन से निकालने के लिए किसी मंत्र पर ध्यान केन्द्रित करता है या प्रयास करता है लेकिन जोर नहीं डालता। अधिकांश निष्क्रिय तकनीकों को प्रतिदिन 20 मिनट तक विशेषकर प्रातः तथा रात को खाने से पूर्व तक किया जाता है।

माँसपेशियों को कसना और शिथिल करना सीखने पर जोर देने वाली क्रिया से विश्राम या शिथिल होने से तनाव और चिंताओं में रहने वाले व्यक्तियों को सहायता मिलती है। इसके साथ दूसरी ध्यान प्रक्रियाओं को लागू किया जाता है। शिथिलीकरण उपचार मादक द्रव्यों के व्यसनकर्ताओं को व्यसन छुड़ाने तथा पुनर्वास में सहायक होता है।



बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामाजिक उपचार साधनों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) व्यवहार संबंधी उपचार साधनों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) आध्यात्मिक उपचार साधनों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 शराब (मद्यपान) की आदत और मादक द्रव्य के दुरुपयोग की रोकथाम योजना

मादक द्रव्यों के दुरुपयोग और मद्यपान को मनो-सामाजिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में मान्यता देते हुए सामाजिक न्याय और मानव अधिकार मंत्रालय, भारत सरकार, उन गैर-सरकारी संगठनों को अनुदान प्रदान करती है जो व्यसनकर्ताओं में जागरूकता लाने, उनकी पहचान करने, उपचार और पुनर्वास करने सहित सभी सेवाएँ प्रदान करती है।

चुने गए भारत के महानगरों में मादक द्रव्य और हेरोइन के व्यसनकर्ताओं की अनुमानित संख्या

राज्य	मादक द्रव्य व्यसनकर्ता	हेरोइन व्यसनकर्ता
भारत	2.25 अरब	700,000
मुंबई		150,000
दिल्ली		110,000
कोलकाता		60,000
जम्मू	6000	200

मंत्रालय द्वारा आर्थिक रूप से पोषित विभिन्न योजनाएँ निम्नलिखित हैं:

1) जागरूकता एवं रोकथाम शिक्षा
2) मादक द्रव्य जागरूकता और परामर्श केन्द्र
3) उपचार और पुनर्वास केन्द्र
4) कार्यस्थल रोकथाम कार्यक्रम
5) व्यसन मुक्ति कैंप
6) मादक द्रव्य दुरुपयोग रोकथाम के लिए गैर-सरकारी संगठन मंच
7) समुदाय आधारित पुनर्वास को मज़बूत बनाने के लिए नवीन मध्यस्थाएँ
8) तकनीकी परिवर्तन और मानव शक्ति विकास कार्यक्रम, और
9) योजना के अंतर्गत शामिल विषयों पर सर्वेक्षण, अध्ययन, मूल्यांकन और अनुसंधान

जागरूकता एवं रोकथाम शिक्षा

इस योजना में चार क्षेत्रों को शामिल किया गया है।

1) शिक्षाप्रद तथा प्रचार सामग्री निर्माण और वितरण: क) पोस्टर/फ्लैश कार्ड/कपड़े के चार्ट/फ्लिप चार्ट, ख) पर्चे/विवरण/पत्र, ग) होर्डिंग/पैनल/बैनर्स, घ) पुस्तकें/पत्रिकाएँ आदि।
2) सामुदायिक भागीदारी कार्यक्रम: क) नुक्कड़ सभाएँ/कार्यशालाएँ/सम्मेलन, ख) निबंध/वाद-विवाद/उक्तियाँ/नाटक/एकांकी नाटक प्रतियोगिताएँ, ग) नुक्कड़ नाटक/लोक मीडिया आदि।
3) स्वयं सेवी कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण शिविर
4) मादक द्रव्य/शराब के विरुद्ध जागरूकता बनाने वाले कार्यक्रम के लिए की गई गतिविधि।

1.5.2 मादक द्रव्य जागरूकता और परामर्श केन्द्र

ये केन्द्र समाज को निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान करने के लिए हैं:

1) जागरूकता पैदा करना
2) प्रेरणात्मक परामर्श
3) दुरुपयोग/व्यसनकर्ताओं की पहचान करना
4) अनुवर्ती सेवाएँ

1.5.3 उपचार और पुनर्वास केन्द्र

उपचार और पुनर्वास केन्द्र समाज को निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान करने के लिए हैं:

1) रोकथाम शिक्षा और जागरूकता उत्पन्न करना
2) व्यसनकर्ताओं की पहचान करना
3) प्रेरणात्मक परामर्श देना
4) विष रहित बनाना
5) व्यावसायिक पुनर्वास
6) अनुवर्ती देखभाल और सामाजिक मुख्यधारा में पुनः शामिल होना।

1.5.4 कार्यस्थल रोकथाम कार्यक्रम

यह माना जाता है कि इस संबंध में मुख्य दायित्व प्रबंधकों तथा ट्रेड यूनियनों का होता है। इन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए 15 या 30 बिस्तरों वाला उपचार व पुनर्वास केन्द्र स्थापित करने के लिए उद्योग या उपक्रम को कुल खर्च की 25 प्रतिशत आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। शेष खर्च नियमों के अनुसार उद्योग/उपक्रम को उठाना होता है। ऐसे केन्द्र/औद्योगिक संस्थानों में या एक स्थान पर न्यूनतम 500 और उससे अधिक कर्मचारियों वाले औद्योगिक संस्थानों के समूह सहायता के पात्र हैं।

1.5.5 व्यसन मुक्ति कैंप

उपचार व पुनर्वास केन्द्र चलाने वाला कोई संगठन मादक दव्य दुरुपयोग बहुल, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में व्यसन मुक्ति कैम्प लगा सकते हैं। इन कैम्पों का उद्देश्य समाज को सक्रिय बनाना तथा मादक द्रव्यों एवं मद्य दुरुपयोग की रोकथाम में जागरूकता को बढ़ाना तथा सामूहिक प्रोत्साहन को बढ़ावा देना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए वे अपने कर्मचारी तथा सामाजिक संसाधनों का उपयोग करेंगे। फिर भी कुछ अतिरिक्त निवेशों की भी आवश्यकता पड़ती है। जिसके लिए इस योजना के अंतर्गत अतिरिक्त अनुदान स्वीकृति किया जा सकता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग रोकथाम के लिए गैर-सरकारी संगठन मंच

गैर-सरकारी संगठनों का मुख्य कार्य इस क्षेत्र में कार्यरत स्वयंसेवी संगठनों के कार्यक्रमों में समन्वय स्थापित करना है ताकि उनके कार्य संचालन में एकरूपता को सुनिश्चित किया जा सके। इस योजना के अंतर्गत प्रेषित सभी संगठनों को एक मंच पर आकर

बारी-बारी से अपने एक प्रतिनिधि को अध्यक्ष बनाया जाता है फोरम या मंच का कार्यालय अध्यक्ष के संगठन में हो सकता है। सभी प्रांतीय/क्षेत्रीय मंच राष्ट्रीय संगठन से संबद्ध होते हैं।

समुदाय आधारित पुनर्वास को मज़बूत बनाने के लिए नवीन मध्यस्थाएँ

उपचार व पुनर्वास केन्द्र जिनके पास यदि क्षमता है तो उन्हें समुदाय-आधारित विचारधारा को मज़बूत करने के लिए नई मध्यस्थता विकसित करने के लिए प्रोत्साहन किया जाता है ताकि व्यसन मुक्त होने वाले लोगों का पुनर्वास हो सके। इस प्रकार के उदाहरण हैं: हाफ वे होम, ड्रोप इन सेंटर आदि बनाना। इस उद्देश्य के लिए केन्द्र के कुछ स्वीकृत कार्य का 5 प्रतिशत अतिरिक्त धन संगठन को देने का प्रावधान है।

तकनीकी परिवर्तन और मानव शक्ति विकास कार्यक्रम

इस योजना के अंतर्गत समर्पित व पुनर्वास केन्द्रों को सामाजिक न्याय तथा मानव अधिकार मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त अन्य प्रसिद्ध केन्द्रों में अपने सदस्यों को भेजने पर आने वाले खर्च की पूर्ति के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

योजना के अंतर्गत शामिल विषयों पर सर्वेक्षण, अध्ययन, मूल्यांकन और अनुसंधान

मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित कार्य के गुणवत्ता के आधार पर योग्य संगठनों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सामाजिक न्याय व मानव अधिकार मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

1.6 सारांश

इस इकाई में हमने मद्य एवं मादक द्रव्य दुरुपयोग के लिए उपलब्ध उपचार विकल्पों को समझने का प्रयास किया है। इस प्रक्रिया में हमने उपचार अवस्थाओं तथा उपचार साधनों की जाँच की है। उपचार साधनों की चर्चा में औषधीय उपचार, सामाजिक

उपचार, मनोवैज्ञानिक उपचार, व्यवहार संबंधी उपचार, मनो-सक्रिय उपचार तथा आध्यात्मिक उपचारों को शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त हमने सामाजिक न्याय एवं मानव अधिकार मंत्रालय द्वारा गैर-सरकारी संगठनों को जागरूकता पैदा करने, पहचान करने, व्यसनकर्ताओं के उपचार व पुनर्वास की समग्र सेवाओं के लिए अनुदान प्रदान करने की भी संक्षिप्त चर्चा की है।

1.7 शब्दावली

मद्य दुरुपयोग (Alcohol Abuse) : मद्यपान की अधिक मात्रा के परिणामस्वरूप कार्य करने की शक्ति क्षीण होना तथा आंतरिक वैयक्तिक संबंधों में तनाव आना।

अत्यधिक उन्माद (Delirium Tremens) : अत्यधिक मद्यपान के कारण चरम उन्माद तथा चेतना एवं ध्यान में गंभीर विभाजन।

निराशा (Depression) : व्यापक दुख भावना जो किसी हानि या तनाव भरी घटना से आरंभ होती है जो काफी लम्बी अवधि तक रहती है।

विषरहित बनाना (Detoxification) : किसी ऐसे विषैले मादक पदार्थ विशेष पर शरीर का आदी होना जिससे समस्या होती है। मादक द्रव्य या मद्य विषरहित बनाने का अर्थ है कि विषैला पदार्थ की मात्रा कम होने पर प्रायः ठीक होने के लक्षण प्रकट होने लगते हैं।

परिवार चिकित्सा (Family Therapy) : विशेष प्रकार की सामूहिक चिकित्सा जिसमें समूह उपचार सत्रों में रोगी के पारिवारिक सदस्य शामिल होते हैं। इसके मूल में भावना यह है कि समस्या समाधान के लिए संपूर्ण परिवार को अपना व्यवहार बदलना होता है।

सामूहिक चिकित्सा (Group Therapy) : एक ही समय में कई लोगों का छोटे-छोटे समूहों में मनोपचार करना।

लिथियम (Lithium) : दोनों प्रकार की विकृति के उपचार के प्रयोग किया जाने वाला रासायनिक पदार्थ।

वैवाहिक उपचार (Marital Therapy) : एक छोटे प्रकार की समूह चिकित्सा जिसमें पति-पत्नी अपने संपर्कों में सुधार करने के लिए किसी चिकित्सक से एक साथ मिलते हैं।

समस्या के कारण मद्यपान (Problem drinking) : इस प्रकार के मद्य दुरुपयोग में मद्य की आदत होना या मनोवैज्ञानिक रूप से व्यसनकर्ता होना शामिल नहीं होता।

मनो-सक्रिय चिकित्सा (Psychodynamic Therapy) : ऐसी चिकित्सा संबंधी विचारधारा जो फ्रायड के सिद्धान्तों से उत्पन्न मनो-सक्रिय अनुभव पर आधारित हो लेकिन मनो-मूल्यांकन तक सीमित नहीं है।

मनोपचार (Psychotherapy) : सामान्यतः इसका प्रयोग, मनोवैज्ञानिक, शाब्दिक और प्रतिकूल व्यवहार के उपचार में प्रयुक्त तकनीकों का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

पुनः व्यसन की आदत में रोकथाम (Relapse prevention) : मद्यपान की समस्याओं पर विचार करने की दृष्टि से ऐसी समस्याओं, परिस्थितियों की पहचान करने तथा इन पर नियंत्रण पाने के लिए इनके साथ सामंजस्य स्थापित करने वाले साधनों की पहचान करने में रोगी की सहायता करना।

तनाव मुक्त प्रशिक्षण (Ralaxation training) : कुछ परिस्थितियों में होने वाले तनाव को दूर करने के लिए रोगों द्वारा किए जाने वाले कुछ विशिष्ट व्यायाम करने की कला सीखना।

आत्म-सहायता समूह (Self-help group) : एक जैसी समस्या वाले लोगों का समूह जो अपने अनुभव बाँटने तथा इन समस्याओं से निपटने की अपनी योग्यता सुधारने के प्रयास में अपनी सहायता स्वयं करने का प्रयास करते हैं।

सामाजिक निपुणता प्रशिक्षण (Social Skills Training) : व्यवहार या सादृश्य व्यवहार चिकित्सा विचारधारा में विभिन्न परिस्थितियों में लोगों से परस्पर संपर्क के प्रभावशाली तरीके सीखने पर जोर दिया जाता है।

सह्य मात्रा (Tolerance) : ऐसी स्थिति जिसमें समान मनोवैज्ञानिक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए व्यक्ति को किसी द्रव्य पदार्थ की अधिक खुराकें लेनी पड़ती है।

ठीक होना या वापस लौटना (Withdrawal) : किसी व्यक्ति द्वारा आदत वाले मादक द्रव्य को छोड़ने के बाद होने वाली हल्की सी तीव्र उदासी के मनोवैज्ञानिक परिवर्तन/हेरोइन से वापस लौटने के लक्षण शायद अच्छी प्रकार जाने जाते हैं।

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

इर्विन जी. सारसों एंड बारबरा आर. सारसों (1996), आठवाँ संस्करणः *अबनॉर्मल साइकोलॉजी,* प्रिंटिस हाल ऑफ इंडिया लिं., नई दिल्ली।

जेलीनेक, ई. एम. (1996), *द डिजीज कंसेप्ट ऑफ एल्कोहलिज्म,* न्यू हेवनः हिल हाउस प्रेस।

चोपड़ा आर. एन. एंड चोपड़ा आई.सी. (1965), *मादक द्रव्य एडिक्शन विद स्पेशल रिफरेंस टू इंडिया,* कांउसिल ऑफ सांइटिफिक एंड इंडस्ट्रीयल रिसर्च, नई दिल्ली।

वेर्नान, ई. जोनसन, डी. डी. (1986), *इंटरवेंशन जॉनसन इंडस्ट्रीयल बुक्स,* मिनयापोलिस।

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) उपचार की व्यापक सेवाओं में शामिल हैंः पहचान करना, संक्षिप्त मध्यस्थता, मूल्यांकन करना, निदान करना, परामर्श देना, चिकित्सा सेवाएँ, मनोचिकित्सा सेवाएँ, मनोवैज्ञानिक सेवाएँ, सामाजिक सेवाएँ, तथा मद्यपान की समस्या वाले व्यक्तियों में अनुवर्ती सेवाएँ। उपचार का एकमात्र उद्देश्य मद्य या मादक द्रव्य के प्रयोग को कम या समाप्त करना है। इनके कारण शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कार्य विकृत हो जाते हैं तथा इनसे संबंधित समस्याओं की प्रगति रूक जाती है या समाप्त हो जाती है।

बोध प्रश्न II

1) मद्य और मादक द्रव्य व्यसन एक सामाजिक रोग भी है। रासायनिक द्रव्यों के व्यसन के उपचार के साधन के रूप में वैवाहिक तथा परिवार चिकित्सा, महिलाओं के समूह, एल्कोहलिक एनोनिमस, कर्मचारी और परिवार चिकित्सा तथा महिलाओं के समूह मद्यपान व्यवहार तथा संप्रेक्षण दोनों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। एक-एक स्व-सहायता समूह है। ई ए पी रोगियों की उनके कार्य प्रबंधों में आवश्यकता प्रदान करता है।

2) सोवियत चिकित्सक कंटोरिविच ने पहली बार विद्युतीय घृणा का प्रयोग किया था जो अब प्रभावहीन होने के कारण बंद हो गया है। व्यवहार पद्धतियों में अधिकांशतः

लगातार मध्यवर्ती सालों में रासायनिक घृणा उपचार का प्रयोग किया गया। व्यक्ति के पसंदीदा मद्य में हानिकर पदार्थ मिलाकर मद्य तैयार किया जाता है। मौखिक घृणा चिकित्सा में एक मौखिक संवेदनशीलता पद्धति का प्रयोग किया जाता है। इस सिद्धान्त में आकस्मिक प्रबंध, सामुदायिक प्रबलन परामर्श, हानि में कमी तथा नियंत्रित मद्यपान तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

3) मद्य और मादक द्रव्य एक आध्यात्मिक रोग भी है। मद्य और मादक द्रव्य का व्यसनकर्ता आरंभ में अपने व्यसन को बहुत महत्वपूर्ण मानता है। मद्यपान तथा मादक द्रव्य के प्रयोग की मज़बूरी से संघर्ष करने के लिए उच्च शक्ति की भावना होना अनिवार्य है। मद्यपान तथा मादक द्रव्य के व्यसन से मुक्त होने के लिए प्रार्थना और ध्यान योग को एक साधन के रूप में सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है।

बोध प्रश्न III

1) सामाजिक न्याय व मानव अधिकार मंत्रालय, भारत सरकार, उन ग़ैर-सरकारी संगठनों को अनुदान प्रदान करता है जो समग्र सेवाओं जैसे जागरूकता पैदा करना, पहचान करना, व्यसनकर्ताओं का उपचार और पुनर्वास करना आदि प्रदान करते हैं। मंत्रालय द्वारा आर्थिक रूप से पोषित योजनाएँ निम्नलिखित हैं:

   i) जागरूकता एवं रोकथाम शिक्षा

   ii) मादक द्रव्य जागरूकता और परामर्श केन्द्र

   iii) उपचार और पुनर्वास केन्द्र

   iv) कार्यस्थल रोकथाम कार्यक्रम

   v) व्यसन मुक्ति कैंप

   vi) मादक द्रव्य दुरुपयोग रोकथाम के लिए ग़ैर-सरकारी संगठन मंच

   vii) समुदाय आधारित पुनर्वास को मज़बूत बनाने के लिए नवीन मध्यस्थाएँ

   viii) तकनीकी परिवर्तन और मानव शक्ति विकास कार्यक्रम, और

   ix) योजना के अंतर्गत शामिल विषयों पर सर्वेक्षण, अध्ययन, मूल्यांकन और अनुसंधान

इकाई 2 शिक्षा, परामर्श, मार्गदर्शन सेवाओं और सामुदायिक प्रतिक्रियाओं द्वारा सशक्तिकरण

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 सशक्तिकरण प्रक्रिया

2.3 रोकथाम शिक्षा

2.4 रोकथाम की नीतियाँ

2.5 व्यसन की रोकथाम में सामुदायिक प्रतिक्रिया

2.6 उपचार के लिए व्यसनी तथा परिवार को प्रेरित करना

2.7 व्यसनी की पहचान करना

2.8 स्कूल आधारित कार्यक्रमों के द्वारा रोकथाम

2.9 सारांश

2.10 शब्दावली

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य मादक द्रव्य के दुरुपयोग के कुप्रभाव से बचाव एवं उपचार कार्य को आगे बढ़ाने के लिए समुदाय में विभिन्न समूहों द्वारा किए गए जा सकने वाले कार्यों का उल्लेख करना है। बचावकारी शिक्षा, अभिभावक एवं सामुदायिक नेताओं के लिए काउंसलिंग अर्थात् परामर्श शिक्षा, उपचार के लिए परिवार एवं व्यसनी को प्रेरित करना तथा उपचार कार्यक्रमों की पहचान करना आदि समुदाय सशक्तिकरण के कुछ उपाय हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- सशक्तिकरण प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- मादक द्रव्य के दुरुपयोग एवं रोकथाम से संबंधित शिक्षा कार्यक्रमों को पहचान सकेंगे;
- व्यसनी को पहचानने के विभिन्न उपायों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे; और
- मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की रोकथाम के लिए सामुदायिक संसाधनों को सक्रिय करने की विभिन्न संभावनाओं का पता लगा सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने विभिन्न उपचार कार्यक्रमों के बारे में पढ़ा है। मादक द्रव्य दुरुपयोग का उपचार तो हो सकता है लेकिन यह इलाज नहीं। इसलिए मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम का अत्यधिक महत्व है। इस इकाई में मादक द्रव्यों के दुरुपयोग को रोकने के लिए समुदायों को शक्तिशाली बनाना तथा व्यसनी और उसके परिवार को उपचार के लिए प्रेरित करने का वर्णन किया गया है। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग को अनेक प्रकार से समुदाय/समाज द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। इसलिए समाज को इसके उन्मूलन को बढ़ावा देने तथा रोकथाम में शक्तिशाली भूमिका निभाने के लिए जागरूक किए जाने की आवश्यकता है।

समाज के अनेक अंग हैं। प्रभावशाली रोकथाम तथा उपचार नीतियाँ बनाने के लिए सभी अंगों को शामिल करना अनिवार्य है। हम चर्चा करेंगे कि इनमें संतुलन कैसे बनाया जाए। रोकथाम और उपचार के कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिन्हें व्यक्ति, परिवार तथा समुदाय स्तर पर समझना कठिन हो सकता है। जानकारी के अभाव में रोकथाम और उपचार कार्यक्रमों का प्रतिरोध हो सकता है। इन प्रतिरोधों से निपटने के उद्देश्य से एक खंड भी इस इकाई में शामिल किया गया है।

2.2 सशक्तिकरण प्रक्रिया

"चाहे कोई व्यक्ति कितना भी अज्ञानी हो, किसी दूसरे की अपेक्षा वह अच्छी तरह जानता है कि उसे क्या तकलीफ है और यही कारण है कि चाहे वह अन्य क्षेत्रों में अशिक्षित हो या संभ्रांत वह अपने दुखों को जानता है। प्रत्येक व्यक्ति से सक्रिय रूप से इस प्रकार सलाह ली जाए कि उसे यह महसूस हो कि वह सामाजिक नियंत्रण प्रक्रिया तथा आधिकारिक प्रक्रिया का एक अंग है। उसे यह लगे कि इस प्रकार उसके पास अपनी ज़रूरतों और इच्छाओं को बताने का अवसर है, ताकि सामाजिक नीति बनाते समय उनका ध्यान रखा जाए।"

ये शब्द प्रसिद्ध सामाजिक चिंतक एवं शिक्षाविद् जॉन डेवी के हैं। यदि किसी समाज की विचारधारा और कार्य प्रणाली में परिवर्तन या संशोधन की आवश्यकता है, तो इसके सदस्य इस आवश्यकता का अनुभव करते हैं तथा अपनी सामाजिक संरचना एवं परस्पर अपने विचारों में आवश्यक संशोधन कर लेते हैं। वे ही परिवर्तन स्थायी रहते हैं जिन्हें लोगों ने स्वयं किया है। जो उन्होंने बताया है लोग उसका समर्थन करते हैं।

मादक द्रव्य के दुरुपयोग की रोकथाम तथा उपचार विधियों को चिकित्सकों तथा मनोचिकित्सकों का क्षेत्र माना जाता है। कुछ हद तक यह सत्य है। दूसरी तरफ इस व्यसन को सामाजिक रूप से उत्पन्न रोग माना जाता है। जहाँ तक व्यसनी का संबंध है इसे अनुकूलन व्यवस्था कहा जा सकता है जबकि यह नकारात्मक तथा विनाशकारी है। व्यसनी मादक द्रव्य का प्रयोग कर समाज की आशाओं और आवश्यकताओं की तुलना में अपने व्यक्तित्व को संतुलित करने का प्रयत्न करता है। समाज जितना विकृत होगा उतने ही अधिक व्यसनियों के बढ़ने की संभावना होगी।

सशक्तिकरण भागीदारी प्रक्रिया है। यह भागीदारी प्रक्रिया सांसारिक लक्ष्यों की अपेक्षा मानव के विकास के लिए है। यह निरंतर प्रयत्न करते रहने का व्यक्तिगत प्रशिक्षण है न कि तकनीकी ज्ञान के लिए। भागीदार विकास लोगों को स्वयं अपना विकास करना

सिखलाता है। लोग अपनी समस्याओं की पहचान करते हैं, उनको प्रस्तुत करते हैं तथा व्यावहारिक समाधान ढूँढते हैं। यह लोकतांत्रिक एवं सहकारी पद्धति है।

सशक्तिकरण तथा भागीदारी

भागीदारी प्रक्रिया से समाज को शक्तिशाली बनाया जा सकता है। भागीदारी प्रक्रिया को कर्तव्यनिष्ठा की भावना के द्वारा संभव बनाया जाता है। इस प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति या समूह को संबंधित व्यक्ति या समूह को प्रभावित करने वाली समस्या की वास्तविकता के बारे में जागरूक किया जाता है। कर्तव्यनिष्ठा की भावना लोगों को समस्या तथा संभावित समाधानों को समझने में सहायता करती है इस प्रक्रिया से उनमें नियंत्रण भावना जागृत होती है। सत्यनिष्ठा, संस्कृति, व्यक्तिगत मूल्य तथा आत्म पहचान शक्तिशाली बनाने की नींव हैं। शक्तिशाली बनाने का उद्देश्य समेकित शक्ति का प्रयोग करना है। शक्ति को अधिकतम प्रभावी बनाने के लिए इसे संगठित होना चाहिए। संपूर्ण समुदाय को आत्म विश्वास से भरे व्यक्तियों द्वारा शक्तिशाली बनाया जाना चाहिए जो वर्तमान स्थिति को चुनौती देने तथा अन्य समाधान तलाशने के लिए तत्पर रहते हैं।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) समुदायों को शक्तिशाली बनाने के बारे में आप क्या समझते है?

.....

.....

.....

.....

.....

2.3 रोकथाम शिक्षा

"सही समय पर किया गया कार्य अच्छा परिणाम देता है।" यह मादक द्रव्य दुरुपयोग के बारे में भी बिल्कुल सच है क्योंकि इसकी रोकथाम तो की जा सकती है इलाज नहीं। मादक द्रव्य के दुरुपयोग को नियंत्रित करने के लिए अनुभवों से ज्ञात हुआ है कि इसकी रोकथाम करना एक महत्वपूर्ण कार्य है। विश्व की आबादी का एक भाग अवास्तविक रूप से यह समझता है कि विश्व मादक द्रव्य रहित हो सकता है। लेकिन अनुभवों में हमे यह सिखा दिया है कि विश्व को मादक द्रव्य रहित बनाना असंभव है। फिर भी गंभीर प्रयत्नों से हम इसके दुरुपयोग को कुछ हद तक कम अवश्य कर सकते हैं।

मादक द्रव्य दुरुपयोग विश्वव्यापी हैं। इसलिए इसके रोकथाम की प्रक्रिया भी विश्वव्यापी होनी चाहिए जो प्रत्येक देश, समाज, परिवार तथा व्यवसाय तक पहुँचे। यह प्रक्रिया सबको जागरूक बनाने वाली हो तथा अवैध मादक द्रव्य एवं इसके दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष में सभी भागीदारों को प्रोत्साहित करती हो। रोकथाम में ऐसी शिक्षा शामिल हो जो

इसके दुरुपयोग को रोकती हो तथा उपभोग करने वालों को इसका प्रयोग छोड़ने के लिए सहमत कराती हो।

शैक्षिक कार्यक्रम मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध समग्र संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मादक द्रव्य का प्रयोग करने वालों के लिए उचित शिक्षा सफल मध्यस्थता एक उपचार का रास्ता प्रदान करती है। यह शिक्षा उपयोगकर्ता को इसके साथ जुड़े जोखिमों के बारे में जागरूक बनाकर तथा प्रयोग छोड़ने का फैसला करने में सहायता प्रदान करती है। शिक्षा अभिभावकों और शिक्षकों को समस्या को समझने और किसी स्थिति विशेष को संभालने के सही उपाय को समझने में भी सहायता प्रदान करती है।

रोकथाम कार्यक्रम युवाओं को ऐसे स्वस्थ व्यवहार विकसित करने के लिए शिक्षा का आधार बनाते हैं जिसमें मादक द्रव्य न लेना शामिल है तथा उनमें जिम्मेदारी की भावना भी जागृत करते हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग शिक्षा पूरी तरह समाज तथा निजी जीवन में धर्म या धर्मनिरपेक्ष रूप से स्कूल पाठ्यक्रम की तरह सत्यनिष्ठा वाली होनी चाहिए। इसमें मादक द्रव्य दुरुपयोग के विनाशकारी प्रभावों पर श्रेष्ठ पढ़ाई, स्वास्थ्य और समग्र व्यक्तित्व विकास को प्रोत्साहित करने पर बल दिया जाना चाहिए।

रोकथाम शिक्षा कार्यक्रम के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य होने चाहिए:

- अच्छे व्यक्तिगत स्वास्थ्य को बनाए रखना तथा उसका महत्व समझना।
- मादक द्रव्य दुरुपयोग को प्रतिबंधित करने वाले कानून और नियमों का पालन करना।
- मादक द्रव्य दुरुपयोग के लिए भारी समकक्ष दबावों का प्रतिरोध करना।
- मादक द्रव्यों से दूर रहने वाले छात्रों की गतिविधियों को बढ़ावा देना तथा छात्रों को रुचिकर कार्यक्रमों के लिए अच्छे अवसर प्रदान करना; और
- ऐसे धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करना जो मादक द्रव्य रहित जीवन शैली को मज़बूत बनाते हों।

2.4 रोकथाम की नीतियाँ

मादक द्रव्य दुरुपयोग रोकथाम की आवश्यकता के बारे में सभी जानते हैं। यह जानना महत्वपूर्ण है कि कोई व्यक्ति इस महत्वपूर्ण कार्य को कैसे करें। मादक द्रव्य व्यसन करने के अनेक कारण हैं। रोकथाम का प्रभावी ढंग से संचालन हो तथा यह उन क्षेत्रों में सकारात्मक परिणाम देने वाला होना चाहिए जो व्यक्तियों को स्वस्थ जीवनयापन में सहायता प्रदान करते हों। इस प्रकार हम निम्नलिखित नीतियाँ तैयार कर सकते हैं।

- व्यक्तिपरक नीतियाँ
- परिवार को शिक्षित करने वाली नीतियाँ
- स्कूल आधारित कार्यक्रमों के द्वारा रोकथाम
- जन संचार माध्यम से रोकथाम
- कानून को मजबूत बनाने के द्वारा रोकथाम

व्यक्तिपरक नीतियाँ

यह सबसे अधिक प्रचलित साधन हैं। इसका उद्देश्य व्यक्ति में सही धारणाओं, ज्ञान और नैतिक गुणों का विकास करना है। सही ज्ञान तथा मादक द्रव्य एवं व्यक्ति पर उनके प्रभावों की सही सूचना उनके दुरुपयोग की संभावना को कम करेगी। इस नीति के अंतर्गत निम्नलिखित तथ्य होने चाहिए। शराब और अन्य मादक द्रव्य के बारे में ऐसी वास्तविक सूचना प्रदान करनी चाहिए जो युवाओं की भावनात्मक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाली हो। यह उनको यह समझाने वाली होनी चाहिए कि व्यसन का शिकार कोई भी हो सकता है। कार्यक्रम में अनुकूलन कुशलताओं को सिखाने वाले तथा व्यक्ति के असामाजिक व्यवहार को बताने वाले तत्व होने चाहिए।

परिवार को शिक्षित करने वाली नीतियाँ

परिवार में अभिभावक, भाई, बहन तथा घनिष्ठ संबंधी शामिल हैं। हम पहले ही बता चुके हैं कि यह व्यसन परिवार का रोग है। मादक द्रव्य मुक्त समाज के निर्माण में परिवार महत्वपूर्ण एजेंट है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग के संघर्ष में प्रभावशाली परिणाम के लिए इस नीति में निम्नलिखित तथ्य शामिल करने चाहिए:

- अभिभावकों को शराब, सिगरेट आदि मादक द्रव्यों के बारे में सही सूचना दी जानी चाहिए।
- अभिभावकों को स्वस्थ पारिवारिक संबंध स्थापित करने के लिए निपुणताओं का विकास करने में सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
- उदाहरण देकर, रचनात्मक गतिविधियों में बच्चे की सहायता कर तथा किसी गंभीर दबाव का प्रतिरोध कर मादक द्रव्य रोकथाम नीतियों को घर में लागू करने में अभिभावकों की सहायता करना।
- परिवार में बड़ों द्वारा शराब या धूम्रपान के प्रयोग के संबंध में स्पष्ट नियम बनाए जाने चाहिए।

स्कूल आधारित कार्यक्रमों के द्वारा रोकथाम

स्कूल बच्चों का दूसरा घर होता है। विशेष रूप से स्कूल आधारित कार्यक्रमों में अभिभावकों को शामिल करना चाहिए। ऐसे कार्यक्रमों के लिए कुछ महत्वपूर्ण तथ्य इस प्रकार हैं:

- शराब, तम्बाकू तथा अन्य मादक द्रव्य के प्रयोग के बारे में स्पष्ट नीतियाँ बनाना। छात्रों को स्पष्ट रूप से बता देना चाहिए कि इसका उल्लंघन करने पर उन्हें सख्त दण्ड दिया जाएगा।
- मादक द्रव्य रोकथाम शिक्षा देने के लिए एक पाठ्यक्रम तैयार करें। इसकी सामग्री स्पष्ट तथा समझने में सरल होनी चाहिए। ये लक्ष्य समूहों की आवश्यकता तथा रुचि के अनुरूप होने चाहिए।
- स्कूल एक छात्र सहायता कार्यक्रम भी तैयार कर सकते हैं। यह समस्याग्रस्त छात्रों को पहचानने तथा समस्या को दूर करने में उनकी सहायता करने के लिए होना चाहिए।



- अध्यापकों को कुशलता तथा ज्ञान प्रदान करना ताकि वे मादक द्रव्य दुरुपयोग शिक्षा को संभालने एवं पहले से समस्याग्रस्त छात्रों की सहायता करने में सक्षम हो सकें।
- अध्यापकों के शराब और मादक द्रव्य के प्रयोग से संबंधित दृष्टिकोण और विश्वास को समझने में सहायता प्रदान करना।

जन संचार माध्यम से रोकथाम

जन संचार माध्यमों में मुद्रित सामग्री जैसे समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनैट, फिल्में और लोक कलाएँ शामिल हैं। इनका युवाओं पर निश्चित प्रभाव पड़ता है। ये सकारात्मक/रचनात्मक तथा नकारात्मक, विनाशकारी हो सकते हैं। प्रचार में रेडियो, टेलीविजन, बोर्ड, पुस्तिकाएँ, पोस्टर, सार्वजनिक प्रदर्शन आदि शामिल हैं।

कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने के लिए इसमें निम्नलिखित को शामिल किया जाना चाहिए:

- संदेश को प्रेक्षित करने में सक्षम व्यक्ति विश्वसनीय, संदेश लक्ष्य समूहों को प्रभावित करने वाला तथा एकदम उपयुक्त होना चाहिए।
- इसमें जनता को योजना बनाने एवं लागू करने में दोनों स्तरों पर शामिल किया जाना चाहिए।
- यह लक्ष्य समूहों में सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य होना चाहिए।

कानून को मजबूत बनाने के द्वारा रोकथाम

सभी देशों और सरकारों ने मादक द्रव्य दुरुपयोग संबंधी कानून बनाए हैं। जनता की उदासीनता या कानून लागू करने वाले क्षेत्र की अकुशलता के कारण मादक द्रव्य दुरुपयोग में वृद्धि होती जा रही है। इस संदर्भ में कुछ संभावित कार्रवाई निम्नलिखित हैं:

- शराब पर बिक्री दर में वृद्धि करना।
- शराब पीने की न्यूनतम आयु लागू करना।

- शराब की दुकान खोलने को हतोत्साहित करना।
- शराब और तम्बाकू के विज्ञापनों पर रोक लगाना।
- शराब उद्योगों द्वारा प्रायोजित खेलों और सामाजिक कार्यक्रमों को रोकना।

2.5 व्यसन की रोकथाम में सामुदायिक प्रतिक्रिया

मादक द्रव्य दुरुपयोग एक सामाजिक समस्या भी है। इसके प्रति सामुदायिक प्रतिक्रियाएँ अनेक प्रकार की हैं। इसके बारे में व्यापक चर्चा खंड 2 की इकाई 3 में की जा चुकी है। रोकथाम प्रयत्नों में सामुदायिक प्रतिक्रिया मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या के प्रति उनके दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। रोकथाम नीतियों में समाज में विद्यमान समस्या के प्रति उनके दृष्टिकोण पर विचार किया जाना चाहिए।

मादक द्रव्य नीति बनाने एवं कार्यक्रम लागू करने के लिए समर्थन एवं सहायता के लिए समुदाय के पास जाना आवश्यक है। रोकथाम के किसी भी प्रयत्न के पीछे समुदाय को शामिल करने के लिए निम्नलिखित कार्य करने की आवश्यकता है:

- बैठकों, प्रचार साधनों तथा शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से समस्या के बारे में समुदाय/समाज की जानकारी में वृद्धि करना।
- नीति बनाने के लिए जनता का समर्थन लेना तथा रोकथाम और कार्यान्वयन के लक्ष्यों पर सहमति का विकास करना।
- मादक द्रव्य समस्या के प्रभावों और उसकी गहराई के बारे में लोगों को शिक्षित करना।
- स्थानीय विशेषज्ञों जैसे स्थानीय चिकित्सकों के अनुभव जानने के लिए आमंत्रित करना।
- कार्यक्रम के लिए समर्थन प्राप्त करने हेतु सामुदायिक समूहों के संसाधनों तथा स्थानीय व्यावसायियों को सक्रिय करना।

रोकथाम और उपचार में समुदाय को शामिल करना

आरंभ में व्यसन किसी एक व्यक्ति की समस्या लगती है। धीरे-धीरे इसका विस्तार होता है और यह पूरे समुदाय की समस्या बन जाती है। इस व्यसन से समाज में हिंसा तथा असुरक्षा की भावना फैलती है। यह छोटी-मोटी चोरी, अपराध तथा बहुत बार डकैती को भी बढ़ावा देती है। जब समाज शांति और असुरक्षा से रहना चाहता है तो इस व्यसन की समस्या से निपटने के लिए समूह के रूप में शामिल हो जाता है। समाज के सभी अंगों को मादक द्रव्य मुक्त वातावरण बनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इनमें चिकित्सक, प्राथमिक चिकित्सा कर्मचारी, अध्यापक, पुलिस, धार्मिक गुरु तथा पंचायत के नेता शामिल होने चाहिए।

सामुदायिक सदस्यों को शामिल करने के कुछ निश्चित लाभ होते हैं, जैसे:

- अपने-अपने अनुभव बाँटने के लिए सामान्य व्यक्ति तथा विशेषज्ञ एक साथ मिलकर कार्य करते हैं।

- सामुदायिक नेताओं को व्यसन समस्या की पूरी जानकारी मिल जाती है।
- समाज में घनिष्ठता बढ़ती है।
- सामुदायिक सदस्य व्यसनियों के ठीक होने की प्रक्रिया में उन्हें पूरा सहारा प्रदान करने में सक्षम होते हैं।
- इससे ठीक हो रहे व्यसनी के सामाजिक संबंध तथा सामाजिक जीवन पुनः स्थापित हो जाते हैं।

यद्यपि मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम तथा उपचार में सामुदायिक सहमति अनिवार्य तथा सहायक हैं तो भी कुछ समस्याओं पर नियंत्रण पाना अनिवार्य है:

- कुछ सभ्यताओं/जातियों में विवाह और त्यौहारों पर शराब तथा अन्य कोई मादक द्रव्य को लेना सामाजिक रूप से स्वीकृत परंपरा हो सकती है। इसलिए वहाँ मादक द्रव्य के प्रयोग को समस्या नहीं माना जाता।
- शराब तथा गांजा उत्पादन जैसे मादक द्रव्य कुछ गाँवों में जीवनयापन का साधन हो सकते हैं। हो सकता है ऐसे व्यक्ति समर्थन न करें अपितु इसका तीव्र विरोध करें।
- कुछ जातियाँ अज्ञानता के कारण इन व्यसनियों को अपराधी समझ सकती हैं। इसलिए वे इनकी कोई सहायता नहीं करते।
- यदि मादक द्रव्य रोकथाम या उपचार कार्यक्रम के आयोजक स्वयं मादक द्रव्य का प्रयोग करने वाले हों तो इस आंदोलन की विश्वसनीयता समाप्त हो जाएगी।
- आयोजनकर्ताओं को दीर्घकालीन योजनाएँ बनाने तथा दृढ़ संकल्प बनाए रखने की आवश्यकता है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) रोकथाम की कार्यनीतियाँ क्यों महत्वपूर्ण हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2.6 उपचार के लिए व्यसनी तथा परिवार को प्रेरित करना

प्रेरित करने का अर्थ है कि किसी व्यक्ति के कार्य व्यवहार को बदलने के लिए प्रभावित करना और उपचार में इसका अर्थ है उसके विकृत व्यवहार को बदलना। व्यसनकर्ता के उपचार में प्रेरणा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अन्य रोगों से भिन्न व्यसनी तथा उसका परिवार अपने इंकार करने (छुपाने) के लक्षणों के कारण प्रायः उपचार नहीं कराते। व्यसन के बारे में पर्याप्त जानकारी न होने के कारण भी उपचार कराने से इंकार किया जा सकता है। व्यसनी को प्रेरित करने में शामिल हैं:

- मादक द्रव्य छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करना,
- व्यक्ति की जीवन शैली बदलने की इच्छा जागृत करना,
- उपचार कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लेने की अनिवार्यता का अनुभव करना, तथा
- ठीक होने के लिए समायोजन करने की इच्छा व्यक्त करना।

प्रायः कोई भी व्यसनी अपने आप तब तक उपचार कराने नहीं आता जब तक परिस्थितियाँ उसे मज़बूर न कर दें। यह मज़बूरी संबंधों या जानलेवा रोग का डर होने, कार्य छूटने, पुलिस केस या तलाक की धमकी अथवा तलाक के रूप में हो सकती है। इन परिस्थितियों के बावजूद व्यसनी परामर्शक के पास अस्थायी लाभ के लिए ही आता है। व्यक्ति यह स्वीकार नहीं करता कि उसकी समस्या मादक द्रव्य है। यह अपने रोग, किसी विशेष विषय पर बातें करेगा या फिर इस बात को छिपाएगा कि उसकी पत्नी ने उसे छोड़ दिया है।

प्रेरणा का केन्द्र बिन्दु व्यक्ति को यह अनुभव कराना है कि उसकी मुख्य समस्या मादक द्रव्य है तथा अन्य समस्याएँ उसके मादक द्रव्य लेने का परिणाम है। व्यसनी उपचार के लिए बहुत कम प्रेरित होता है। उसे मादक द्रव्य छोड़ने का डर तथा उपचार के स्वरूप के बारे में चिंता होती है। किसी ग्राहक को सफलतापूर्वक प्रेरित करने के लिए निम्नलिखित बातें उपयोगी होंगी:

- व्यसनी को एक व्यक्ति के रूप में स्वीकार करें न कि व्यसनी या शराबी के रूप में। इससे उसमें आत्मसम्मान तथा परामर्शक के प्रति विश्वास जागृत होगा।
- व्यक्ति के साथ प्रश्न और तर्क करने की अपेक्षा उसके साथ सहानुभूति एवं समझदारी के साथ व्यवहार करें जिससे उपचार प्रक्रिया में उसका विश्वास बन सकेगा। उसे उपदेश या डाँट-फटकार न लगाएँ।
- निर्णायक न बने। व्यक्ति एवं उसके कार्यों को अच्छा या बुरा साबित न करें।
- उसके साथ संबंध स्थापित करें तथा ग्राहक द्वारा सहयोग करने पर भी संबंध बनाए रखें।
- ग्राहक के कार्यों/मामलों के बारे में गोपनीयता बनाए रखें।

इससे ग्राहक और परामर्शक के बीच विश्वास और दृढ़ बनता है।

व्यसनी को उपचार के लिए जाने पर भी परिवार के सदस्य उपचार में दिल से भाग नहीं लेते। जैसा कि हमने पहले चर्चा की है कि उपचार की जितनी आवश्यकता व्यसनी को है उतनी ही आवश्यकता उसके परिवार को भी है। परिवार वाले चाहते हैं कि व्यसनी में परिवर्तन आए लेकिन वे इस पारिवारिक रोग में भागीदारी को स्वीकार करना नहीं चाहते। परिवार के सदस्यों को प्रेरित करने का अर्थ है:

- भ्रम के आवरण को हटाने में उनकी सहायता करना,
- परिवार में रोग को स्वीकार करने के लिए उनकी आंतरिक शक्ति को बढ़ाना, और
- परिवार के सदस्यों की भावनाओं को जानना तथा उनको समझाना।

व्यसनी का परिवार स्वयं के बनाए गए भ्रमजाल में ही घिरा रहता है। जिसका वर्णन खंड 2, इकाई 3 में किया गया है। परिवार के सदस्यों को सच्चाई से इंकार करने की आदत होती है। उन्होंने परिवार में व्यसन समस्या के साथ समायोजन बैठाने के लिए कई सुरक्षित बहाने भी बनाए हुए होते हैं। यह विश्वास कि परिवार में व्यसनी के व्यवहार को छोड़कर सब कुछ ठीक है उन्हें उपचार प्रक्रिया में दिल से शामिल होने से रोकता है।

पारिवारिक रोग स्वीकार करने में परिवार के सदस्यों को अपनी गलती स्वीकार करने की आवश्यकता है। परिवार के सदस्यों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है कि वे व्यसनी की यह आदत छुड़ाने में सहायता करने के लिए अपनी भूमिका निभाएँ।

परिवार में एक सदस्य द्वारा व्यसन करने पर भी सदस्यों की भावनाओं को ठेस लगती है। अधिकांशतः वे इन भावनाओं को अभिव्यक्त नहीं करते और यदि वे अभिव्यक्त करते भी हैं तो क्रोध तथा अनुचित ढंग से करते हैं।

भावनाओं को सही रूप से स्वीकार करने तथा परिवार के सदस्यों द्वारा इसकी उचित अभिव्यक्ति व्यसनी द्वारा परिवार के सदस्यों को अपनी भावना के बारे में बताने का अधार बनती है।

प्रतिरोध का सामना करना

उपचार और ठीक होना परिवर्तन की प्रक्रिया है। परिवर्तन का प्रतिरोध होना स्वाभाविक है। परिवर्तन का आशय है अनजान स्थिति का सामना करना। स्वस्थ व्यक्ति परिवर्तन का सामना आसानी से कर लेते हैं। व्यसनी तथा उसके साथी परिवर्तन को डरावना मानते हैं। व्यसन के कारण परिवार की आत्म शक्ति को क्षति पहुँचती है। उपचार और ठीक होने के लिए किसी की भावना को ईमानदारी से स्वीकार करने तथा उन्हें दूसरे के साथ बाँटने की आवश्यकता होती है। व्यसनशील की सोच के नियमों के अनुसार कुछ भी महसूस करो, किसी का विश्वास नहीं करो तथा किसी से बात नहीं करो अर्थात् व्यसनकर्ता अपनी भावनाओं को दबा लेते हैं, किसी का विश्वास नहीं करते तथा किसी से बात नहीं करते। ठीक होने की प्रक्रिया में ऐसे विनाशकारी व्यवहार को व्यसनी द्वारा छोड़ना आवश्यक है। परिवर्तन के प्रतिरोध से निपटने के कुछ मार्गदर्शन सहायक हो सकते हैं, जो इस प्रकार हैं:

- परिवार की व्यसन के बारे में वास्तविक आशाओं तथा उसके अपने प्रयत्नों को विकसित करने में सहायता करना। परिवार के प्रत्येक सदस्य के साथ तालमेल बैठाना ताकि ठीक होने की प्रक्रिया में उनकी सहायता कर सके।

- परिवार के उन गुप्त संपर्कों को उजागर करना जिसके सहारे व्यसनी दूसरों के साथ चालाकी कर अपने व्यसन को बनाए रखता है।
- परिवार के कुछ सदस्यों की अधिक गतिविधियों को जानना तथा उन्हें व्यसन के बारे में शिक्षित कर उन्हें कम करना।
- परिवार के सदस्यों को ऐसे सहयोगी दलों में शामिल करना जो ऐसे संकटों को झेल चुके हैं। ये दल आदर्श उदाहरण की भूमिका निभा सकते हैं।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) उपचार के लिए सेवाग्राही (व्यसनी) तथा व्यसनी के परिवार को प्रेरित करने के लिए कौन-से पक्ष महत्वपूर्ण हैं?

.....

.....

.....

.....

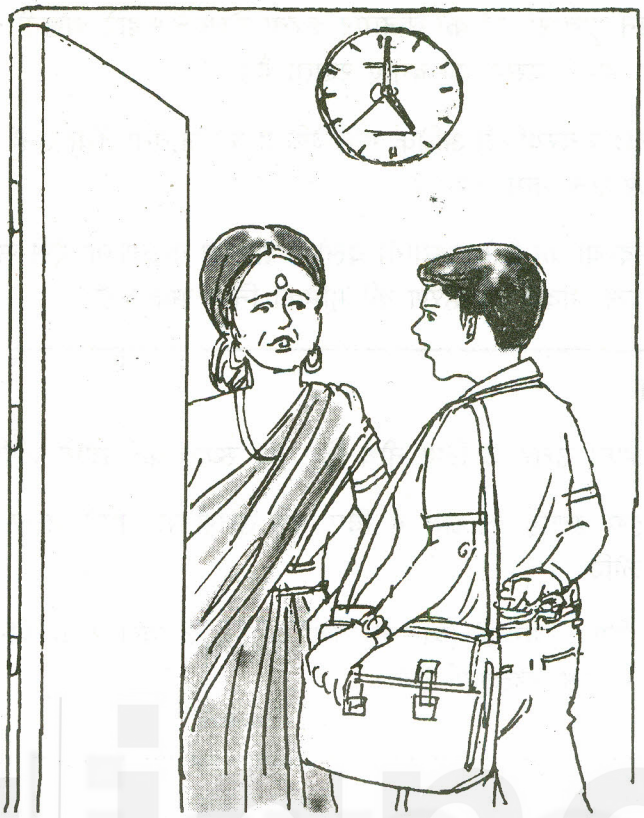
.....

2.7 व्यसनी की पहचान करना

किसी व्यसनी की पहचान करना आसान है। आरंभिक अवस्था में व्यसनी को पहचानना आसान नहीं है। जब शराब का व्यसन हो तो यह और भी कठिन है। व्यसनी परिवार के सदस्यों से अपनी आदत छिपाने में समर्थ होता है। उसके व्यवहार और उपस्थिति-दर्शन कुछ स्पष्ट संकेत देखने वाले या ध्यान देने वाले होते हैं। ये अधिकांश छात्रों या युवाओं पर लागू होते हैं।

घर में:

- व्यसनी घर विलम्ब से आता है।
- उसके नए मित्र बनते हैं।
- वह अपने नए मित्रों के बारे में बताना नहीं चाहता।
- शराब या मादक द्रव्य का प्रयोग न करने वाले पुराने मित्र उसको बहिष्कृत कर देते हैं।
- वह प्रायः घर पर खाना नहीं खाता।
- वह प्रायः कमरे में बंद रहता है तथा एकांत में रहता है।



- परिवार के किसी सदस्य से बात नहीं करता।
- वह देर से सोता है तथा देर से उठता है।
- यदि मादक द्रव्य का इंजेक्शन लेता है तो स्नानघर में अत्यधिक समय लगाता है।
- उसके कमरे में सिरींज तथा मादक द्रव्य से संबंधित अन्य उपकरण मिल सकते हैं।
- उसकी धन की माँग बढ़ जाती है।
- घर से कीमती सामान जैसे टेपरिकार्डर, पंखे, घड़ियाँ तथा अन्य सदस्यों के आभूषण एवं वस्त्र आदि गायब (चोरी) होने लगते हैं।
- धार्मिक कार्यों, सामाजिक आयोजनों आदि में जाने से इंकार कर देता है।

स्कूल में:

- स्कूल में बहुत कम जाता है।
- शिक्षा के स्तर में एकदम गिरावट आ जाती है।
- स्कूल के समय छुट्टी पर रहता है।
- स्कूल में झगड़ा करने लगता है।
- स्कूल जाने से मना करता है या स्कूल के अधिकारियों अथवा अध्यापकों में दोष निकालने लगता है।

शारीरिक परिवर्तन

व्यसन से व्यसनी के व्यक्तित्व में परिवर्तन आ जाता है। व्यसनी के शरीर में परिवर्तन मुख्य रूप से देखा जाता है। अपने स्वरूप, सफाई के प्रति लापरवाही, गंदी उंगलियाँ,

सिगरेट के दाग, सूखी त्वचा, हाथ के अगले हिस्सों में सुई के निशान, आवाज में लड़खड़ाहट, पसीना, भूख में कमी, थकान, बेचैनी, चक्कर आना, झुकी हुई पलकें, भावहीन चेहरा तथा आँखों के नीचे काले घेरे (जो शराबी में स्पष्ट देखे जा सकते हैं), आँखे लाल होना, आँखों की लाली छिपाने के लिए काले रंग का चश्मा लगाना, अस्थिर चाल, वजन में अचानक कमी, बाँहों पर इंजेक्शन के निशान छिपाने के लिए लम्बी आस्तीन की कमीज पहनना, उलट लक्षण जैसे उल्टी आना, पेचिश, माँस-पेशियों में दर्द, नींद न आना आदि परिवर्तन व्यसनी से आसानी से देखे जा सकते हैं।

2.8 स्कूल आधारित कार्यक्रमों के द्वारा रोकथाम

व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करने में स्कूलों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की रोकथाम की शुरुआत जीवन के आरंभ में ही करनी चाहिए। यह परिवारों में घटित होता है। रोकथाम शिक्षा का दूसरा कदम स्कूलों में उठाया जाता है।

स्कूलों में मादक द्रव्य रोकथाम के प्रभावशाली कार्यक्रम में शिक्षा के व्यापक उद्देश्य निहित हैं। इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य हैं:

उद्देश्य 1: व्यक्तिगत स्वास्थ्य को बढ़िया बनाना तथा उसका महत्व समझाना

स्वास्थ्य को मादक द्रव्य कैसे प्रभावित करते हैं इसके बारे में समझना। एक प्रभावशाली मादक द्रव्य रोकथाम शिक्षा कार्यक्रम स्वस्थ शरीर और स्वस्थ दिमाग के महत्व की शिक्षा प्रदान करता है। यह शरीर की कार्य प्रणाली और अच्छे स्वास्थ्य में व्यक्ति की आदतों की योगदान तथा मादक द्रव्य का शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

प्राथमिक स्तर पर बच्चों को अपने शरीर का ध्यान रखने के बारे में सिखाया जाता है। आदतों, औषधियों तथा विषों के बारे में जानकारी उनमें मादक द्रव्य के ज्ञान के बारे में नींव डाल देती है। बड़े होकर मादक द्रव्य की समस्या के बारे में जान जाते हैं तथा वे उन मादक द्रव्यों के बारे में अध्ययन करते हैं जिनके संपर्क में आने की अधिक संभावना होती है। बच्चे वर्तमान में जीने वाले होते हैं और मादक द्रव्य के दीर्घकालीन प्रभावों को आसानी से नहीं समझते। इस कारण उन्हें मादक द्रव्य दुरुपयोग के तात्कालिक प्रभावों के बारे में बताया जाना चाहिए जैसे उनके स्वरूप, सजगता तथा समन्वय पर पड़ने वाला प्रभाव।

उद्देश्य 2: मादक द्रव्य दुरुपयोग निषेध कानूनों को मानना

दूसरा उद्देश्य बच्चों को समाज के वास्तविक मूल्य और समाज तथा व्यक्ति के संरक्षण साधनों के रूप में कानूनों और नियमों को स्वीकार करना सिखलाता है। यह मादक द्रव्य संबंधी कारणों के बारे में विशेष शिक्षा प्रदान करता है। छात्र जब आरंभिक स्तर पर नियमों और उनके महत्व के बारे में जान जाते हैं तो बड़े होकर वे स्कूल की मादक द्रव्य संहिता तथा उन्हें प्रतिबंधित करने वाले कानूनों में भी जान जाते हैं। इसमें ऐसे विषय शामिल किए जा सकते हैं। जैसे कानून क्या है, यदि समाज में कानून न हो तो क्या हो जाएगा, मादक द्रव्य दुरुपयोग के कानूनी व सामाजिक परिणाम, शराब पीकर या मादक द्रव्य लेकर वाहन चलाने का दंड तथा मादक द्रव्य एवं अपराधों में संबंध आदि।

उद्देश्य 3: मादक द्रव्य के दुरुपयोग को पहचानना और दबाव का प्रतिरोध करना

मादक द्रव्य की पहचान और अजमाने में बच्चों को प्रोत्साहित करने के दबाव को रोकने में सामाजिक प्रभाव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग करने के लिए दबाव आंतरिक होता है जैसे बच्चा चाहता है कि उसे किसी समूह में शामिल किया जाए या वह स्वतंत्र/आत्म निर्भर दर्शाना चाहता है और बाहरी दबावों में हैः मित्रों, बड़े बच्चों तथा वयस्कों और प्रचार संदेशों के विचार तथा उदाहरण आदि।

छात्रों को इन दबावों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। उन्हें मादक द्रव्य का प्रयोग करने वाले इन संदेशों का प्रतिरोध करना सिखाना चाहिए तथा इंकार करने का अभ्यास होना चाहिए। शिक्षा कार्यक्रम में व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों, सही निर्णय करने तथा मादक द्रव्य दुरुपयोग करने वाले दबावों का प्रतिरोध करने की तकनीकों पर बल दिया जाना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए विषयों के नमूने हैंः प्रसिद्ध संस्कृति का प्रभाव, छात्रों पर शक्तिशाली दबाव, सही निर्णय करने के तरीके, शक्तिशाली दबाव का प्रतिरोध करने के तरीके, तथा ऐसी अन्य परिस्थितियाँ जिसमें छात्रों पर मादक द्रव्यों का प्रयोग करने के लिए दबाव डाला जाता है।

उद्देश्य 4 : छात्र जीवन में सकारात्मक तथा मादक द्रव्य रहित वातावरण को मज़बूत बनाने वाली गतिविधियों को बढ़ावा देना

स्कूली गतिविधियों का उद्देश्य छात्रों को मादक द्रव्य रहित वातावरण में खुशी के अवसर प्रदान करना होना चाहिए। इनका उद्देश्य मादक द्रव्य का प्रयोग करने के लिए पड़ने वाले शक्तिशाली दबाव का शक्तिशाली प्रतिरोध करने में योगदान करने वाला होना चाहिए। स्कूल की इन गतिविधियों में मादक द्रव्य की रोकथाम से संबंधित कार्यों का बड़े छात्रों से नेतृत्व करा कर सकारात्मक उदाहरण भी प्रस्तुत करने चाहिए।

उपर्युक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कुछ गतिविधियों के सुझाव हैंः नेतृत्व के अवसर छात्रों को प्रदान करें। मुख्य नेताओं को नेतृत्व का प्रशिक्षण प्रदान करें। मादक द्रव्य रहित वातावरण को बढ़ावा देकर शिक्षा संबंधी गतिविधियों जैसे चित्रकारी, नाटक लिखना आदि में वृद्धि करें। मादक द्रव्य दुरुपयोग से न जुड़े आदर्श भूमिका वाले उदाहरणों को बढ़ावा दें। मादक द्रव्य दुरुपयोग, इसका अवैध व्यापार जैसे अपराधों आदि के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए स्कूल में अध्ययन समूह बनाएँ। स्कूल में खेल सुविधाएँ प्रदान करें तथा स्काउट एवं एन.सी.सी. जैसे आंदोलनों को बढ़ावा दें।

मार्गदर्शन सेवाएँ

मार्गदर्शन सेवाओं का अर्थ है किसी व्यक्ति को राय देने के लिए किसी निपुण या विशेषज्ञ से मिलने के लिए मार्गदर्शन देना। विशेषतः किसी रोगी को मनोचिकित्सक विशेषज्ञ के पास भेजना। अधिकांश व्यक्ति अपने जीवन में या परिवार में व्यसन की समस्या के बारे में जान जाते हैं। कुछ के पास व्यसनी को उपचार के लिए प्रेरित करने की कुशलता एवं ज्ञान भी होता है। जब किसी के पास समस्या को प्रभावी ढंग से संभालने की योग्यता सीमित हो तो अच्छा रहता है कि व्यक्ति को अधिक योग्य व्यक्ति या संस्था के पास भेजा जाए।

मार्गदर्शन तीन प्रकार के हो सकते हैंः (i) स्वयं (ii) अभिभावकों, मित्रों या स्वैच्छिक संगठनों द्वारा, (iii) अनिवार्य मार्गदर्शन

स्वयं मार्गदर्शन

स्वयं के मार्गदर्शन का मुख्य स्रोत ठीक होने वाले किसी व्यसनी, मित्र या स्वैच्छिक संगठन से प्राप्त हो सकता है। इसका अर्थ है कि व्यसनी उपचार या अन्य किसी सहायता के लिए स्वयं आता है। हो सकता है कि उस व्यक्ति में तीव्र प्रेरणा हो।

अभिभावकों, मित्रों या स्वैच्छिक संगठनों द्वारा मार्गदर्शन

यह मार्गदर्शन भी स्वेच्छा प्रकार का है। कोई व्यक्ति व्यसनी को उपचार के लिए उपलब्ध अनेक विकल्पों में से किसी एक विकल्प के लिए मार्गदर्शन देता है। उदाहरण के लिए मार्गदर्शक किसी परामर्शक को किसी संदिग्ध, शराब या मादक द्रव्य के दुरुपयोगकर्ता के बारे में बता सकता है। वह व्यसनी का नाम बता सकता है लेकिन अपनी पहचान गुप्त रखना चाहता है। इस प्रकार वह परामर्शक को उसके संपर्क में ला देता है। मार्गदर्शक अभिभावक, जीवन साथी या उससे संबंधित कोई व्यक्ति हो सकता है। यह भी हो सकता है कि वह अपना नाम बताने की अनुमति प्रदान कर दे।

अनिवार्य मार्गदर्शन

यह मार्गदर्शन अनिवार्य माना जाता है। इसमें मार्गदर्शक वास्तव में व्यसनी को परामर्शक या उपचार केन्द्र में लाता है। यह किसी शिक्षण संस्थान में हो सकता है जहाँ पर कोई छात्र शराब या अन्य मादक द्रव्य का प्रयोग करने वाले के रूप में पहचान लिया जाता है। यदि ऐसा छात्र स्कूल या कालेज में है तो प्रिंसिपल या अन्य अधिकारी उसे उपचार के लिए या किसी परामर्शक के पास जाने का आदेश देता है। यदि कोई व्यक्ति नशाखोरी के जुर्म में गिरफ्तार हो जाता है तो न्यायधीश उसे उपचार के लिए अनिवार्य रूप से भेज सकता है।

अन्य संस्थाओं के साथ नेटवर्क

विश्व को मादक द्रव्य मुक्त करने का कार्य किसी एक व्यक्ति, संस्था या देश पर नहीं छोड़ा जा सकता। यह एक सामूहिक प्रयास होना चाहिए। एकल प्रयास का परिणाम सीमित हो सकता है। उसके संसाधनों एवं अनुभवों की सीमा हो सकती है।

एक जाल खिड़की की छड़ों से भिन्न होता है। यद्यपि छड़ें मज़बूत होती हैं लेकिन वे केवल दो स्थानों से जुड़ी होती हैं। जाल अन्य सूत्रों से अनेक स्थानों से जुड़ा होता है, चाहे वह छड़ों जितना मज़बूत न हो। जाल को मज़बूती प्रदान करता है, उसका अनेक स्थानों से दृढ़तापूर्वक जुड़ा होना। इस प्रकार नेटवर्क विभिन्न समूहों के साथ मिलकर संभव है।

1) रोकथाम के प्रत्येक क्षेत्र में स्थानीय कानून लागू करने वाली एजेंसियों को शामिल करें। पुलिस तथा अदालतें अच्छी तरह स्थापित संस्थाएँ हैं, जिनका मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम करने वाली अन्य एजेंसियों के साथ परस्पर प्रगाढ़ संबंध है।

2) मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम में छात्र संगठनों को शामिल किया जाए। उनमें उत्साह और मानव शक्ति होती है। इसके लिए आवश्यक है कि किसी अन्य एजेंसी द्वारा उनको सही कार्य पर लगा दिया जाए।

3) रोकथाम की गतिविधियों में सांस्कृतिक संगठनों को भी शामिल किया जाए। सांस्कृतिक गतिविधियाँ जोड़ने वाली और शिक्षाप्रद साधन के रूप में जानी जाती हैं।

4) समाज को मादक द्रव्य मुक्त करने के लिए धार्मिक संगठनों की सहायता ली जाए। सभी धर्म शराब और दूसरे मादक द्रव्यों की भर्त्सना करते हैं। इसके अतिरिक्त धर्म आत्म-नियंत्रण के लिए शक्तिशाली उपकरण हैं। अनेक स्वास्थ्य लाभ के कार्यक्रम धर्म पर आधारित होते हैं।

बोध प्रश्न IV

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) व्यसनी को पहचानने के क्या तरीके हैं?

.....

.....

.....

.....

2.9 सारांश

मादक द्रव्य व्यसन का इलाज नहीं किया जा सकता इसलिए इसकी रोकथाम करना श्रेष्ठ है। मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम के लिए शिक्षा मुख्य साधन है। रोकथाम के लिए शिक्षा आरंभिक अवस्था में घर से ही आरंभ होकर स्कूल और कालेज तक जारी रहनी चाहिए।

मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम के लिए समुदाय या समाज प्रभावशाली एजेंट हैं। समुदायों को ऐसा करने के लिए शक्तिशाली बनाना आवश्यक है। रोकथाम तथा उपचार के लिए समुदायों को शामिल करने के अनेक लाभ हैं। समाज को मादक द्रव्य मुक्त बनाने में इसके सदस्यों के लिए अधिक शिक्षा, अधिक भागीदारी तथा अधिक जिम्मेदारी अक्सर आ जाती है।

यदि व्यसनी तथा उसका परिवार उपचार को उपयोगी एवं ज़रूरी समझे तो इसका उपचार संभव है। परिवार एवं स्वयं व्यसनी को प्रेरित करने का मुख्य महत्व है। व्यसनी को घर में, स्कूल में तथा उसके शारीरिक हाव-भाव देखकर पहचाना जा सकता है।

मादक द्रव्य शिक्षा और उपचार सामूहिक प्रयत्न है। इसलिए अधिकतम परिणाम प्राप्त करने के लिए विभिन्न सामाजिक एवं सरकारी एजंसियों को मिलकर कार्य करना चाहिए।

2.10 शब्दावली

बेनाम (Anonymous) : नाम या अधिकारी का नाम ज्ञात न होना।

प्रतिक्रिया (Counteract) : उन्मूलन कार्य द्वारा प्रतिरोध करना।

विश्वसनीयता (Credibility) : समझाना, विश्वास के लायक, यदि कोई व्यक्ति स्वयं शराब लेता है और शराब के विरुद्ध उपदेश देता है तो उसकी कोई विश्वसनीयता नहीं होगी।

जन-माध्यम (Media) : जन संचार के मुख्य साधन, विशेषतः समाचार पत्र और टेलीविजन।

मादक द्रव्य संबंधी उपकरण (Paraphernalia equipment) : टीन फॉइल, मोमबत्ती, सुई और सिरींज जो व्यसनी द्वारा इंजेक्शन लगाने या सूँघने के लिए प्रयोग में लाई जाती हैं।

मुख्य नेता (Peer leaders) : हमउम्र समूह के नेता (उपलब्धियों या अन्य क्षमता के कारण)।

तालमेल (Rapport) : उपयोगी सौहार्द संबंध एवं संप्रेक्षण।

हकलाना (Slurred) : अस्पष्ट आवाज़

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

प्रीवेंटिंग एलकोहॉल प्रोबलम्स थ्रु स्टुडेंट्स एसिसटेंस प्रोग्राम (1984), यू. एस. डिपार्टमेंट ऑफ *हेल्थ एंड ह्यूमन सर्विस,* न्यूयार्क।

डब्ल्यू. एच. ओ./टी आई एस एस वर्कशॉप, *इंवोलवमेंट ऑफ यूथ इन हेल्थ प्रमोशन* (1996), टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल वर्क, मुंबई।

बी. के. महाजन एंड एम. सी. गुप्ता (1991), *टेक्स्ट बुक ऑफ प्रीवेंटिव एंड सोशल मेडिसन,* जेपी ब्रदर्स, नई दिल्ली।

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) सशक्तिकरण सहायता करने से भिन्न है। सहायता प्रक्रिया में प्रायः सहायक उत्तर देता है। सशक्तिकरण में सहायता ग्राहक को स्वयं उत्तर तलाशने में सहायता प्रदान करता है। जिसको समस्या होती है वह स्वयं समस्या के बारे में सहायक से अधिक जानता है। हो सकता है कि समस्याग्रस्त व्यक्ति समस्या को हर पहलू से न देख सकें। सशक्तिकरण का अर्थ है समस्या को व्यापक संदर्भ में देखने में सहायता करना तथा ग्राहक द्वारा स्वयं उपाय ढूँढने में सहारा देना। जब किसी व्यक्ति या समुदाय को शक्तिशाली बनाया जाता है तो सहायक की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। सभी शिक्षण प्रक्रिया का यही आदर्श उद्देश्य होता है।

बोध प्रश्न II

1) रोकथाम के लिए प्रयुक्त पद्धति बहुत महत्वपूर्ण है। मानव इतिहास के आरंभिक काल से ही मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम के प्रयत्न किए जाते रहे हैं। आज

तक किसी के द्वारा कोई पूरी तरह प्रामाणिक पद्धति की खोज नहीं की जा सकी है। रोकथाम की नीतियों में सभी गुण होने चाहिए जो एक सफल शिक्षण प्रक्रिया में पाए जाते हैं। वे व्यक्तिपरक, भागीदारीयुक्त एवं परिणाम दर्शाने वाली होनी चाहिए। रोकथाम की नीतियों में लक्ष्य समूहों के सांस्कृतिक एवं धार्मिक पहलुओं का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

बोध प्रश्न III

1) उपचार का अर्थ है परिवर्तन। उपचार के लिए व्यसनी या उसके परिवार को प्रेरति करते समय कुछ बातों का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है। उपचार के लिए आने वाले व्यक्ति का उपचार सम्मानपूर्वक किया जाए। उसकी बातें धैर्य एवं सहानुभूतिपूर्वक सुनी जाए। सहायक से मेलजोल बढ़ाना चाहिए तथा ग्राहक के बारे में एकत्रित सूचनाएँ गुप्त रखनी चाहिए। सहायक को निर्णायक नहीं होना चाहिए तथा ग्राहक को उपदेश नहीं देना चाहिए।

बोध प्रश्न IV

1) व्यसनी को पहचानने में निम्नलिखित संकेत एवं लक्षण सहायक हो सकते हैं:

रात को घर देर से आना, अधिक जेब खर्च की माँग, थका हुआ लगना, बेचैन लगना, चक्कर आना, कभी-कभी उल्टी करना, यादाश्त कम होना, अपने स्वरूप व सफाई के प्रति लापरवाह, अंगुलियों के सिरों पर दाग, बाहों और सांथलों पर सुई के निशान तथा स्कूल में प्रायः अनुपस्थित रहना आदि।

इकाई 3 रोकथाम और नियंत्रण में ग़ैर-सरकारी संगठनों, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 मादक द्रव्य दुरुपयोगः मध्यस्थता की आवश्यकता

3.3 मध्यस्थता की अवस्थाएँ

3.4 अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

3.5 राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

3.6 ग़ैर-सरकारी संगठनों की भूमिका

3.7 सारांश

3.8 शब्दावली

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

पिछली इकाइयों में हमने विभिन्न दृष्टिकोणों से मादक द्रव्य दुरुपयोग के बारे में चर्चा की है। इस इकाई का उद्देश्य आपको व्यसन के विरुद्ध संघर्ष में मध्यस्थता की आवश्यकता से अवगत कराना है। यह इकाई आपको संभावित मध्यस्थता की विभिन्न अवस्थाओं – रोकथाम, नियंत्रण, उपचार तथा पुनर्वास के बारे में भी बताती है। इस इकाई में यह भी बताया गया है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग एक अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, सामाजिक, पारिवारिक तथा व्यक्तिगत समस्या है और इस बुराई के विरुद्ध प्रभावी संघर्ष में अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय संस्थाओं तथा ग़ैर-सरकारी संगठनों की मध्यस्थता अनिवार्य है। संक्षिप्त रूप से कुछ संगठनों के बारे में भी जानने का अवसर दिया गया है। आशा है कि इस इकाई के अध्ययन के बाद आपको विभिन्न अवस्थाओं में मध्यस्थता की आवश्यकता तथा विभिन्न संगठनों द्वारा निभाई जा सकने वाली भूमिका की आवश्यकताओं की जानकारी होगी।

3.1 प्रस्तावना

मादक द्रव्य दुरुपयोग समस्या विश्वव्यापी हो रही है। कोई देश या समाज इससे प्रतिरक्षा का दावा नहीं कर सकता। संसार ने अनुभव कर लिया है कि जब तक एक सुनियोजित संघर्ष तथा प्रभावशाली मध्यस्थता नीतियाँ नहीं अपनाई जाएँगी यह बुराई पूरे संसार में फैलती जाएगी। हममें से अधिकांश ने यह अनुभव किया है तथा अनेक बार अनेक

व्यक्तियों ने सोचा भी है कि इसके लिए कुछ ठोस कार्य किया जाए तथा स्थिति को ऐसे ही नहीं चलने दिया जाए। लेकिन हममें से अनेक लोगों के पास प्रोत्साहन, दृढ़ विश्वास, संचालन करने का तरीका या इच्छा का अभाव होता है। क्योंकि यह विभिन्न स्वरूपों में विश्व समस्या है, अतः कोई एक इसके विरुद्ध संघर्ष नहीं कर सकता। अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है क्योंकि मादक द्रव्यों का अंतर्राष्ट्रीय अवैध व्यापार, आतंकवाद तथा विद्रोही गतिविधियों से संबंध है। जिसने विश्व शांति को खराब कर दिया है। फिर व्यसन अकथनीय स्वास्थ्य समस्याएँ विशेषतः एच.आई.वी. और हैपेटाइटस बी/सी की संभावना भी पैदा करता है।

राष्ट्रीय संस्थाओं को न केवल माँग में अपितु इसकी आपूर्ति को कम करने में भी अपनी भूमिका निभानी है। देश ऐसा प्रभावशाली तंत्र होना चाहिए जो अवैध शराब उत्पादन/निर्माण तथा मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार को रोक सके। लेकिन केवल सरकार, वह भी भारत जैसे विशाल देश में सब कुछ नहीं कर सकती। गैर-सरकारी संगठनों का यह अनिवार्य कर्त्तव्य है कि इस मादक द्रव्य के खतरे को समाप्त करने के प्रयास में वे सरकार की सहायता के लिए आगे आएँ।

3.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग : मध्यस्थता की आवश्यकता

लोग विभिन्न प्रकार के द्रव्यों का प्रयोग करते हैं। यहाँ तक कि स्कूल जाने वाले और गली में खेलने वाले बच्चे भी विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करते हैं। विश्व में शराब और अन्य मादक द्रव्यों पर अत्यधिक धन बर्बाद किया जाता है। व्यक्तियों पर अनेक प्रकार से इसका प्रभाव पड़ता है। व्यसनी का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है। उसका पैसा बर्बाद हो जाता है। उसका पारिवारिक जीवन संकट में पड़ जाता है। व्यसन के कारण औद्योगिक और सड़क दुर्घटनाएँ बढ़ जाती हैं क्योंकि उसका निर्णय गलत होता है। इससे व्यक्ति की निष्पादन क्षमता प्रभावित होती है। अतः मानवशक्ति की हानि होती है। संक्षेप में व्यक्ति का व्यक्तित्व समाप्त हो जाता है। व्यसनी धोखेबाज बन जाता है और कभी विश्वास करने लायक नहीं होता। चोरी करना, वस्तु गिरवी रखना, जुआ खेलना और झूठ बोलना व्यसनी के जीवन का अंग बन जाते हैं। वह आने वाली पीढ़ी के लिए गलत आदर्श प्रस्तुत करता है।

व्यसन समाज को भी अकथनीय क्षति पहुँचाता है। कई अपराधों के केन्द्र में व्यसन मुख्य कारण होता है और यह समाज की शांति को भंग करता है क्योंकि यह अनेक असामाजिक गतिविधियों का कारक बनता है। विभिन्न सामाजिक उपद्रवों का कारण भी यही होता है जो गली के झगड़े से लेकर गुटों के बीच युद्ध तक फैलाता है। कोई व्यक्ति समाज में शांति की आशा नहीं रख सकता, क्योंकि समाज गंभीर रूप से मादक द्रव्य के व्यसनकर्ताओं, अवैध संगठनों शराब के शहंशाहों से त्रस्त होता है। अंतर्राष्ट्रीय तथा सीमा पार अवैध मादक द्रव्यों के व्यापार, मादक द्रव्य के गिरोह तथा मादक द्रव्य माफिया ने राष्ट्रों को असहनीय क्षति पहुँचाई है। स्मगलिंग, आतंकवाद तथा विद्रोही गतिविधियों के तार अवैध मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार से जुड़े हुए हैं।

विकासशील देशों में व्यसन ने विकास और उत्पादकता में बहुत बाधा पहुँचाई है। यूरोकेयर के निदेशक डेरिक रुद्रफोर्ड ने अपनी पुस्तक *"ए लॉट ऑफ बॉटल"* में एक

ग्रामीण जैम्बियन का पत्र जो जैम्बियन डाक को लिखा गया है को उद्धृत किया है, "हमारे पास पानी, लाइट, स्कूल, नहाने की सुविधाएँ नहीं हैं। परंतु नगर पालिका हमारे लिए बीयर हॉल बनाने की बात कहती है। यदि हम बीयर पीएँगे तो नगरपालिका की आमदनी होगी ताकि एक दिन हमें पानी की पाइप मिल जाए। मुझे कितनी बीयर पीनी पड़ेगी कि एक दिन मेरे बच्चे को पीने का पानी मिल जाए।" गरीब देशों में व्यसन ने तबाही मचा रखी है। डेरिक रूद्रफोर्ड कहते हैं, "विकासशील देशों में लगभग 80 करोड़ लोगों को भोजन नहीं मिलता तथा लगभग 50 करोड़ लोग कुपोषण के शिकार हैं।" एक गरीब को शराब का मूल्य चुकाने के लिए उसके पूरे परिवार के बजट की कटौती करनी पड़ती है। परिणामस्वरूप शराब कुपोषण का कारण बनती है जो शराब दुरुपयोग की समस्या से जुड़ा हुआ है।" यह भारत जैसे देश के लिए सत्य है। क्या आपको अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के प्रो. शेखर सक्सेना के भाषण का वह अंश याद है जो पहले इकाई में दिया गया है – "प्रत्येक गरीब व्यक्ति शराब नहीं पीता, लेकिन यदि वह पीता है तो धन के लिए बच्चों के भोजन और शिक्षा में कटौती करके पीता है। व्यक्ति का शराब पीना कुपोषण का, पढ़ाई छोड़ने का, अनेक प्रकार से गरीबी का, हिंसा का तथा परिवार में बीमारी का मुख्य कारण है।"

जहाँ तक भारत में मादक द्रव्य का परिवार पर पड़ने वाले प्रभाव का संबंध है इसकी तस्वीर (स्थिति) उतनी अच्छी नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अधिवेशन में प्रो. सक्सेना का वक्तव्य अनुभव किए गए भारतीय समाज के व्यापक संकटों का एक संकेत मात्र है। व्यसन घरेलू हिंसा तथा पत्नी को पीटने का मुख्य कारक हैं। किसी शराबी की पत्नी उवं उसके बच्चों के मानसिक आघात की कल्पना करें। इसके अतिरिक्त भी पुरुष प्रधान भारतीय समाज में व्यसन के कारण महिलाओं का और अधिक शोषण होता है। 1990 के दशक के पूर्वार्ध में भारत का दौरा करने के बाद डेरिक रूद्रफोर्ड लिखता है कि "देश के विभिन्न भागों में प्रत्येक 4 वयस्कों में से 1 व्यक्ति में शराब पीना सामान्य बात है तथा यह व्यसन शिक्षित मध्य और उच्च सामाजिक वर्गों को शहरी महिलाओं में भी फैल रहा है। लोग कम आयु यहाँ तक कि छात्रावस्था में ही पीना आरंभ कर देते हैं। पिछले 10 वर्षों में अत्यधिक शराब पीना तथा शराब पर निर्भर रहने की संख्या में वृद्धि हुई है। अस्पतालों में कम-से-कम एक-तिहाई बिस्तर शराब से संबंधित रोगियों – जिसमें सड़क तथा औद्योगिक दुर्घटनाओं के रोगी भी शामिल हैं, से भरे हुए हैं।" (द ग्लोब नं. 2, 1991)

हमने विकासशील देश, विशेषतः भारत जैसे देश में रसायन आधारित समाज की बहुआयामी समस्या की झलक देखी है। हमारे पास इससे स्वास्थ्य एवं मनोवैज्ञानिक समस्या से निपटने के संसाधन नहीं है। इस ज्वलंत सामाजिक मुद्दे को हल करने की सीमित जानकारी है इसलिए प्रायः इसका सामना करने के स्थान पर हम आराम से दूसरे विषयों को सोचने लगते हैं या इसे दबा देते हैं। हम यह दिखावा करते हैं कि हम अन्य गहन समस्याओं से घिरे हुए हैं और मादक द्रव्य दुरुपयोग छोटी समस्या है। इसलिए सामाजिक कार्य सूची में इसे कोई प्राथमिकता नहीं दी जाती। लेकिन भारत के जिम्मेदार नागरिक तथा सामाजिक दायित्व के प्रति सजग व्यक्ति के रूप में अब तक आपने अनुभव किया होगा कि इसमें विभिन्न अवस्थाओं में मध्यस्थता या हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

मध्यस्थता से हमारा क्या अभिप्राय है? मध्यस्थता का अर्थ है मादक द्रव्य दुरुपयोग को या तो माँग के स्तर पर अथवा आपूर्ति के स्तर पर नियंत्रित करने के हमारे प्रयत्न। हमारी मध्यस्थता नीति का उद्देश्य है लोगों को मादक द्रव्यों का प्रयोग करने से रोका

जाए या इनकी आपूर्ति अथवा बिक्री पर प्रभावशाली नियंत्रण लगाया जाए या समाज का एक प्रकार से दायित्व बने कि व्यसनी का उपचार अथवा पुनर्वास किया जाए। अगले भागों में हम विस्तृत रूप से मध्यस्थता नीतियों तथा सरकार सहित विभिन्न एजेंसियों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं की चर्चा करेंगे। कोई भी प्रश्न कर सकता है कि मध्यस्थता क्यों करनी चाहिए? प्रश्न बहुत स्वाभाविक है क्योंकि अनेक लोगों का विश्वास है कि यह एक ऐसी बुरी आदत है जिससे बचा जा सकता है तथा यदि कोई व्यसन करता है तो अपनी मर्जी से करता है। हमें मध्यस्थता नीतियों पर गंभीरता से विचार करना होगा क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी भी समय इन रसायनों का आदी हो सकता है। कई व्यक्ति संयोग से – अनजाने से और कई परिस्थितियों के कारण इसके व्यसनी बन जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह व्यसन एक सामाजिक समस्या है। अतः व्यक्ति को बहिष्कृत नहीं किया जा सकता और उस पर आरोप भी नहीं लगाया जा सकता। यह अनुभव करने के बाद कि व्यसन से व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और संपूर्ण विश्व को क्षति पहुँचती है तो क्या मध्यस्थता नीतियों की योजना बनाना हमारा कर्त्तव्य नहीं है ताकि इस सामाजिक बुराई को समाप्त किया जा सके। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप अनुभव करेंगे कि जब तक इस व्यसन से संघर्ष के गंभीर प्रयास नहीं किए जाएँगे निश्चित रूप से यह मादक द्रव्य दुरुपयोग भारी समस्या में बदल जाएगा।

3.3 मध्यस्थता की अवस्थाएँ

इससे पहले के भाग में हमने मादक द्रव्य दुरुपयोग को समाप्त करने के लिए मध्यस्थता की आवश्यकता के बारे में चर्चा की है। अभी तक अनेक लोगों ने मादक द्रव्यों का प्रयोग नहीं किया है, कुछेक ने प्रयोग किया है तथा पक्के व्यसनी बन गए हैं। हम इन सभी लोगों पर एक जैसी मध्यस्थता नीति लागू नहीं कर सकते। फिर भी इन सभी को मध्यस्थता की आवश्यकता है। मध्यस्थता रोकथाम, नियंत्रण, उपचार और पुनर्वास के विचार से की जानी चाहिए। आगे के भागों में हम विभिन्न अवस्थाओं के लिए अपनाई जाने वाली मध्यस्थता नीतियों तथा संस्थाओं द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका के बारे में विस्तृत चर्चा करेंगे। लोगों को मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने से रोकथाम करने वाली मध्यस्थता, युवाओं तथा सामान्य जनता को लक्ष्य समह मानते हुए की जानी चाहिए। जैसा कि आप जानते हैं कि कोई भी मादक द्रव्य दुरुपयोग हो सकता है। जब हम उपभोग व आपूर्ति घटाने वाली गतिविधियों में शामिल हो जाते हैं तो हमारा उद्देश्य इसे नियंत्रित करना होता है। जब कोई व्यक्ति पक्का व्यसनी बन जाता है तो उसे इलाज, मनोचिकित्सा तथा परामर्श के लिए एक मार्गदर्शक की भी आवश्यकता पड़ती है। लेकिन जब कोई उपचार के लिए आता है और उसे सहायता मिल जाती है तो उसे पुनर्वास की आवश्यकता पड़ती है। उसे अपने जीवन को सार्थक बनाने तथा जीवन की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए क्रमशः सहारे और उत्साह की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए जब आप इस इकाई का अध्ययन कर लेते हैं तो आपको अनुभव होगा कि यदि हम इन सभी अवस्थाओं में मध्यस्थता को लागू करते हैं तो मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध हम प्रभावशाली संघर्ष कर सकते हैं।

रोकथाम

पहले इकाई में वर्णित कहावत को याद करें: "इलाज से परहेज़ श्रेष्ठ है।" एक बार जब कोई व्यक्ति प्रयोग के रूप में मादक द्रव्य लेना आरंभ करता है और फिर उसे आदत पड़ जाती है या वह व्यसनी बन जाता है तो उसे इससे मुक्ति दिलाना बहुत कठिन है।

इसलिए मध्यस्थता की अवस्था व्यक्ति द्वारा मादक द्रव्य लेने के प्रथम प्रयोग से पूर्व आती है। सही रोकथाम नीति अपनाने के लिए लोगों को चाहे वे बहुत छोटे हों, मादक द्रव्य दुरुपयोग की बुराई के बारे में बताना अच्छा होता है। क्या आप इस कहावत को जानते हैं कि "छोटों को ही पकड़ लो" हमें व्यसन के विरुद्ध वाले संदेश छोटे बच्चों को पहुँचाने चाहिए। हमें यह ध्यान रखना होगा कि छोटे बच्चे चाहे वे छात्र हों या गली में खेलने वाले हों, मादक द्रव्यों से परिचित हो जाते हैं। भारत जैसे देश में किशोर स्कूलों और कालेजों में सरलता से मादक द्रव्यों के संपर्क में आ जाते हैं। कृपया खंड की इकाई 5 में भाग 5.4 "माँग की कमी के पीछे तर्क" देखें। जब हम माँग में कमी की बात करते हैं तो मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष में हमारा पहला कदम है युवाओं को मादक द्रव्यों से दूर रखना। इसी इकाई के भाग 5.5 में दिए गए वर्णन को याद कीजिए जिसमें हमने दृढ़तापूर्वक कहा है कि युवाओं को "मादक द्रव्य नहीं" कहने के तरीके सिखाने चाहिए।

किसी भी सफल रोकथाम कार्य के लिए जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करना पहली आवश्यकता है। स्कूल या कालेज के छात्रों के लिए सेमिनार, संगोष्ठी तथा ऐसे ही कार्यक्रम काफी प्रभावशाली होते हैं। व्यसन के बारे में पाठ्यक्रम में सामग्री रखने का भी महत्व है। लेकिन अनेक बच्चे स्कूल या कालेजों में नहीं जाते। फिर बाल श्रमिक हैं जो होटलों, दुकानों और कारखानों में काम करते हैं या गृह निर्माण श्रमिक हैं, कारीगरों के सहायक या फिर कुटीर अथवा दस्तकारी उद्योग में सहायता करते हैं। इनमें से अनेक गली में खेलने वाले, रद्दी बटोरने वाले या भिखारी तक होते हैं। हम इन किशोरों तक कैसे पहुँच सकते हैं जो अधिकांशतः अशिक्षित होते हैं। क्या सेमिनार के माध्यम से? चाहें तो हम नुक्कड़ नाटक या लोक कलाओं के माध्यम से संदेश पहुँचा सकते हैं। यहाँ पर हमारे जनसंचार के साधन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अधिकांश बच्चे चलचित्र देखने या सार्वजनिक टेलीविजनों पर कार्यक्रम देखने जाते हैं। जब हम सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठनों की भूमिकाओं की चर्चा करेंगे तो हम रोकथाम नीति पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

नियंत्रण

एक चीनी कहावत है कि "पहले आदमी एक बार शराब पीता है, फिर शराब शराब को पीती है, फिर शराब आदमी को पीती है।" इस कहावत का अर्थ है कि जब व्यक्ति एक बार शराब पीना आरंभ करता है तो कोई भी शक्ति उस पर नियंत्रण नहीं रख सकती। इसलिए श्रेष्ठतम नीति यह है कि शराब पीना कभी आरंभ ही न किया जाए। क्या किसी व्यक्ति ने शराब पीना आरंभ कर अपनी आदत पर नियंत्रण किया है? पश्चिमी सभ्यता में अनेक लोगों ने अनुभव किया है कि शराब पीने की आदत को छोड़ना संभव नहीं है। उन्होंने "उचित मात्रा" में शराब पीने की बात करना आरंभ कर दिया है। उनका क्या अर्थ है? व्यक्ति शराब पी सकता है लेकिन सीमित मात्रा में पीनी चाहिए। किसी को भी आश्चर्य होगा कि क्या ऐसा नियंत्रण संभव है? क्या शराब के लिए उचित मात्रा की शर्त लगाई जा सकती है? अनेक व्यक्ति पूछ सकते हैं कि "कितनी उचित मात्रा" में। यदि हम लोगों को अपनी शराब पीने की आदत पर नियंत्रण की बात सिखाएँ तो यह एक व्यर्थ का परिश्रम होगा।

"नियंत्रण" को दूसरे अर्थ में भी प्रयोग किया जा सकता है। मादक द्रव्यों को युवाओं से दूर रखने वाले संदर्भ की चर्चा को याद करें। जैसा कि पहले एक इकाई में चर्चा की जा चुकी है कि उपलब्धता पदार्थ प्रयोग करने का एक कारण है। मादक द्रव्य की उपलब्धता पर कुछ नियंत्रण या प्रतिबंध लगाना कुछ सार्थक हो सकता है। जब हम नियंत्रण का इस अर्थ में प्रयोग करते हैं तो सरकार की, विशेषतः भारत जैसे देश में बड़ी

जिम्मेदारी हो जाती है। हमारे देश में सरकार से लाइसेंस प्राप्त किए बिना कारखाने में शराब का निर्माण या उत्पादन आरंभ करना संभव नहीं है। कई प्रांतों में सरकार स्वयं थोक बिक्री करती है (जैसे तमिलनाडु में)। सरकार खुदरा बिक्री के लिए नीलामी करती है तथा उनकी कार्य प्रणाली सरकार द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार होती है। यदि सरकार की इच्छा हो तो लाइसेंस प्रणाली पद्धति लागू कर देती है। निःसंदेह यह केवल वैध मादक द्रव्यों पर ही लागू होता है। लेकिन जब यह नियंत्रण अवैध मादक द्रव्यों पर आता है तो इसे कैसे लागू किया जा सकता है? अवैध व्यापार तथा अवैध शराब उत्पादन को समाप्त करने वाले सख्त कानून ही मादक द्रव्यों पर प्रभावशाली नियंत्रण कर सकते हैं। सरकार के दायित्वों की चर्चा करते समय इन पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

उपचार

शराब या मादक द्रव्यों के व्यसन को बुरी आदत, पाप या रोग आदि विभिन्न रूपों में समझा जाता है। किसी व्यसनी को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि यह एक रोगी व्यक्ति है। यह निरंतर बढ़ने वाला रोग है। यह घातक रोग है। इसे रोग क्यों माना गया है? जिस प्रकार किसी रोगी की कोई स्वास्थ्य समस्या होती है जैसे हृदय रोग या कैंसर जिसमें उपचार की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार व्यसनी को भी उपचार की आवश्यकता होती है। अन्य रोगों की तरह व्यसनी को भी चिकित्सा द्वारा संभाला जा सकता है। कहा जाता है कि जो एक बार "नशेड़ी" वह हमेशा के लिए "नशेड़ी"। क्योंकि व्यसन द्वारा हुई शारीरिक और मानसिक क्षति ठीक नहीं हो सकती। इसलिए कुछ लोग समझते हैं कि व्यसन रोग का उपचार हो सकता है इलाज नहीं। फिर भी ऐसे प्रमाण हैं जो यह मानते हैं कि व्यसन एक समस्या है जिसमें चिकित्सीय मध्यस्थता की आवश्यकता होती है। यह एक ऐसा रोग है जिसमें चिकित्सक और मनोचिकित्सक की आवश्यकता पड़ती है। यहाँ पर हम चिकित्सा प्रक्रिया की चर्चा कर रहे हैं। क्योंकि यह भाग 3.1 का विषय है। आपको व्यसन मुक्ति परहेज़ तथा उपचार प्रक्रिया की जानकारी मिल चुकी है। कुल मिलाकर हमें यह ध्यान रखना है कि जिस प्रकार हम किसी रोगी को इलाज के लिए किसी चिकित्सक के पास ले जाते हैं, उसी प्रकार यदि हम किसी व्यसनी को किसी ऐसे चिकित्सक के पास ले जाते हैं जो व्यसनियों की देखभाल करने में विशेष रूप से प्रशिक्षित है तो यह एक अच्छी मध्यस्थता नीति होगी। लेकिन जब तक व्यसनी स्वयं व्यसन के दुरुपयोग से मुक्त होना नहीं चाहेगा और उस उपचार का प्रभाव समझ में नहीं आएगा दूसरों द्वारा किए गए प्रयत्न पूरी तरह व्यर्थ हो जाएँगे। इसके अतिरिक्त किसी व्यसनी का उपचार एकांत में नहीं करना चाहिए। उपचार के बाद उसका निरंतर ध्यान विशेषतः किसी प्रशिक्षित परामर्शक द्वारा करना उपचार को सफल बनाने के लिए बहुत आवश्यक है। यह सिद्धांत न केवल व्यसनी रोगी पर अपितु उसके परिवार के अन्य सदस्यों पर भी लागू होना चाहिए। परिवार का उपचार करना भी आवश्यक है ताकि परिवार के सदस्य उपचार किए गए व्यसनी के साथ तालमेल बैठा सकें एवं उपचार को स्वीकार कर सके। चिकित्सक, मनोचिकित्सक, परामर्शक तथा परिवार के सदस्यों की तमाम कोशिशों के बाद भी व्यसनी पुनः अपनी पुरानी आदत में पड़ सकता है या जिसे हम कहते हैं पुनः बीमार हो सकता है। इस प्रकार उपचार बहुत बार प्रभावशाली मध्यस्थता को पूरा नहीं करता। अनेक व्यक्ति जिन्होंने व्यसनी के उपचार में पर्याप्त समय लगाया है निराश हो जाते हैं और इस कारण निरुत्साहित हो जाते हैं। लेकिन फिर भी जब हमारे पास चिकित्सा मध्यस्थता के साधन नहीं होंगे, व्यसन के विरुद्ध कोई संघर्ष प्रभावी नहीं हो सकता।



पुनर्वास

पुनर्वास भी मध्यस्थता का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। ऐसे अनेक व्यसनी हैं जो अपनी आदत छोड़ना चाहते हैं। लेकिन उनके मन में अनेक सवाल आते हैं जो उन्हें उपचार कराने या अपनी आदत छोड़ने में बाधा पहुँचाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि यदि मैंने व्यसन करना छोड़ दिया तो क्या समाज मुझे स्वीकार करेगा? शंका करना सही है। क्योंकि व्यसनी के दिमाग में अपराध और शर्म की भावना होती है जो उसको यह विश्वास दिलाती है कि उसके आसपास का समाज उन सब बातों को भी नहीं भूलेगा जो उसने व्यसन करते समय किया है। दूसरा प्रश्न यह आता है कि अपनी आदत छोड़ने के बाद मैं क्या करूँगा? यह एक विकासशील देश जैसे भारत के बारे में बिल्कुल सत्य है। समाज में गरीबी के कारण व्यसन की आदत छोड़ने वाले व्यक्ति के लिए उचित कार्य प्राप्त करना बहुत कठिन है।

पुनर्वास एक कला है जिसमें पूर्व व्यसनी को वास्तविक जीवन की अपेक्षाओं के रूप में समाज की माँग के अनुसार तालमेल बैठाना सिखाया जाता है। पुनर्वास कला में समाज को भी पूर्व व्यसनी को स्वीकार करने की कला सिखाई जाती है। पुनर्वास एक रास्ता है जिसमें पूर्व व्यसनी को जीवन को नए सिरे से आरंभ करना सिखाया जाता है। पुनर्वास में पूर्व व्यसनी को पुनः व्यसन में न पड़ते हुए सफलतापूर्वक जीवन जीने के लिए उत्साहित किया जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम सही पुनर्वास नीतियाँ बनाएँ जो व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए उपयुक्त हों। अब आप समझ गए होंगे कि उपचार के बाद की अवस्था में भी मध्यस्थता बहुत महत्वपूर्ण है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) किसी व्यसनी के पुनर्वास से आपका क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

.....

3.4 अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

जैसा कि हमने पहले बताया है कि मादक द्रव्यों का दुरुपयोग एक अंतर्राष्ट्रीय समस्या है। यह अर्ध विकसित तथा विकसित देशों में समान रूप से फैली हुई है। इनमें तीव्रता के अतिरिक्त कोई अंतर नहीं है। इसके अवैध अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, स्मगलिंग, अवैध शस्त्र व्यापार तथा आतंकवाद से संबंधों के कारण अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अनेक समस्याएँ खड़ी हो गई हैं। विश्व हत्या, तोड़फोड़ व विद्रोही गतिविधियों में मादक द्रव्य माफिया तथा संगठनों के संबंधों को अच्छी तरह जानता है। इसलिए व्यसन के खिलाफ कोई भी संघर्ष तब तक व्यर्थ होगा जब तक उसमें पूरे विश्व की भागीदारी न हो। अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने इस बदली हुई समस्या के बारे में गंभीर विचार व्यक्त किए हैं तथा हो सकता है कि संघर्ष करने का संकल्प भी किया हो। इन संगठनों ने विभिन्न अवस्थाओं में मध्यस्थता के बारे में विचार किया है तथा अपनी नीतियाँ बनाई हैं जो अनेक प्रकार की हैं जिनमें सिफारिश, उपचार, पूर्व व्यसनियों को संगठित करना, पुनर्वास तथा मादक द्रव्य के अवैध व्यापार के विरुद्ध संघर्ष करना तथा माँग और आपूर्ति को कम करने की योजना बनाने के लिए क्षेत्रीय सहयोग आदि सम्मिलित हैं।

इस भाग में वर्णन किया गया है कि मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष में शामिल सभी अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का एक संपूर्ण अध्ययन करना संभव नहीं है। फिर भी, विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की सोच के बारे में सूचित करने के प्रयास किए गए हैं। इस भाग का अध्ययन करने के बाद अंतर्राष्ट्रीय संगठन जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ (United Nations Organisation – UNO) व विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organisation – WHO) तथा राष्ट्रों की क्षेत्रीय संस्थाएँ जैसे सार्क ने इस समस्या के बारे में गंभीरता से विचार किया है तथा माँग और पूर्ति को कम करने के कार्य आरंभ किए हैं। विश्व और विश्व के संगठनों को मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के विरुद्ध महत्वपूर्ण कार्य करना चाहिए क्योंकि इससे समाज में विनाश हो रहा है। जबकि गरीबी के अंतर्गत अनेक समस्याएँ हैं तो इन मादक द्रव्यों पर अत्यधिक राशि व्यर्थ चली जाती है। यूरोकेयर के श्री डेरिक रूद्रफोर्ड कहते हैं, "शराब उद्योग की कुल राशि विश्व में प्रत्येक व्यक्ति को 10 गुणा अधिक पर्याप्त रूप से रोटी, पानी, शिक्षा, आवास तथा चिकित्सा सहायता प्रदान कर सकती है।"

संयुक्त राष्ट्र संघ में मादक द्रव्यों के खतरे से तथा इसने विश्व शांति को जो क्षति पहुँचाई है उससे वह परिचित है। अनेक अंतर्राष्ट्रीय अव्यवस्थाएँ फैलाने तथा विकास में बाधा बनने के कारण संयुक्त राष्ट्र की कार्य सूची में मादक द्रव्यों का व्यसन महत्वपूर्ण स्थान पर है। संयुक्त राष्ट्र के अंतर्राष्ट्रीय दुरुपयोग नियंत्रण कार्यक्रम (United Nations Drug Control Programme - UNDCP) की मादक द्रव्य रिपोर्ट में उठाए गए तथ्यों से हमें इसकी गंभीरता का पता लगता है जिसे संयुक्त राष्ट्र ने समझा है। विश्व मादक द्रव्य रिपोर्ट ने संसार में मादक द्रव्य के अवैध उत्पादन, व्यवसाय तथा प्रयोग की वास्तविक स्थिति प्रस्तुत की है। रिपोर्ट में शब्दों की उपयोगी परिभाषाएँ हैं। इसमें मादक द्रव्यों में प्रयुक्त रसायनों का संक्षिप्त लेकिन सही विवरण एवं व्याख्या की गई है साथ ही इसका प्रयोगकर्ता के शरीर और दिमाग पर पड़ने वाले प्रभावों को भी स्पष्ट किया गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि संयुक्त राष्ट्र के अंतर्राष्ट्रीय दुरुपयोग नियंत्रण कार्यक्रम द्वारा प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार 1985 में कोक पत्तियों का उत्पादन दो गुणा तथा अफीम का उत्पादन 3 गुणा से भी अधिक हो गया है। रिपोर्ट यह भी बताती है कि पूरे विश्व में कच्चे माल के उत्पादन में भी अत्यधिक वृद्धि हुई है जिससे विश्व में इसकी कृषि भूमि 1996

में 2,80,000 हेक्टेयर तक पहुँच गई है। भारत में इस रिपोर्ट को बड़ी गंभीरता से लिया गया है।

क्या आपको पिछली इकाई में वर्णित हमारा कथन याद है कि भारत मादक द्रव्य के अवैध व्यापार का आवागमन बिंदु बन गया है क्योंकि इसकी स्थिति गोल्डन क्रिसेंट तथा गोल्डन ट्रायएंगल देश के बीच में पड़ती है। यह रिपोर्ट बताती है कि अधिकतम (90 प्रतिशत) अवैध मादक द्रव्य गोल्डन क्रिसेंट तथा गोल्डन ट्रायएंगल देशों में उत्पादित होता है। संयुक्त राष्ट्र ने विश्व को यह भी बताया है कि सन् 1980 से सिंथेटिक मादक द्रव्य के दुरुपयोग में प्रतिवर्ष 16 प्रतिशत की वृद्धि हुई। स्वास्थ्य और मादक द्रव्यों के बीच संबंधों के बारे में सनसनीखेज सहस्य बताने के अतिरिक्त भी विस्तृत रूप से प्रकाश डालती है। मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार को समाप्त करने के संकल्प के साथ संयुक्त राष्ट्र ने इस रिपोर्ट में यह भी बताया है कि यह उत्पादक देश सहित किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक है। "अवैध मादक द्रव्य के माध्यम से देश द्वारा अर्जित अपेक्षाकृत थोड़ा–सा मुनाफा देश की अर्थव्यवस्था को बिगाड़ने लगता है।" 1946 में अपनी स्थापना से ही संयुक्त राष्ट्र मादक द्रव्य नियंत्रण तथा अपने दायित्वों को निभाने के कार्य करने लगा था। रिपोर्ट के अनुसार विश्व मादक द्रव्य नीति में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका विभिन्न प्रवृत्तियों में एक विकासशील एवं सामंजस्य स्थापित करने वाली है। "मादक द्रव्यों पर अनेक जटिल एवं कानूनी समझौतों को एक समान तथा सरल बनाने की आवश्यकता है। इस दिशा में तीन विभिन्न मादक द्रव्य नियंत्रण सम्मेलनों में प्रयत्न चरम बिंदु पर पहुँचे चुके हैं। मादक द्रव्यों के निरंतर बदलते प्रयोग के कारण इसमें भागीदार अनेक देशों की संख्या में वृद्धि हुई। इन प्रयत्नों में इन देशों के चिकित्सीय, वैज्ञानिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक हितों के भेदों में सामंजस्य स्थापित करने की निरंतर आवश्यकता को दर्शाया गया है।"

1987 में वियेना में मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव श्री जेवीयर परेज–डी क्यूलर ने अपने भाषण में बताया, "वास्तव में जिस प्रकार मादक द्रव्य का व्यसनी अपना स्वास्थ्य एवं स्वतंत्रता खो देता है, अनेक देश भ्रष्टाचार के कारण बर्बाद हो जाते हैं और उनकी स्वतंत्रता को भी खतरा हो जाता है, इसी प्रकार अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा भी खतरे में है क्योंकि अवैध मादक द्रव्य अवैध शस्त्र व्यापार, विद्रोह तथा आतंकवाद से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। संक्षेप में कहा जाए तो हम सब एक ऐसी बुराई का सामना कर रहे हैं जो न केवल मनुष्यों को बर्बाद कर रही है अपितु भ्रष्टाचार और हिंसा के माध्यम से समाज की नीवों को भी हिला रही है।" संयुक्त राष्ट्र ने आरंभ से ही अवैध मादक द्रव्य व्यापार के विरुद्ध संघर्ष करने तथा मादक द्रव्यों से जुड़े अपराधों को समाप्त करने के लिए राष्ट्रों को संगठित करने का कार्य किया है। 1988 में संयुक्त राष्ट्र ने मादक द्रव्य तथा उन्मादकारी द्रव्यों के अवैध व्यापार के विरुद्ध एक सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का उद्देश्य कानून लागू करने में सहयोग करना, मादक द्रव्यों से जुड़े अपराधियों का प्रत्यर्पण करना तथा मादक द्रव्यों के मुनाफे से प्राप्त संपत्तियों को जब्त करने पर विचार करना था।

मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के क्षेत्र में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने आश्चर्यजनक एवं प्रशंसनीय कार्य किया है। इसने शराब और मादक द्रव्यों के खिलाफ जनमत तैयार कर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1951 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पहली बार शराब पर सवाल उठाया। उन्होंने एक विशेषज्ञ समूहों का गठन किया जिन्हें कुछ

अनुसंधान तथा सूचनात्मक कार्य सौंपे गए। 1975 में विश्व स्वास्थ्य संगठन के बोर्ड तथा इसकी महासभा ने शराब के बारे में पुनः सवाल उठाया। संगठन के महानिदेशक को निर्देश दिया गया कि इस क्षेत्र पर आँकड़ों सहित प्रकाश डाला जाए ताकि शराब की खपत कम करने के प्रयास किए जा सकें। 1977 में विश्व स्वास्थ्य संगठन के सदस्य राष्ट्रों ने "वर्ष 2000 तक सबके लिए स्वास्थ्य" के लक्ष्य का अनुमोदन किया तथा इसे अपनाया। 1979 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक कार्य योजना तैयार की जिसमें अन्य बातों के साथ निम्नलिखित विषय उठाए गए:

- शराब की खपत को विशेषकर युवाओं और गर्भवर्ती महिलाओं में कम करना।
- शराब के उत्पादन और बेचने के खिलाफ कार्रवाई करना।
- व्यसनियों को चिकित्सा तथा पुनर्वास प्रदान करना।
- शराब की खपत तथा संबंधित समस्याओं के आँकड़े तैयार करना।
- व्यसन के मामले को संभालने के लिए देशों के बीच अधिक सहयोग करना।

1980 में विश्व स्वास्थ्य संगठन के यूरोपीय क्षेत्र ने ठोस लक्ष्य एवं नीतियाँ बनाई। उन्होंने वहाँ वर्ष 1995 तक शराब की खपत में महत्वपूर्ण कमी तथा वर्ष 2000 तक 25 प्रतिशत कमी की सिफारिश की। 1983 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सभी देशों से अनुरोध किया कि वे सावधानीपूर्वक एक राष्ट्रीय शराब नीति बनाएँ। आज विश्व स्वास्थ्य संगठन मादक द्रव्यों दुरुपयोग के खिलाफ कठोर संघर्ष करने जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन इस विषय को विभिन्न दृष्टिकोणों से देख रहा है। उसकी विशेष चिंता मादक द्रव्य दुरुपयोग के संबंध में एच.आई.वी. और हैपेटाइटिस से जुड़े होने के कारण हैं। इसे कुछ प्रकाशनों में प्रकाशित भी किया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन अपने मानसिक स्वास्थ्य और मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम वाले प्रभाग के अंतर्गत मादक द्रव्य दुरुपयोग या आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से इस संघर्ष में शामिल है। विश्व को आशा है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन मादक द्रव्य के दुरुपयोग के विरुद्ध अपने संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा तथा विश्व का मार्गदर्शन करता रहेगा।

इस व्यसन के विरुद्ध काम करने वाले किसी भी अंतर्राष्ट्रीय संगठन पर चर्चा एल्कोलिक एनोनिस जिसे एए के नाम से जाना जाता है, का जिक्र किए बिना अधूरी है। एए राष्ट्रों का एक ग़ैर साम्प्रदायिक संगठन है, जिसका गठन समस्याग्रस्त शराब पीने वालों की सहायता के लिए किया गया है। यह 1935 में एकरोन, ओहियो में मामूली सदस्यता के साथ आरंभ हुआ था। इसकी शुरुआत बिल डब्ल्यू और डॉ. वोब्स नामक ऐसे दो व्यक्तियों ने की थी जिनका लापरवाही से शराब पीने का लम्बा इतिहास है। आज 100 देशों में इसके लगभग 5 लाख सदस्य हैं। "एल्कोलिक एनोनीयस" ऐसे पुरुषों और महिलाओं का संगठन है जो परस्पर अपने अनुभव, शक्ति तथा शराब छोड़ने में दूसरों की सहायता कर सकें। इसकी सदस्यता की एकमात्र शर्त शराब छोड़ने की इच्छा होनी चाहिए। इसकी सदस्यता के लिए कोई शुल्क नहीं है। एए किसी सम्प्रदाय, वर्ग, राजनीति, संगठन, संस्था से नहीं जुड़ा है। यह किसी विवाद में पड़ना नहीं चाहता। किसी कार्य का न समर्थन करता है और न ही विरोध। इसके सदस्यों का मुख्य उद्देश्य है संयम में रहना तथा दूसरे शराब का सेवन करने वालों की संयम रखने में सहायता करना। एए की सदस्यता बहुत प्रभावशाली है इसने शराब छोड़ने के लिए 12सूत्री कार्यक्रम का भी सुझाव दिया है।

मादक द्रव्य यूरोप निवासियों के सार्वजनिक एवं निजी जीवन को बर्बाद कर रहा है। इसलिए यूरोपीय देशों ने शराब तथा मादक द्रव्य की समस्या तथा इसके अवैध व्यापार को समाप्त करने के उपायों पर गंभीरता से विचार किया है। 1995 में 46 यूरोपीय देश पेरिस में एकत्रित हुए तथा शराब पर एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। शराब की गड़बड़ियों का अनुभव करते हुए यूरोपीय संघ में एक स्वैच्छिक तथा गैर-सरकारी संगठनों का गठबंधन स्थापित करने के लिए कदम उठाए गए तथा यूरोकेयर का गठन किया गया।

हाल ही में सार्क द्वारा किए गए प्रयत्नों का भी वर्णन किया जाना चाहिए। दक्षिण एशियाई क्षेत्र के सदस्य देशों ने मादक द्रव्य के अवैध व्यापार से होने वाले जोखिमों के खिलाफ संघर्ष करने का संकल्प किया है।

मादक द्रव्यों के दुरुपयोग तथा अवैध व्यापार की बुराई के बारे में विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की जागरूकता को आशा की किरण के रूप में देखा जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय समस्या होने के कारण इसे विकसित और अविकसित देशों में अलग-अलग रूप से नहीं देखा जा सकता। व्यक्तियों तथा समाजों को कठिनाई में डालने के साथ-साथ इसने विश्व शांति के लिए भी खतरा पैदा कर दिया है क्योंकि इसका संबंध आतंकवाद सहित असामाजिक गतिविधियों से जुड़ा हुआ है और मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार एक अंतर्राष्ट्रीय गतिविधि बन गया है जोंस हर्टलुइस ने अपनी पुस्तक *"द वर्ल्ड ए ड्रग सिन"* में लिखा है, "एक मादक द्रव्य संघ दो या तीन से अधिक महाद्वीपों के अनेक देशों में पुलिस तथा सीमा शुल्क अधिकारियों के लिए समस्या पैदा कर अपना कार्य कर सकता है। हो सकता है कि मादक द्रव्य का उतपादन एक देश में हो, संसाधन दूसरे देश में, स्मगलिंग तीसरे देश में, बिक्री चौथे देश में तथा लाभ बँटवारा पाँचवें देश में हो। इससे कानून लागू करने वाली संस्थाओं के लिए बहुत सी समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। इस अंतर्राष्ट्रीय अपराध के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए ठोस प्रयास अंतर्राष्ट्रीय अपराधी पुलिस संगठन, इंटरपोल (International Criminal Police Organisation – INTERPOL) तथा व्यापार सहयोग परिषद कस्टम्स को-आपरेशन कांउसिल (Customs Cooperation Council – CCC) द्वारा किए जा रहे हैं।"

3.5 राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

इस भाग में हम रोकथाम, नियंत्रण, उपचार तथा पुनर्वास में शामिल विभिन्न राष्ट्रीय संस्थाओं की चर्चा करेंगे। अब तक आपको यह ज्ञात होगा कि व्यसन से संघर्ष करना कोई आसान कार्य नहीं है। मादक द्रव्य दुरुपयोग तथा अवैध व्यापार को जड़ से मिटाना आसान नहीं है। अनेक राष्ट्रीय संस्थाएँ मध्यस्थता तथा माँग व आपूर्ति को समाप्त करने में लगी हुई हैं। इस भाग का अध्ययन करने के बाद आप अनुभव करेंगे कि किसी सार्थक कार्य को करने के लिए ठोस तथा गंभीर प्रयास करना कितना आवश्यक है। राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका समझने के लिए भारत में मादक द्रव्यों की समस्या को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझना आवश्यक है। जैसे उपलब्ध मादक द्रव्य के प्रकार, उनके वैध और अवैध मार्ग, कितनी मात्रा में वैध मादक द्रव्यों विशषतः शराब का उत्पादन तथा व्यापार होता है और मादक द्रव्यों का अवैध तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर नियंत्रण कैसे किया जाता है?

भारत में सुपारी आधारित मादक द्रव्य जिसे आमतौर पर 'गुटका' के नाम से जाना जाता है तथा तम्बाकू आधारित मादक द्रव्य जिसे 'थम्पक्स' के नाम से जाना जाता है का प्रचलन विशेषतः युवाओं में बहुत आम है। चाहे कुछ भी हो इन 'गुटकों' और 'थम्पक्स' की बिक्री पर कोई रोक नहीं है। ये छोटी–छोटी आकर्षक थैलियों में उपलब्ध होती हैं। इसी प्रकार कोई भी व्यक्ति सिगरेट प्राप्त कर सकता है। बस सरकार इतना चाहती है कि सिगरेट की प्रत्येक डिब्बी पर ज़रूरी चेतावनी – "सिगेरट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है" लिखा होना चाहिए। स्पष्ट है कि ऐसी कोई राष्ट्रीय संस्था नहीं है जो इन आरंभिक मादक द्रव्यों की बिक्री पर सार्थक नियंत्रण लागू कर सके। परिणामस्वरूप ये कहीं भी बेची जा सकती है, यहाँ तक कि स्कूलों और कालेजों के नजदीक और कालेजों तथा विश्वविद्यालय की कैंटीन में तो और भी बुरी हालत है।

यद्यपि हमारा संविधान कहता है, "राज्य चिकित्सा उद्देश्यों को छोड़कर नशीले पेय और मादक द्रव्य जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं के उपभोग पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास करेगा।" अनेक राज्यों में शराब वैध मादक द्रव्य है। हमारे संघीय ढाँचे में केन्द्र सरकार प्रतिबंध लगाने के बारे में अधिक नहीं कहती। यह एक मजाक है कि भारत में राज्य सरकारें शराब वितरण का कार्य करती हैं। अनेक राज्यों में सरकार के शराब निर्माण के अपने उद्योग, गोदाम, थोक बिक्री डिपो तथा यहाँ तक खुदरा बिक्री केन्द्र भी हैं। क्या आप नहीं सोचते हैं कि यह एक विरोधाभास है कि जिस देश में गांधीजी ने राष्ट्रपिता के रूप में इस व्यसन के विरुद्ध संघर्ष किया हो वहाँ सरकार संविधान में किए गए वर्णन के बावजूद शराब व्यापार में शामिल है। यद्यपि खुदरा बिक्री के बारे में कुछ नियंत्रण है, जैसे – बिक्री, समय, स्थान, जहाँ शराब की दुकान नहीं होनी चाहिए, तथा विज्ञापन आदि। लेकिन इनका पालन करने के स्थान पर उल्लंघन अधिक होता है। वितरण प्रणाली द्वारा कानून का पालन न करने पर भी प्रायः राज्य सरकारें मौन, असहाय दर्शक बनी रहती हैं।

यह स्वीकार करना होगा कि भारत सरकार तथा राज्य सरकारें, अवैध मादक द्रव्यों के विरुद्ध निरंतर संघर्ष कर रही हैं। हमारा सीमा शुल्क विभाग, हवाई अड्डों, बंदरगाहों पर सतर्क निगरानी रखता है तथा मादक द्रव्यों के अंतर्राष्ट्रीय अवैध व्यापार को रोकने का भरसक प्रयास करता है। भारत मादक द्रव्य के अवैध अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का आवागमन केन्द्र होने के कारण सीमा शुल्क विभाग हार्डकोर मादक द्रव्य की आने व जाने वाली तस्करी को रोकने की ईमानदारी से निगरानी करता है। उत्पाद शुल्क विभाग जो शराब उद्योग को लाइसेंस देने का कार्य करता है अवैध शराब बनाने या तैयार करने पर कड़ी निगरानी रखता है। प्रायः हम मिलावटी शराब पकड़ने के बारे में पढ़ते हैं। अनेक राज्य सरकारों ने मादक द्रव्य संबंधी विषयों को संभालने के लिए विशेष कार्य बलों की स्थापना की है। राज्य सरकारें उन लोगों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करती हैं जो कैनाबीज और पोस्त की खेती करते हैं। इस कार्रवाई में पुलिस तथा वन विभाग शामिल होते हैं। भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमा बहुत लंबी है तथा इसके समुद्री तट भी काफी विशाल हैं इसलिए केवल मादक द्रव्यों का अवैध अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केवल हवाई अड्डों और बंदरगाहों के माध्यम से नहीं किया जाता। अधिकांश अवैध व्यापार तटीय और भारत–पाक तथा भारत–बांग्लादेश सीमाओं के माध्यम से किया जाता है। हमारी सरकारों के अनेक विभाग इस अवैध व्यापार को नियंत्रित करने में शामिल हैं। हमारी, सेना, सीमा सुरक्षा बल, नौ सेना तथा तट रक्षा बल द्वारा किए जाने वाले सराहनीय कार्य है को हिस्सा बनाया।

जहाँ तक उपचार का संबंध है सरकारी अस्पतालों में व्यसनी के उपचार तथा उसके बाद उसका ध्यान रखने की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। देश के कानून के सामने व्यसनी का भी उपचार अन्य अपराधियों के समान किया जाता है, इसलिए उसकी आदत छूटने की संभावना समाप्त हो जाती है। नीमहंस, बंगलौर व्यसनियों के उपचार, परामर्श और पुनर्वास के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाली संस्था है। भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय व युवा कल्याण मंत्रालय भी कुछ कार्य कर रहे हैं लेकिन कोई सराहनीय या ठोस परिणाम सामने नहीं आया है। यह भी एक तथ्य है कि कई मेडिकल कालेज तथा अस्पताल व्यसन मुक्ति केन्द्र चलाते हैं जहाँ अनेक रोगियों का उपचार किया जाता है।

3.6 गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका

पिछले भाग का अध्ययन करने के बाद शायद आपने यह राय बना ली होगी कि मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष में हमारी सरकार उतना कार्य नहीं कर रही जितना कि उसे करना चाहिए। ऐसी बात भी नहीं है। हमें यह भी समझना होगा कि भारत एक विशाल देश है जिसकी आबादी 100 करोड़ से अधिक है तथा गरीबी जिसकी सबसे बड़ी समस्या है। इसलिए मादक द्रव्य के दुरुपयोग के विरुद्ध सरकार अकेले संघर्ष नहीं कर सकती है। ऐसी स्थिति में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। गैर-सरकारी संगठनों की मुख्य भूमिका किसी भी सामाजिक बुराई के विरुद्ध संघर्ष तथा सामाजिक उत्थान के लिए किए जाने वाले प्रयासों में सरकार के साथ सहयोग करने की है। व्यसन के विरुद्ध संघर्ष में गैर-सरकारी संगठनों द्वारा किए जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण कार्य निम्नलिखित हैं।

भारत में गैर-सरकारी संगठनों (एन. जी. ओ.) ने परिवार नियोजन अपनाने तथा निरक्षरता को समाप्त करने में महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान की हैं। उसी प्रकार गैर-सरकारी संगठनों को रसायन की आदत की समस्या का भी गंभीरता से अनुभव करना चाहिए। महिला संगठनों को भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी क्योंकि भारतीय समाज में पुरुष प्रधान परिवारों में मादक द्रव्य दुरुपयोग का आसानी से शिकार महिलाएँ ही बनती हैं। उनके शोषण और दुखों का व्यसन एक और कारण बन जाता है। गैर-सरकारी संगठन दूरस्थ गाँवों में भी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं। इस संदर्भ में केरल शास्त्र साहित्य परिषद का उल्लेख करना आवश्यक है। गैर-सरकारी संगठन समस्या पीड़ितों को सहारा दे सकते हैं उन्हें परामर्श प्रदान कर सकते हैं तथा उन्हें उपचार में मार्गदर्शन एवं पुनर्वास में सहायता भी प्रदान कर सकते हैं। निजी संस्थाएँ तथा गैर-सरकारी संगठन या धर्मार्थ संगठन व्यसनियों के उपचार के लिए अस्पताल चला सकते हैं और यह मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्श में एक अच्छा कदम होगा। टी.टी. आर. फाउंडेशन द्वारा चेन्नई में की जा रही सेवाएँ भी उल्लेखनीय हैं। कुछ अस्पतालों में मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित मामलों को संभालने के लिए अलग विभाग खोले हुए हैं। इस दिशा में बंगलौर के सेंट जोंस अस्पताल की सेवाएँ भी उल्लेखनीय हैं। क्या आप जानते हैं कि आंध्र प्रदेश में जागरूक बनाने के लिए महिला संगठनों ने दायित्व संभाला था। जब किसी महिला का पुरुष के व्यसन के कारण शोषण होता हो तो महिला संगठनों को उस महिला तथा कुल मिलाकर पूरे समाज को बचाने के लिए आगे आना चाहिए। पश्चिमी देशों में अनेक गैर-सरकारी संगठनों के समर्थनात्मक कार्यक्रम, परामर्श तथा उपचार केन्द्र, मध्यस्थता गृह, देखभाल केन्द्र तथा पुनर्वास केन्द्र हैं। मादक द्रव्य के दुरुपयोगों के लिए पश्चिमी देशों पर आरोप लगाने की बजाय हमें इसके विरुद्ध संघर्ष में वहाँ के

ग़ैर–सरकारी संगठनों से कुछ सीखना चाहिए। इन व्यसनों पर रोटरी क्लब तथा लायंस क्लब जैसे सेवा केन्द्रों के अपने कार्यक्रम होते हैं। सरकार, ग़ैर–सरकारी संगठन तथा सेवा केन्द्रों को मिलाकर मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के विरुद्ध तेज़, प्रभावी एवं सफल संघर्ष करना चाहिए।

मादक द्रव्य दुरुपयोग के क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले कुछ ग़ैर–सरकारी संगठनों के बारे में जानना भी उचित होगा। एक संपूर्ण सूची बनाना तो संभव नहीं है फिर भी कम से कम श्रेष्ठ कार्य करने वाले कुछ संगठन निम्नलिखित हैं:

टाराडा (कोट्टायम) केरल

कैम फाउंडेशन (बंगलौर) कर्नाटक

टी.टी. रंगानाथन क्लिनिक रिसर्च फाउंडेशन (चेन्नई) तमिलनाडु

शांति सेवा सदन (बंगलौर) कर्नाटक

हेल्पिंग हैंड्स (बंगलौर) कर्नाटक

टर्निंग प्वाइंट (चेन्नई) तमिलनाडु

शक्ति (पुणे) महाराष्ट्र

सहारा हाउस, नई दिल्ली

कृपा फाउंडेशन (मुंबई) महाराष्ट्र

आदिक (तिरुवनंतपुरम) केरल

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम तथा नियंत्रण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 1979 में उठाए गए कुछ मुद्दों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 सारांश

इस इकाई में हमने मादक द्रव्य दुरुपयोग में मध्यस्थता के बारे में चर्चा की है। यह एक सार्वभौमिक समस्या है। साथ ही यह राष्ट्रीय, सामाजिक, परिवार तथा व्यक्तिगत समस्या

भी है। इसलिए यह आवश्यक है कि इसकी माँग और आपूर्ति को कम करने के लिए मध्यस्थता की जाए। हमनें कई अवस्थाओं की चर्चा की है जिनमें प्रभावशाली मध्यस्थता की जा सकती है। हम रोकथाम, नियंत्रण, उपचार और पुनर्वास के लिए कार्य कर सकते हैं। विश्वव्यापी समस्या होने के कारण यह विश्व शांति और व्यवस्था और कुल मिलाकर मानव जाति को प्रभावित कर रही है। अतः इसके खतरों को समाप्त करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को महत्वपूर्ण कार्य करने हैं। इस इकाई में हमने संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा एल्कोलिक एनोनिस के बारे में भी बात की है। विश्व की स्थिति तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका का जायजा लेने के बाद हमने अपने देश की स्थिति पर नज़र डाली है। इससे हमने भारत में शराब उद्योग और शराब की आपूर्ति में सरकार की भूमिका के संदर्भ में भी विचार किया है। हमने कई सरकारी संस्थाओं जैसे – सीमा शुल्क विभाग, स्वास्थ्य मंत्रालय, कल्याण मंत्रालय, सेना, नौ सेना, सीमा सुरक्षा बल तथा तट रक्षक बल आदि की भूमिकाओं के बारे में भी चर्चा की है। हमने यह भी अनुभव किया है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष में भारत के ग़ैर-सरकारी संगठनों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। हमने आयोजित किए जा सकने वाले कुछ कार्यक्रमों तथा कुछ ग़ैर-सरकारी संगठनों पर भी प्रकाश डाला है।

3.8 शब्दावली

धर्मयुद्ध (Crusade) : कल्याणकारी कार्य के लिए संघर्ष।

नीमहंस (MIMHANS) : राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान (बंगलौर)

रद्दी उठाने वाले (Rag Poker) : जो कूड़े के ढेरों से डिब्बे, बोतल, धातु के टुकड़े आदि बीनते हैं।

सार्क (SAARC) : क्षेत्रीय सहयोग के लिए दक्षिण एशियाई संघ।

यू. एन. ओ. (UNO) : संयुक्त राष्ट्र संघ।

डब्ल्यू. एच. ओ. (WHO) : विश्व स्वास्थ्य संगठन।

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अनिल अग्रवाल (1995), *नारकोटिक ड्रग्स,* नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

थॉमस, ग्रेशियस (1997), *प्रीवेशन ऑफ एड्सः इस सर्च ऑफ आंसर्स,* शिप्रा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

लैरी सीगल, (संपा.) (1987), *एड्स एंड सब्सटैंस अब्यूज,* हैरिंगटन पार्क, न्यूयार्क।

यू. एन. डी. सी. पी. (1999), *ड्रग डिमांड रिडक्शन रिपोर्ट,* यू. एन. डी. सी. पी., क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली।

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) पुनर्वास वह कला है जिसके माध्यम से समाज व्यसनी व्यक्ति को स्वीकार करता है। पुनर्वास के माध्यम से एक व्यसनी व्यक्ति नए सिरे से अपना व्यसन मुक्त जीवन शुरू कर सकता है। यह व्यसनी व्यक्ति को पुनः नशा करने से रोकती है तथा सफलतापूर्वक जीवनयापन करने के लिए प्रेरित करती है।

बोध प्रश्न II

1) मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम तथा नियंत्रण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 1979 में उठाए गए कुछ मुद्दे इस प्रकार हैं:

- एल्कोहल के उपयोग में कभी विशेष रूप से युवा वर्ग और गर्भवती महिलाओं द्वारा एल्कोहल के उपभोग में कमी,
- एल्कोहल के उत्पादन एवं बिक्री पर कार्रवाई।
- नशा व्यसनियों को चिकित्सा देखभाल तथा पुनर्वास की व्यवस्था।
- उपभोग की सांख्यिकी और एल्कोहल से संबंधित समस्याओं को इकट्ठा करना,
- व्यसन संबंधी मुद्दों पर कार्रवाई करने के लिए विभिन्न देशों के बीच सहयोग में सुधार करना।

इकाई 4 मध्यस्थता कार्यनीतियों के लिए व्यसनकर्ता और सामर्थ्य विकसित करना

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 मध्यस्थता क्या है?

4.3 परामर्श की भूमिका

4.4 प्रेरक निपुणताएँ

4.5 संकट कालीन परामर्श की ए.बी.सी. पद्धति

4.6 सारांश

4.7 शब्दावली

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

व्यसन का उपचार किया जा सकता है। व्यसन एक बाध्यकारी मानसिक विकृति है। व्यसनकर्ता तब तक उपचार नहीं लेता जब तक कोई उसे प्रेरित यहाँ तक कि मज़बूर न कर दे। यह इकाई आपको उपचार के लिए व्यसनकर्ता को प्रेरित करने की प्रक्रिया से अवगत कराएगी। व्यसनकर्ता को प्रेरित करने का एक तरीका है मध्यस्थता परामर्श। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- मध्यस्थता परामर्श से संबंधित विशिष्ट ज्ञान पर चर्चा कर सकेंगे;
- परामर्श के अन्य प्रकारों और मध्यस्थता परामर्श में अंतर कर सकेंगे;
- परामर्श में प्रेरित करने की कुछ निपुणताओं को अपना सकेंगे; और
- संकट कालीन मध्यस्थता का बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।

4.1 प्रस्तावना

हम सभी जानते हें कि प्रायः बीमार व्यक्ति उपचार कराना चाहता है। इसी प्रकार एक व्यसनकर्ता अपनी आदत को छोड़ना चाहता है लेकिन वह उपचार कराना नहीं चाहता। क्योंकि उसे आदत छोड़ने से होने वाले दर्द का भय होता है तथा यह भी एक तथ्य है कि व्यसन उसकी समस्याओं को कम करता है। केवल कुछ लोग ही स्वतः अपना उपचार कराते हैं।

हमने अनुभवों से जाना है कि व्यसन की अंतिम अवस्था तक पहुँचने से पूर्व उपचार के लिए लोगों को प्रेरित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को "मध्यस्थता" कहा जाता है। मध्यस्थता एक विशेष विचारधारा है। इसके लिए ज्ञान और निपुणता की आवश्यकता होती है। यह पाठ आपको पर्याप्त सूचना प्रदान करेगा तथा आवश्यक निपुणता प्राप्त करने के लिए सुझाव भी देगा। निःसंदेह निपुणता का अभ्यास करना आवश्यक है।

ऐसी संक्षिप्त इकाई में परामर्श निपुणता के सभी पक्षों की चर्चा नहीं की जा सकती है। इसके अतिरिक्त पिछले खंडों में आपको परामर्श की कला से पहले ही अवगत कराया जा चुका है। इस इकाई का मुख्य विषय व्यसन द्वारा और अधिक क्षति करने से पूर्व व्यसनकर्ता को उपचार स्वीकार करने के लिए प्रेरित करने में निपुणता को प्रभावशाली ढंग से प्रयोग करना है। परामर्श से संबंधित विस्तृत विवरण व तकनीक आदि के लिए आप संप्रेषक और परामर्श संबंधी पाठ्यक्रम पढ़ें।

4.2 मध्यस्थता क्या है?

मध्यस्थता एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मादक द्रव्य व्यसन के हानिकर, बढ़ते हुए तथा विनाशकारी प्रभावों में हस्तक्षेप किया जाता है तथा पीड़ित व्यक्ति को कुछ रचनात्मक सहायता प्रदान की जाती है ताकि वह अपनी मादक द्रव्य की आदत को छोड़ सके। मध्यस्थता में यह अंतर निहित है कि व्यक्ति के संपूर्ण विनाश से पूर्व ही उसकी सहायता की जा सके। मध्यस्थता एक ऐसी पद्धति है जिसमें पीड़ित व्यक्ति के सम्मुख स्वीकार्य ढंग से उसकी सच्चाई प्रस्तुत की जाती है। इसका अर्थ है – मादक द्रव्य या शराब का दुरुपयोग करने वाले व्यक्ति के बारे में उसके परिवार की मुख्य चिंताओं पर मिल कर सहानुभूति व सावधानी से चर्चा करना।

यदि व्यसन का उपचार नहीं किया जाता है तो यह मृत्यु की ओर ले जाता है। व्यसन में निरंतर वृद्धि होते रहने से कई कारणों से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है:

i) अज्ञानता

ii) रोगी द्वारा उपचार कराने से इंकार करना

iii) निपुणता का अभाव।

अनेक लोगों को पता नहीं है कि व्यसन भी अन्य रोगों की तरह एक रोग है जिसका उपचार किया जा सकता है। यह भी एक धारणा मात्र ही है कि यदि व्यसनकर्ता का उपचार हो जाए तो वह स्थाई रूप से व्यसन मुक्त हो जाता है। व्यसन का उपचार तो हो सकता है पर इलाज नहीं। अनेक उपचारित व्यसनकर्ता पुनः व्यसन में पड़ जाते हैं। कुछ उपचार नहीं कराते हैं या उन्हें उपचार कराने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। इससे व्यसन बढ़कर चरम सीमा पर पहुँच जाता है जिससे स्थाई विकृति या मृत्यु की अवस्था आ जाती है। यदि व्यसन के बारे में अज्ञानता को दूर कर दिया जाए तो व्यसन की वृद्धि को रोकना संभव है।

जब व्यसनकर्ता निम्नतम/अंतिम स्तर पर चला जाता है तो बहुत कम मामले हैं जिनमें सहायता की जा सके। व्यसन की यह वह स्थिति है कि "मरता क्या न करता।" यह वैसे ही है जैसे कि डूबने वाला व्यक्ति कुएँ की तली में जाता है और मरने से पहले एक बार सतह पर आता है। ऐसे मामले दुर्लभ होते हैं। बहुत से व्यसनकर्ता स्वेच्छा से उपचार कराने से पहले मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। व्यसनकर्ता विभिन्न कारणों से उपचार नहीं

कराते। जैसा कि हमने पिछली इकाई में देखा है कि व्यसन व्यसनकर्ता के लिए कोई समस्या नहीं है बल्कि यह उसकी समस्या का तथाकथित समाधान है। वह अपने व्यसन के लिए किसी व्यक्ति या किसी परिस्थिति पर आरोप लगाता रहेगा। व्यसनकर्ता के लिए व्यसन की वास्तविकता डरावनी होती है। जब वह व्यसन के परिणाम स्वीकार कर लेता है तो वह उपचार भी करा लेता है।

किसी को प्रेरित करना एक कौशल वाला कार्य है। व्यसनकर्ताओं को मज़बूर किया जाता है, प्रेरित नहीं। जब प्रेरित करने के लिए अधिकार का प्रयोग करना आवश्यक हो तो इसे निपुणता से किया जाना चाहिए। व्यसनकर्ता के परिजनों तथा संबंधित अन्य व्यक्तियों को उसका ध्यान रखने से पूर्व कुछ बुनियादी निपुणताओं को जानना आवश्यक है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) मध्यस्थता से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4.3 परामर्श की भूमिका

परामर्श के अनेक उद्देश्य होते हैं। वह मनुष्यों में परिवर्तन लाने का एक साधन है। व्यसन के उपचार का उद्देश्य व्यसनकर्ता की जीवन शैली में परिवर्तन को प्रभावित करना है।

इसलिए परामर्श की मुख्य भूमिका व्यसन समस्या में मादक द्रव्य के दुरुपयोग की गहराई से जाँच करने की है। सिग्मंड फ्रायड जो मनोविज्ञान के मनोविश्लेषण विचारधारा के जनक हैं उनका कहना है कि "गहराई से जाँच करना इलाज है।" व्यसनकर्ता की अपनी एक अवास्तविक विचारों की दुनिया होती है। व्यसनकर्ता के जीवन में तथा उसकी समस्या के अनुभवों में परिवर्तन करने से वह उन्हें वास्तविक दृष्टिकोण से देखने लगता है।

व्यसनकर्ता को नया दृष्टिकोण अनुरूपता, संप्रेषण, जीवन शैली का पुनः बदलाव, उसकी अपनी पहचान पुनः स्थापित करने तथा सत्यनिष्ठा के माध्यम से प्रदान किया जाता है। व्यसनकर्ता का स्वयं व्यक्ति पर, परस्पर व्यक्तिगत संबंधों पर तथा नैतिक, धार्मिक एवं परम्पराओं पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। व्यसनकर्ता पर भयानक डर, असहाय तथा भाग्यवाद छा जाता है। इससे उसके अंदर गंभीर मानसिक डर बैठ जाता है।



उसकी कोशिशें मानसिक डर से बचने की होती हैं। इसके लिए आरंभ से ही व्यसन या नशा उसकी पहली पसंद तथा निर्णय होता है। उसकी मुख्य कोशिश सामान्य होने व दर्द से तुरंत राहत पाने तथा सुख का अनुभव करने की होती है। दुर्भाग्य से यह प्रक्रिया दृढ़ होती है और उसे एकांत तथा पृथकता की ओर ले जाती है। इसलिए व्यसनकर्ता के जीवन में इलाज के अन्य साधनों की अपेक्षा उसके द्वारा मुकाबला करने की निपुणता अधिक होती है। मुकाबला करना परस्पर व्यक्तिगत संपर्कों के संदर्भ में मानव के व्यवहार का मूल्यांकन करने की पद्धति है।

व्यसन परामर्श के सिद्धांत

प्रशिक्षण के बिना भी कुछ लोगों में परामर्श की शुद्ध योग्यता होती है। व्यसन एक जटिल समस्या है। इसलिए एक व्यसनकर्ता को परामर्श करने में कुछ बुनियादी सिद्धांतों का पालन करना चाहिए:

1) मादक द्रव्यों (शराब या मादक द्रव्य) के आदी व्यक्ति को समझना। मादक द्रव्यों के आदी व्यक्ति दूसरों से भिन्न होते हैं क्योंकि वे अनिवार्यतः किसी मानसिक विकृति से पीड़ित होते हैं। किसी व्यसनकर्ता की सहायता करने के लिए मादक द्रव्यों की आदत, उसके लक्षण और परिणाम के बारे में स्पष्ट रूप से जानना आवश्यक है।

2) मादक द्रव्यों की आदत एक पारिवारिक रोग है। इसका उपचार व्यसनकर्ता के सभी परिजनों के सहयोग से ही संभव है। व्यसनकर्ता की आदत से परिजनों की जीवन शैली पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

3) याद रखें कि व्यसनकर्ता की मुख्य समस्या मादक द्रव्य है। व्यसनकर्ता वास्तविक समस्या को विकृत रूप से सामने रखता है। जैसे मादक द्रव्य दुरुपयोग की अपेक्षा

वह इसे धूम्रपान कहेगा। व्यक्ति को अपनी आदत का प्रत्यक्ष रूप से सामना करना चाहिए। परामर्शक को व्यक्ति से उसके मादक द्रव्य प्रयोग के बारे में आराम और विश्वास के साथ चर्चा करनी चाहिए।

4) व्यसनकर्ता के साथ सहानुभूति तथा समान अनुभूति रखना चाहिए। यदि व्यक्ति परिचित नहीं है, तो शराबी या व्यसनी जैसे संबोधनों से बचना चाहिए। व्यसनकर्ता अपने कार्य तर्क के अनुसार नहीं करता। वह अपनी भावनाओं का गुलाम होता है जो दर्द से बचने के लिए उसकी निपुणता से उत्पन्न होती है। इसलिए ऐसे व्यक्ति पर औचित्य और तर्कों का प्रभाव नहीं पड़ता।

5) व्यसनकर्ता के मूल्य तथा अनुभव दूसरे व्यक्तियों से भिन्न होते हैं। परामर्शक को उन्हें व्यसन रोग के लक्षणों के रूप में स्वीकार करना चाहिए। हो सकता है कि वे परामर्शदाता के लिए अजीब या अवास्तविक हों। व्यसनकर्ता जीवन को जिस रूप में देखता है, उसी के अनुसार चलना चाहिए। व्यसनकर्ता के विचार बदलने के लिए परामर्शदाता को उसके भावों को समझना अनिवार्य है।

6) पुनः पतन को स्वास्थ्य लाभ प्रक्रिया के अंग के रूप में मानें तथा स्वीकार करें। व्यसन रोग का इलाज नहीं होता। परामर्शक द्वारा व्यसनकर्ता को उसके स्वास्थ्य लाभ से शर्त रहित या निःस्वार्थ सहारा प्रदान करने की निपुणता है। इसका अर्थ है कि यदि उसे पुनः आदत पड़ी है तो भी उसकी सहायता की जानी चाहिए।

7) स्वास्थ्य लाभ के लिए अल्पावधि लक्ष्य निर्धारित करें।

परामर्शदाता को क्या करना चाहिए?

1) मादक द्रव्य की आदत से संबंधित एवं परिणामों के संबंध में यथासंभव सूचनाएँ एकत्रित करनी चाहिए। सामाजिक वातावरण जैसे उसके व्यवसाय, परिवार, आर्थिक स्थिति आदि के बारे में सभी संबंधित सूचनाएँ एकत्र करनी चाहिए। व्यसनी और परिजनों या अन्य संबंधियों को व्यसनी के जीवन में मादक द्रव्यों की भूमिका तथा उसके जीवन को प्रभावित करने की प्रक्रिया के बारे में बता दें। परामर्शदाता द्वारा किए गए मूल्यांकन में व्यसनी के परिवार के अन्य सदस्य भी भागीदार होने चाहिए।

2) व्यसनी के साथ मादक द्रव्य की आदत के बारे में एक रोग के रूप में चर्चा करें। उसको समझाने में सहायता करें, इंकार करने पर स्थिति को संभालें तथा वास्तविक योजना बनाएँ और उसे समाज में बने रहने के लिए प्रेरित करें।

3) आरंभ में किए गए मूल्यांकन के अनुसार व्यसनी परस्पर व्यक्तिगत संबंध तथा अन्य व्यक्तियों के साथ संबंध सुधारने में सहायता करें।

4) संयम की योजनाएँ बनाने में व्यसनी की सहायता करें। योजनाओं में अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन संयम योजनाएँ होनी चाहिए। अल्पकालीन योजनाएँ तात्कालिक वातावरण को संभालने वाली हों जो उसके संयम को बनाए रखें तथा वे पुनः पतन की रोकथाम के लिए कदम उठाने वाली हों। दीर्घकालीन योजनाएँ व्यसनी की जीवन शैली में परिवर्तन के प्रयास करने में, व्यक्तित्व, सद्‌गुणों और मूल्यों व अनुवर्ती उपायों तथा दीर्घकालीन अध्ययन के लिए कार्यक्रम बनाने में सहायता करेगी।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) मध्यस्थता परामर्श के किन्हीं तीन महत्वपूर्ण तथ्यों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4.4 प्रेरक निपुणताएँ

परामर्श का उद्देश्य व्यसनी को परिवर्तन और जीवन का अधिक प्रभावशाली ढंग से मुकाबला करने में सक्षम बनाना है। परामर्श में प्रेरणा मुख्य घटक है। वास्तव में किसी स्वास्थ्यकारी उपचार का यह पहला चरण है। प्रेरणा किसी व्यक्ति में अपना गलत व्यवहार बदलने की इच्छा जगा सकती है। व्यसनकर्ता को परामर्श देने के संदर्भ में निम्नलिखित को शामिल करना चाहिए:

- दुरुपयोगों को छोड़ना
- जीवन शैली में परिवर्तन की इच्छा जागृत करना
- उपचार कार्यक्रमों में पूरी तरह, सहयोग की निपुणता का अनुभव कराना, और
- ठीक होने के लिए समायोजन करने की इच्छा पैदा करना।

व्यसनी के प्रेरित होने का पता लगाना

यदि व्यसनी प्रेरित हो गया हो तो:

- वह इस बात को स्वीकार करेगा कि उसे मादक द्रव्यों से समस्या है;
- समस्या के समाधान के लिए सहायता की माँग करेगा;
- उपचार के लिए अपनी इच्छा से आएगा;
- वह उपचार केन्द्र के नियमों का पालन कर उपचार कार्यक्रम में सहयोग करेगा; तथा
- वह स्वयं के लिए अच्छा होना चाहेगा।

प्रायः व्यसन उपचार के लिए व्यसनी स्वयं नहीं आता। उसकी मुख्य समस्या हो सकती हैं:

- स्वास्थ्य समस्या,
- वित्तीय समस्या,
- कार्य स्थल पर समस्याएँ,
- पुलिस/कानूनी मामले,
- तलाक की धमकी आदि।

परामर्शदाता आरंभिक तथ्यों के रूप में इन विषयों का प्रभावशाली रूप से प्रवेश कर सकता है। इस अवस्था में हो सकता है कि व्यसनकर्ता की समस्या का स्पष्टता से सामना न कर सके। परामर्शदाता का मुख्य कार्य व्यसनी के मुख्य मामलों को रेखांकित करना तथा व्यसन की समस्या पर ध्यान केन्द्रित करने में साधन के रूप में इनका इस्तेमाल करना है।

प्रेरणात्मक क्षेत्र को मज़बूत करना भी परामर्शदाता के पास एक और साधन है।

प्रत्येक व्यक्ति के पास कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनका उसके/उनके जीवन में बहुत प्रभाव होता है। यह उनके प्यार या किसी अन्य संबंध के कारण हो सकता है। परामर्शदाता को ऐसे व्यक्तियों का पता लगाकर व्यसनी को प्रेरित करने में उनके प्रभाव का प्रयोग करना चाहिए। व्यसनी को उपचार और स्वास्थ्य लाभ के लिए राजी करना, बिना किसी पूर्वाग्रह और स्पष्ट सोच के द्वारा होना चाहिए। उसके साथ सकारात्मक संबंध बनाना व्यसनी को प्रेरित करने में बहुत महत्वपूर्ण होता है। व्यसनी का स्वभाव परामर्श में बहुत महत्वपूर्ण है। व्यसनी को प्रेरित करने में सहायक कुछ परीक्षित पद्धतियों का वर्णन नीचे किया जा रहा है:

शाब्दिक अभिव्यक्ति फीडबैक: परामर्शदाता व्यसनी को व्यसन के कारण हुई क्षति के बारे में अपने अनुभवों को बता सकता है। जब व्यसनी किसी व्यक्ति से घटित हुई बातों को सुनता है तो इसका उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

सामूहिक उपचार: मादक द्रव्यों को छोड़ने के बाद स्वास्थ्य लाभ कर रहे अन्य व्यसनकर्ताओं के अनुभवों के द्वारा भी प्रेरणा को मज़बूत किया जा सकता है। इससे उसको यह विश्वास होगा कि संयम से रहा जा सकता है तथा संघर्ष में वह अकेला नहीं है। सामूहिक चर्चा में यह अच्छी प्रकार किया जा सकता है क्योंकि इसमें उन्हें परस्पर एक-दूसरे के अनुभवों को जानने का अवसर मिलता है।

समस्या पर परामर्श: समस्या में एक जोखिम तथा एक अवसर होता है। समस्या एक मोड़ है। समस्या में मध्यस्थता का उद्देश्य व्यक्ति की समस्या के प्रभाव को कम करना तथा समस्या में प्रयोग किए जाने वाले आवश्यक उपायों को अपनाने में व्यक्ति की सहायता करना है।

इस प्रकार के परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका सहारा प्रदान करने की होती है। इस प्रकार के परामर्श का मुख्य उद्देश्य अनुचित वातावरण को पहचानने तथा उसे बदल कर उचित व अच्छे वातावरण को अपनाने में व्यसनकर्ता की सहायता करना है।

सही जानकारी देना तथा व्यक्ति से अपनी सभी शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक शक्तियों का प्रयोग करने में उसे सहायता प्रदान करना समस्या परामर्श के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। समस्या में व्यक्ति प्रायः सच्चाई से अछूता रहता है। उसकी सोच अवास्तविक तथा तर्कहीन होती है। समस्या में मध्यस्थता करने वाले परामर्शदाता का मुख्य उद्देश्य व्यसनी की युक्तिहीन सोच पर नियंत्रण करने, वास्तविकता और उसके परिणामों को स्वीकारने में उसकी सहायता करना है।

समस्या निर्णायक होती है। समस्या से घिरा व्यक्ति चौराहे पर खड़े ऐसे अजनबी की तरह है जो सही रास्ते पर जाने का निर्णय नहीं कर सकता। ऐसे में परामर्शदाता व्यक्ति को सही रास्ता बताने तथा उस पर चलने की तरीका बताने में उसकी महत्वपूर्ण सहायता कर सकता है।

समस्या में मादक द्रव्यों का दुरुपयोगः मादक द्रव्य दुरुपयोग की आरंभिक अवस्था में व्यसनकर्ता तथा उसका परिवार किसी समस्या के होने से इंकार करते हैं। कुछ समय बाद समस्याएँ सामने आने लगती हैं। प्रायः परिवार का कोई एक सदस्य समस्या की प्रकृति को स्वीकार करता है और वही व्यसनकर्ता के लिए सहायता प्राप्त करता है।

परामर्शदाता को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि वर्तमान समस्या से पूर्व हो सकता है कि व्यसनकर्ता के जीवन में अन्य कोई समस्या रही हो। व्यसनकर्ता ने पिछली समस्याओं के संपूर्ण प्रभावों को अपनी मनोवैज्ञानिक समझ के कारण टाल दिया हो तथा सामना करने की प्रक्रिया के रूप में मादक द्रव्य के दुरुपयोग को अपना लिया हो।

समस्या व्यक्ति के अंदर से या बाहरी वातावरण से उत्पन्न हो सकती है। समस्या मानव जीवन का आम पक्ष है। समस्या से दबाव पड़ता है। स्वस्थ मन वाले व्यक्ति समस्या की स्थिति को उचित रूप से संभालने में सक्षम होते हैं। व्यसनकर्ताओं में प्रायः हालात का मुकाबला करने वाली इन प्रक्रियाओं और निपुणताओं का अभाव होता है। समस्याओं से व्यक्ति पर दबाव पड़ता है। तनाव या दबाव व्यक्ति की संपूर्ण क्षमताओं के विकास के लिए श्रेष्ठ एवं आवश्यक है। तनाव एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें शरीर तनाव का प्रतिरोध करने में सक्षम होने लगता है। अथवा शरीर सन्द्रिय प्रणाली की कार्य प्रणाली को व्यापक बनाकर श्रेष्ठतम तरीके से तनाव का सामना करता है। व्यक्ति के विकास में सहायता देने वाले दबाव को इयोस्ट्रेस (श्रेष्ठ दबाव) तथा व्यक्ति के विकास को क्षति पहुँचाने वाले या अत्यधिक दबाव की विपत्ति/समस्या कहा जाता है। यह एक ऐसा मामला है जहाँ दबाव बढ़ता है और कार्य कुशलता कम होती है।

मानव शरीर में कुछ स्वस्थ प्रतिरोधक प्रक्रियाएँ होती हैं, जिन्हें कठिन परिस्थिति का सामना करने वाली सुरक्षात्मक प्रक्रियाएँ कहा जाता है। यदि व्यक्ति को स्वस्थ प्रतिरोधक प्रक्रियाओं का ज्ञान नहीं है तो वह अन्य उपायों द्वारा समस्या से बचने का प्रयत्न कर सकता है। व्यसन एक ऐसी ही अस्वस्थ प्रतिरोधक प्रक्रिया है। जब तनाव एक स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ वे उपाय भी प्रभावी नहीं रहते हैं तो वह अन्य विकृत मानसिक स्थिति का प्रदर्शन करने लगता है।

इस प्रकार की कार्य शैली को बदलने के लिए व्यक्ति को किसी अन्य व्यक्ति की या बाहरी सहायता की आवश्यकता होती है। समस्या ग्रस्त स्थिति को हल्का करने के लिए चार तथ्यों की निपुणता होती हैः

i) समस्या ग्रस्त व्यक्ति द्वारा वास्तविकता का सही अनुभव करना;

ii) व्यक्तियों का पर्याप्त मेल-जोल;

iii) स्थिति को समझने के लिए पर्याप्त समय; और

iv) पर्याप्त स्वस्थ प्रतिरोधक प्रक्रियाओं का ज्ञान।

4.5 संकट कालीन परामर्श की ए.बी.सी. पद्धति

सभी संकट कालीन परामर्शों का लक्ष्य एक ही है। इसका उद्देश्य समस्या ग्रस्त व्यक्ति को पिछला कार्य स्तर पुनः प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना है। जब व्यक्ति एक बार इस स्तर को प्राप्त कर लेता है तो उसके कार्य स्तर में वृद्धि करने के लिए उसकी और सहायता की जाती है। सहायता प्रदान करने वाली प्रक्रिया आरंभ होने से पूर्व परामर्शदाता को वास्तविक समस्या की स्थिति का ज्ञान होना आवश्यक है। इसे निम्नलिखित तरीके से किया जा सकता है। परामर्शदाता को पूछना चाहिए कि:

i) क्या कोई ऐसी चीज है जो व्यसनी को हाल ही में इस प्रकार दुखी कर रही हो, जिससे उसकी भावना या व्यवहार प्रभावित हो रहा है?

ii) क्या यह भावना या व्यवहार निरंतर और खराब होता जा रहा है?

iii) क्या समस्या आरंभ होने का समय किसी बाहरी घटना से संबंधित है?

यदि सभी उत्तर हाँ में हैं तो समस्या है। ए. बी. सी. समस्या परामर्श का रूप बारेन एल जोंस द्वारा प्रतिपादित किया गया है। ए. बी. सी. का अर्थ है:

ए. = व्यक्ति के साथ संपर्क बनाएँ।

बी. = संभव सीमा तक समस्याओं को कम करें।

सी. = समस्या का हिम्मत/सक्रियता से सामना करें।

संपर्क बनाना

परामर्शदाता बुनियादी निपुणताओं जैसे समस्या में शामिल होना तथा सहानुभूति का प्रयोग कर समस्याग्रस्त व्यक्ति के साथ संपर्क स्थापित करना है तथा तालमेल बनाए रखता है। समस्याग्रस्त व्यसनी को शर्त रहित स्वीकृति तथा सहायता की निपुणता होती है। समस्याग्रस्त व्यक्ति ही अपनी समस्याओं के बारे में बताने तथा उसकी भावनाओं की मुक्त अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त अवसर दिए जाने चाहिए।

यथासंभव समस्या को कम करना

परामर्शदाता समस्याग्रस्त व्यक्ति द्वारा प्रदत्त मौखिक संकेतों/सूत्रों का उपयुक्त उत्तर देकर उसकी सहायता करता है। उत्तर का लक्ष्य व्यसनी की मुख्य समस्या पर उसका ध्यान केन्द्रित कराना है। यह ध्यान केन्द्रित करने का कार्य पहचानने और स्पष्टीकरण के माध्यम से किया जाता है। कार्य व्यसनी का ध्यान निम्नलिखित पर केन्द्रित करके किया जाता है:

क) समस्या को बढ़ाने वाले तथ्य,

ख) व्यसनी की सामाजिक स्थिति को जोखिम,

ग) व्यक्ति द्वारा सामना करने की विधियाँ,

घ) ऐसी नई स्थितियाँ जो व्यक्ति को सामना करने से रोक सकती हों।

समस्याओं का सक्रियता से सामना करना

जैसा कि हमने पहले वर्णन किया है कि समस्या परामर्श का उद्देश्य व्यसनी की स्थिति निपुणताओं को मज़बूत बनाना है। यह कार्य समस्या की स्थिति का मूल्यांकन तथा उस स्थिति का सामना करने के लिए उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग करके किया जाता है। इस प्रक्रिया में पाँच चरण हैं:

1) लक्ष्य निर्धारित करना। आरंभ में अल्पावधि में प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्यों को निर्धारित करना महत्वपूर्ण है। इससे व्यसनी को समस्या की स्थिति को बदलने में अपनी क्षमता का पता लगता है। एक बार अल्पावधि लक्ष्य प्राप्त होने पर दीर्घावधि लक्ष्य निर्धारित करने में उसकी सहायता की जा सकती है।

2) संसाधनों का पता लगाना। यह समस्या से निपटने के लिए व्यसनी के पास उपलब्ध बाहरी तथा आंतरिक संसाधनों को ध्यान में रख कर दिया जाता है।

3) विकल्पों की स्थापना करना। कई बार व्यक्ति के पास समस्या से निपटने के लिए उपलब्ध साधनों को छोड़कर कोई अन्य विकल्प मौजूद नही होता। जिससे समस्या आरंभ हो जाती है। दिमाग पर जोर डालकर तथा सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों विकल्पों पर विचार कर ही विकल्पों की तलाश की जाती है।

4) विकल्प को लागू करना। व्यसनी की सहायता करने के लिए जिन विकल्पों की तलाश की जाती है, हो सकता है उनके बारे में उसे जानकारी न हो। ऐसी स्थिति में इन नए विकल्पों से अनजान होने के कारण व्यसनी इनका प्रतिरोध कर सकता है।

5) समीक्षा तथा पुनः विश्लेषण करना। सही रूप से लागू करने के लिए लक्ष्यों तथा उनकी कार्यान्वयन स्थिति का आवधिक विश्लेषण करना आवश्यक है। जब कुछ पद्धतियाँ प्रभावशाली नहीं रहती तो अधिक प्रभावशाली कार्य के लिए उनमें संशोधन करना आवश्यक होता है।

संकट कालीन परामर्श की तकनीकें

संकट कालीन परामर्श में सहायता के लिए बेंजामिन रश ने कुछ महत्वपूर्ण विधियाँ विकसित की हैं। जो इस प्रकार हैं:

1) व्यसनी की आदत का स्तर पता करने के लिए परामर्शदाता एक तरह से "अभिभावक" की भूमिका निभाता है। यद्यपि यह आवश्यक नहीं है कि समस्या मनोवैज्ञानिक हो। यह तो वातावरण का मुकाबला न कर सकने वाले व्यक्तियों को होती है। इनमें से अधिकांश निर्भरता के स्वभाव वाले होते हैं। इसलिए जब कोई समस्या आती है, तो समाधान के लिए वे किसी संरक्षक की इच्छा करते हैं। व्यसनी की सामना करने की निपुणताओं को मज़बूत करने के लिए परामर्शदाता इस प्रवृत्ति का साधन के रूप में प्रयोग कर सकता है।

2) भावनात्मक वेग को एक समझदारी वाले बंधन में बदला जाए। परामर्शदाता, व्यसनी के भावनात्मक हिस्से को पहचानने तथा अभिव्यक्ति का एजेंट बन जाता है।

3) तनाव भरी स्थिति की उद्देश्यात्मक समीक्षा जो सहारा प्रदान करने वाले वातावरण में हो। समस्या के कारण व्यसनी स्थिति को सही रूप से अनुभव नहीं कर सकता। परामर्शदाता स्थिति का सही विश्लेषण करने में प्रभावशाली सहायता प्रदान कर सकता है।



4) व्यसनी के व्यक्तित्व को मज़बूत बनाकर उसमें आत्म विश्वास पैदा करना। कम आत्म विश्वास वाले लोगों में प्रायः समस्याएँ शीघ्र आने की संभावना होती है। मज़बूत व्यक्तित्व बनाने का अर्थ है व्यसनी द्वारा समस्याओं का अधिक सफलतापूर्वक सामना करना।

5) व्यसनी के परिवेश तथा जीवन शैली में परिवर्तन करना। कुछ समस्या परिवेश के कारण पैदा होती है। कई बार व्यसनी वर्तमान परिवेश में असहाय हो जाता है। परामर्शदाता परिवेश में परिवर्तन करने में व्यसनी की सहायता कर सकता है।

6) क्रियाशील बनाने संबंधी चिकित्सा। कुछ समस्याएँ व्यक्ति को भावनात्मक रूप से निष्क्रिय कर देती हैं। व्यसनी को किसी सकारात्क कार्य में लगाने से उसमें यह विश्वास पैदा होगा कि परिवर्तन संभव है।

7) धार्मिक संसाधनों का प्रयोग करना। मनुष्य स्वभाव से धार्मिक होता है। लगभग सभी व्यक्तियों का अपने से अधिक किसी अलौकिक शक्ति में विश्वास होता है। परामर्शदाता व्यसनी की समस्या का समाधान धार्मिक जीवन के सकारात्मक पक्ष की उचित धार्मिक गतिविधियों को प्रोत्साहित कर निकाल सकता है।

कुछ समय तक इसका अनुकरण करें। यदि व्यसनी को स्वयं के फैसले पर छोड़ दिया जाए तो उसको उचित मार्ग का पता नहीं होता। परामर्शदाता को व्यसनी की सहायता से बनाई गई कार्य योजना की समीक्षा और मूल्यांकन करने के लिए एक निश्चित व स्पष्ट कार्यक्रम बनाना होगा।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) संकट कालीन परामर्श का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4.6 सारांश

मध्यस्थता एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति के हानिकारक बढ़ते विनाशकारी व्यवहार में हस्तक्षेप किया जा सकता है और उसके वर्तमान व्यवहार से उसका संपूर्ण विनाश होने से पूर्व स्वस्थ व्यवहार अपनाने में उसकी सहायता की जाती है। व्यसनकर्ता कभी सहायता के लिए नहीं कहता। इसलिए परिवार में से किसी को सबसे पहले प्रेरित किया जाता है। परामर्शदाता द्वारा व्यसनकर्ता को प्रेरित करने वाले क्षेत्र का पता लगाना होता है।

समस्या परामर्श मध्यस्थता का प्रभावशाली साधन है। समस्या परामर्श अल्पकालीन परामर्श होता है। जिसका उद्देश्य समस्या की स्थिति को हल्का कर समस्या का समाधान करने में व्यक्ति की सहायता करना है। परामर्शदाता समस्याओं को संभव सीमा तक कम कर हिम्मत से सामना करने में उसकी सहायता के लिए संबंध स्थापित करना है।

4.7 शब्दावली

विवश मानसिक विकृति (Affirmative Action) : एक अडियल दिमाग जहाँ अवांछित अचेतन विचार मनुष्य के विचारों और कार्यों को प्रभावित करते हैं।

सामना करना : मनोवैज्ञानिक परामर्श में प्रयोग की जाने वाली तकनीक जिसमें परामर्शदाता व्यसनी को वास्तविकता का सामना करने के लिए तैयार करता है।

अन्तरव्यैक्तिक (Ombudsman) : एक व्यक्ति एवं अन्य व्यक्तियों के बीच कोई संबंध बात/चर्चा/संपर्क।

अन्तर्वैयक्तिक (Re-distributive Policy) : व्यक्ति के अंदर।

मनोविश्लेषणात्मक स्कूल : सिग्मंड फ्रायड द्वारा स्थापित मनोविज्ञान का स्कूल।

प्रणालीकरण : व्यवहार या धारणा को दृढ़ करना।

पुनः पतन : मादक द्रव्य दुरुपयोग की आदत में पुनः पड़ना।

4.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

हॉवर्ड क्लिनवेल (1982), *अंडरस्टेंडिंग एंड काउंसलिंग द ऐल्कोहालिक,* एबिंगटन प्रेस, नास्वले, टेनसी।

एब्राहम जे. ट्वसंकी, एम. डी. (1990), *एडिक्टिव थिंकिंग हेजेल्डन फाउंडेशन,* द प्लीजेंट वैली, एम. एन., यू. एस. ए.।

शरोन वेसचाइडर क्रस (1989), *एनादर चांस,* साइंस एंड बिहेवियर बुक्स, कैलिफार्निया।

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) मध्यस्थता एक प्रक्रिया है जिसमें मादक द्रव्य व्यसन के हानिकर, बदले हुए विनाशकारी प्रभावों में हस्तक्षेप कर व्यक्ति को रचनात्मक प्रकार की सहायता प्रदान की जाती है। व्यसनकर्ता केवल अंतिम अवस्था में ही उपचार कराने के लिए सहमत होते हैं। रोग के अंतिम अवस्था में पहुँचने से पूर्व व्यसनकर्ता को समस्या की स्वीकृत कराना तथा उपचार के लिए सहमत कराना संभव है।

बोध प्रश्न II

1) क) मादक द्रव्यों का व्यसनकर्ता अन्य व्यक्ति से भिन्न होता है। वह विवश मानसिक विकृति रोगों से पीड़ित होता है। उसकी वास्तविकता से संबंधित सोच अन्य व्यक्तियों से भिन्न होती है। परामर्शदाता को उसे स्पष्ट रूप से समझाना चाहिए।

   ख) व्यसन एक पारिवारिक रोग है। व्यसनकर्ता के परिवार को भी समझ और उपचार की निपुणता होती है।

   ग) व्यसनकर्ता की वास्तविक समस्या मादक द्रव्य है। व्यसनी उन समस्याओं को भिन्न रूप में प्रस्तुत करता है। मध्यस्थता परामर्श व्यसनकर्ता को यह स्वीकार कराती है कि उसकी वास्तविक समस्या मादक द्रव्य है।

बोध प्रश्न III

1) संकट कालीन परामर्श अल्पकालीन परामर्श होता है। इसका उद्देश्य समस्याग्रस्त व्यक्ति के जीवन से समस्या की स्थिति के प्रभाव को कम करना तथा समस्या पर सफलतापूर्वक नियंत्रण पाना है। यह कार्य व्यक्ति की इस प्रकार सहायता करके किया जाता है कि यह समस्या को सही रूप से देखें, तथा समस्या का मुकाबला करने के लिए उसके पास उपलब्ध संसाधनों का पता लगाए और संसाधनों को विकसित करे। व्यक्ति की नई जीवन शैली विकसित करने के संघर्ष में भी उसकी सहायता की जाती है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY


ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

MPDD/IGNOU/P.O.1.5T/October 2009 (Reprint)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ISBN-978-81-266-3264-0